UNIVERSAL LIBRARY

OU_182187

UNIVERSAL LIBRARY

बीरबल

ऐतिहासिक नाटक)

वृन्दावनलाल वर्मा, एडवोकेट

(लेखक—झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, कचनार, मृगनयनी, मुसाहिबजू, प्रेम की भेंट, विराटा की पद्मिनी, अचल मेरा कोई, राखी की लाज लगन, गढ़कुंडार, कुण्डली-चक्र आदि)

प्रथम संस्करण

मयूर-प्रकाशन
झांसी ।

मूल्य
१।)

प्रकाशक—
सत्यदेव वर्मा बी. ए., एल—एल. बी.,
मयूर—प्रकाशन, झांसी।

प्रथमबार १९५०

अनुवाद और चित्रपट—निर्माण आदि के सर्वाधिकार
प्रकाशक के अधीन हैं।

मूल्य १।) रुपया

मुद्रक—
द्वारिकाप्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश'
स्वाधीन प्रेस, झांसी।

परिचय

बीरबल नाटक के अधिकांश पात्र और घटनायें ऐतिहासिक हैं। उनका आधार अबुलफ़जल, बदायूनी, विन्सेण्ट स्मिथ का 'अकबर' और जसवन्त के कुछ चित्र हैं।

जसवन्त को कुछ इतिहासकारों ने दसवन्त भी कहा है। नाटक में मैंने उसको जसवन्त रक्खा है। उस काल में उसके समान चित्रकार एशिया भर में नहीं था। इसने बहुत से चित्र बनाये थे। उसके चित्रों की कहानी ही एक रोमान्स है। उसका जीवन एक समूचा रोमान्स था ही—अन्त में उसने आत्मघात किया था। उसके चित्र मुग़ल सम्राट की चित्रशाला से हटाये जाकर वज़ीर शहाबुद्दीन के अधिकार में पहुँचे। एक रुहेला सरदार शहाबुद्दीन से झपट कर नजीबाबाद ले भागा। रुहेले सरदार की छावनी से, जब युद्ध हो रहा था, अवध का नवाब बटोर ले गया। जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी का सरदार वारन् हेस्टिंग्स अवध की बेगमों से रुपये की वसूली के लिये आया, तब जसवन्त (या दसवन्त) के उन चित्रों को अवध से कलकत्ता उड़ा ले गया। अन्त में उसने ये चित्र लन्दन म्यूज़ियम को दे दिये। अब वे वहीं हैं। भारत की यह अमूल्य कलानिधि क्या फिर कभी दिल्ली लौट कर आयगी?

जसवन्त के कुछ चित्र कलकत्ते के विक्टोरिया म्यूज़ियम और बांकीपूर की खुदाबख़्श लाईब्रेरी में हैं। शायद जयपूर में भी थोड़े से हों। भारत के राष्ट्रीय चित्रालय में उन सबको स्थान मिलना चाहिये।

उन चित्रों में तत्कालीन जीवन के दृश्य मार्मिकता और अतुल चतुरता के साथ उतारे गये हैं। गुसाइयों की आपसी लड़ाई जिसको अकबर ने प्रोत्साहन दिया था, अकबर के ही विरुद्ध एक स्त्री का दरबार में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करना, मुल्ला दोप्याज़ा का व्यङ्ग चित्र (कार्टून)

बीरबल, अकबर, तानसेन, मानसिंह इत्यादि के चित्र, सब में, जसवन्त ने मानो प्राण डाल दिये हों।

बीरबल और अकबर के लतीफ़े सैकड़ों की संख्या में प्रचलित हैं। ये सब जनता की इच्छा संकल्पों के परिणाम हैं—संभव है किसी किसी में बीरबल की किसी सच्ची घटना का भी अंश हो, परन्तु प्रामाणिक न होने के कारण मैंने उनमें से किसी का भी उपयोग नहीं किया है। जितनी घटनायें नाटक में आई हैं—जैसे अकबर का देर तक भेंड़ी आँख किये हुये देखते रहना, वेश बदलकर घूमना—सच्ची हैं। चिराग़ जलाने वाले का आगरे की बुर्ज से अकबर द्वारा फिकवाया जाना, ऐतिहासिक सत्य है, यद्यपि मैंने इस घटना को अधूरा दिखलाकर छोड़ दिया है। अकबर अपने किये पर पछताया होगा—उसकी प्रकृति विलक्षण परस्पर विरोधी तत्वों से मिलकर बनी थी इसलिये मैंने उसको पश्चात्ताप की मनोवृति में छोड़ा है।

अकबर में कई गुण महान थे। परन्तु बीरबल में उससे भी बढ़कर। मेरा विश्वास है कि अकबर के उन महान गुणों का एक बड़ा प्रेरक बीरबल था।

अकबर के काल में जीवन की जिन अनेक समस्याओं पर बीरबल ने विचार किया होगा वे सभी आज भी सामने हैं और रहेंगीं। क्या बीरबल के कुछ सुझाव जीवन की उन समस्याओं के सुलझाने में कुछ सहायता कर सकते हैं? पाखण्ड और अति की विडम्बना बीरबल निरन्तर किया करता था। 'दीन इलाही' के दायरे में वह अकबर को प्रसन्न करने नहीं, प्रत्युत समाज को, अपना कुछ देने के लिये आया था। अकबर की जन्मजात प्रतिभा से कोई इनकार नही कर सकता, परन्तु अकबर का हिन्दुओं के साथ व्यवहार, जो आगे के बादशाहों के लिये आदर्श बना, बीरबल की देन थी।

बीरबल कालपी (वर्तमान उरई ज़िले का एक नगर) में उत्पन्न हुआ था। उसको अपनी प्रतिभा के विकास का अवसर आमेर (जयपूर) नरेश के यहाँ मिला। आमेर से उसको अकबर ने लिया।

विन्सैण्ट स्मिथ ने बीरबल को दरबारी विदूषक का सा रूप देने की चेष्टा की है। अकबर का समकालीन, दरबारी, बदायूनी, और नौ रत्नों में से एक—अबुलफ़ज़ल—दूसरी ही बात कहते हैं। मैंने इन दोनों की बात को अधिक महत्व दिया है। बदायूनी कठमुल्ला था, अकबर का निन्दक; अबुलफ़ज़ल अकबर का प्रशंसक—स्मिथ उसको अकबर का चाटुकार कहता है। दीन इलाही के दायरे में अबुलफ़ज़ल भी आ गया था। बदायूनी को बुरा लगा।

उसने अबुलफ़ज़ल से पूछा, 'बीरबल की तरह हज़रत इस दीन इलाही में कैसे?'

अबुलफ़ज़ल ने उत्तर दिया, 'कुफ्र की हरी भरी घाटी की सैर करने को जी चाहा, इसलिये।' ये शब्द लगभग ज्यों के त्यों, अबुलफ़ज़ल के हैं।

अकबर की धर्म सहिष्णुता इतिहास में विख्यात है। मुझको उसके मूल में बीरबल का लम्बा हाथ दिखलाई पड़ता है। अकबर के फ़रमान का कुछ अंश नाटक में आ गया है। अकबर के फ़रमान में एक बात और थी—

'कोई भी हिन्दू स्त्री जो मुसलमान के पास, खुशी से या दबाव से गई हो, मुसलमान नहीं मानी जावेगी। उसके घर वालों को वापिस पाने का हक़ होगा।' उसकी पूरी घोषणा अध्ययन और मनन करने के योग्य है।

अबुलफ़ज़ल ने कहा है कि अकबर के हृदय के निकट बीरबल से बढ़कर कोई नहीं, और, बीरबल जितना और जैसा अकबर को पहिचानता है, उतना और वैसा कोई नहीं पहिचानता।

तो ऐसा बीरबल कोरा विदूषक नहीं हो सकता। यह वह बीरबल है जो भारत के करोणों जन का आज भी प्यारा है, जिसका नाम कठिनाइयों, कष्टों और उलझनों में आज भी मन को मुस्कान दे देता है।

अनेक बातों में, अकबर से बड़ा था ऐसा बीरबल। यदि अकबर का शासन काल भारतीय इतिहास का एक स्वर्णयुग कहलाता है—हैवेल ने उस शासन को आर्य शासन कहा है ('Havell's Aryan Rule in india')—तो उस युग के निर्माण में बीरबल का प्रचुर मात्रा में सहयोग था।

अब एक प्रार्थना अभिनय करने वालों से। वे इस नाटक को कई बार पढ़ें तब खेलें; जीवन की समस्याओं पर इसमें जो कुछ कहलवाया गया है उसको हृदयङ्गम करें तो अभिनय खरा उतरेगा।

दूसरी बात फ़िल्म वालों से। किसी भी पुस्तक के भाव और विषय को तोड़ मरोड़ कर चित्रित करने से उनको क्षणिक लाभ भले ही हो जाय, परन्तु समाज को और उनको भी, स्थायी हानि पहुँचती है। पुस्तक-रचयिता की अनुमति लेकर और उसके सहयोग को प्राप्त करके यदि फ़िल्म बनाया जावे तो फ़िल्म में 'चारचाँद' लग जायेंगे। पर फ़िल्म-निर्माता इसकी आवश्यकता नहीं समझते। इसी कारण देश में एक प्रबल प्रतिक्रिया उत्पन्न हो गई है—वह है फ़िल्म उद्योग के अविलम्ब राष्ट्रीय करण की मांग।

ऐतिहासिक उपन्यासों और ऐतिहासिक नाटकों पर भी, अन्य कृतियों के समान, रचयिता का स्वत्व (कापी राईट) रहता है। कुछ फ़िल्म-निर्माताओं के चोर बाज़ार में इस पहलू की अवहेलना की जाती है। मुझसे एक बड़े फ़िल्म-निर्माता ने एक दिन बेधड़क कहा था, 'सभी तरह की ऐतिहासिक कृतियों पर हम सबका अधिकार है। मैं क़ानून की परवाह नहीं करता।' अवहेलना उनको बहुत मँहगी पड़ेगी।

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र

पुरुष—

अकबर

बीरबल

तानसेन

फ़ैज़ी

मुल्ला दोप्याज़ा

अबुल फ़ज़ल

जसवन्त चित्रकार

रमज़ानी

लल्ली

गुसाईं, दरबारी, सैनिक, इत्यादि

स्त्री—

हसीना

गोमती

और हा।८

वीरबल

पहला अंक

पहला दृश्य

[स्थान—थानेश्वर के पास का एक जङ्गल । जङ्गल में होकर पगडण्डी । समय—दोपहर दिन के कुछ पीछे । अकबर, वीरबल, तानसेन, मुल्ला दोप्याज़ा, फ़ैज़ी, जसवन्त और कुछ सिपाही आते हैं । अकबर शिकारी वेश में है । पैर कुछ पीछे झुके हैं जो घोड़े की अत्यधिक सवारी के कारण ऐसे हो गये हैं । बाईं टाँग को कुछ घसीटकर चलता है । सिर दायें कन्धे की ओर ज़रा सा झुका हुआ । माथा चौड़ा, नाक मझोली, नाक की हड्डी बीच में कुछ ऊँची, नथने कुछ फैले हुये—मानो क्रोध के कारण फैले हों । बायें नथने और होठ के ऊप[illegible] भाग को मिलाने वाला मस्सा—मटर के आधे [illegible]े बर[illegible]ें काली और पतली । आँखें जरा लम्बी खिची

हुईं। पुतलियाँ काली और चमकदार। रङ्ग गेहुंआँ, सांवलापन लिये हुये। मूछें एक जवान आदमी की सी। छोटी, कुछ लम्बी दाढ़ी। सिर के लम्बे बाल पगड़ी के पीछे निकले हुये। गलमुच्छे गालों तक। देह पुष्ट और भरी हुई। व्यक्ति की सारी झलक रोबीली और शानदार। बीरबल अकबर से लगभग चौदह साल जेठा है, रङ्ग कुछ सांवला, आँखें बड़ी, भौहें लम्बी, गुलाईदार और कुछ मोटी, शरारत और ओज से भरी हुई, पर विचार के साथ स्पर्धा सी करती हुई। नाक सीधी और लम्बी, मूछें घनीं, परन्तु अधिक लम्बी नहीं हैं। शरीर छरेरा। सिर पर पगड़ी। तानसेन प्रौढ़ अवस्था का होने पर भी देखने में बिलकुल युवा जान पड़ता है। सुन्दर आकृति का है। माथा चौड़ा, भौहें लम्बी और मिलग, कद मझोले से कुछ छोटा, आँखें बड़ी बरौनियों वाली और पुतलियां काली बड़ी और चमकदार, जिनकी पलकों और बरौनियों की झरप सी लग जाती है। शरीर छरेरा। सिर पर कामदार गोल टोपी। जुल्फें नहीं रखाये है। बाल टोपी के भीतर हैं। मुल्ला दोपियाज़ा का कद कुछ ऊँचा है। अधेड़ अवस्था के कुछ आगे है। नाक पतली लम्बी खम खाई हुई। आँखें बादामी, लम्बी, सकरीं, चेहरा भरा हुआ, सिर पर अरबी ढङ्ग की पगड़ी, नाक लम्बी खमदार, मोटा शरीर, पेट कुछ निकला हुआ। फैज़ी लम्बा, दुबला पतला, चेहरे की बनावट मुल्लाओं जैसी, परन्तु आँखों में उदारता। जसवन्त मझोले कद से कुछ ऊँचा, युवावस्था से कुछ पार हो गया है। रङ्ग सांवला, आँखें बड़ी और पैनी दृष्टि वाली, हर चीज़ को ध्यान के साथ देखने का अभ्यास करने के कारण गर्दन कुछ आगे झुकी हुई। सिर पर पगड़ी।]

अकबर—बड़ा मनहूस दिन रहा। दिखलाई पड़े पाँच शेर, पर हाथ लगे केवल दो! किसका मुँह देखकर चले थे? (पहरेदारों से) तुम लोग घोड़ों के पास ठहरो। (*सिपाही जाते हैं*)

मुल्ला दोप्याज़ा—(*बीरबल की ओर इंगित करते हुये*) इस ब्राह्मण का।

बीरबल—और मैंने किसका मुँह देखा था जो अन्न के एक दाने और पानी की एक बूँद से भी भेंट नहीं हुई?

(*सबकी आँखें यकायक अकबर की ओर जाकर फिर इधर-उधर हट जाती है।*)

जसवन्त—जहाँपनाह पेड़ों की इस झुरमुट को देखें—पत्ते मानो हवा से बातें कर रहे हैं। सूर्य की किरणें चिकने पत्तों की संधों में होकर फिसल फिसल पड़ रही हैं, छाया और उजाला क्षण क्षण में एक दूसरे से होड़ लगा रहे हैं (*टकटकी लगाकर देखता है*)

बीरबल—अच्छा, तुम्हारी बाकी हाँका तो वे तीन शेर अपने जबड़ों में दाबकर ले गये।

मुल्ला दोप्याज़ा—और तुम्हारे दानापानी को भी वे दो शेर चलता कर गये।

बीरबल—जहाँ तक याद पड़ता है मुल्ला दोप्याज़ा का मुँह देखकर ही शिकार के लिये चला था मैं।

मुल्ला दोप्याज़ा—मुँह तो तुमने अपना देखा होगा आइने में.—मैं जब आया तब तुम जहाँपनाह के साथ थे। मियाँ फ़ैज़ी से पूछलो।

फ़ैज़ी—मैंने तो सबसे पहले जहाँपनाह को देखा था सो दिनभर अटूट खाना-पानी मिलता रहा, बाक़ी की कुछ जानता नहीं।

जसवन्त—जहाँपनाह इन पत्तों के अँधेरे उजेले को और पेड़ों की झुरमुट के नीचे की छाया में उलझे हुये, थिरकते, प्रकाश को काग़ज़ पर यथावत उतारने में बड़ा आनन्द मिलेगा, कुछ कठिनाई ज़रूर पड़ेगी—

मुल्ला दोप्याज़ा—खब्तियों के लिये मौक़ा बेमौक़ा सब एक समान सहज है।

तानसेन—जो कला को नहीं जानता उसके लिये सब खब्ती हैं।

मुल्ला दोप्याज़ा—वाह मियाँ मिनर मिनर! तुम गाते तो कमाल का हो, मगर बोलते मलाल का हो।

तानसेन—प्याज़ खाते रहा करो मुल्ला—तुमको गायन-वादन से क्या सरोकार?

मुल्ला दोप्याज़ा—अच्छा! अब तो चहकने लगे! बीरबल का मुँह देखकर चले होते तो मुँह से बाक़ न फूटता।

अकबर—तानसेन, जसवन्त और बीरबल, तीनों, को मैंने अपनी गवही में ही रक्खे था। साथ ही हम लोग उठे।

मुल्ला दोप्याज़ा—सब साफ़ हो गया, बिलकुल साफ़ हो गया। (*बीरबल की ओर संकेत करके*) इस अवतार को देखने के बाद फिर हुज़ूर को शेर, चीतों और बाघ-बघेरों का ख़याल ही छोड़ देना चाहिये था।

अकबर—बात तो कुछ ठीक कह रहे हो।

बीरबल—बिलकुल ठीक। जब जहाँपनाह सो रहे थे मैं जागकर उठ बैठा था। ध्यान के साथ देखा तो जहाँपनाह सो रहे थे। बाहर निकल पड़ा और अब यहाँ भूखा-प्यासा खड़ा हूँ!

अकबर—पानी? पानी!

मुल्ला दोप्याज़ा—साफ़ तो है दीनापरवर। सरकार बहुत कम सोते हैं—मुश्किल से तीन घण्टे। ये हज़रत उठे, हुज़ूर ने अधमुँदी आँखों इनको देखा—अमगुन के चलने फिरने अजायबघर को!

अकबर—तुमने खूब भाँपा मुल्ला ! अपशगुन उसी घड़ी से शुरू हुआ।

बीरबल—जहाँपनाह को उस अपशगुन ने कम से कम दो शेर तो दिलवाये ! पर जिसके दर्शनों ने इस ब्राह्मण को भूखों प्यासों मारा वह अपशगुन बड़ा या मैं ?

मुल्ला दोप्याज़ा—गुस्ताख़ी की एक हद होती है बीरबल !

(अकबर हँस डालता है)

जगवन्त—हुज़ूर का हुकुम हो तो इन पत्तों के साथ सूर्य की किरणों के खिलवाड़ का चित्र बनाऊँ ?

अकबर—जगवन्त की गाँठ में केवल आँखें हैं—

मुल्ला दोप्याज़ा—कान कहीं गहने रख आये हैं, जहाँपनाह !

जगवन्त—क्यों ? मैंने क्या कोई बुरी बात कही ? जब मियाँ तानसेन गाते हैं तब मेरी आँखें बन्द हो जाती हैं और कान उनकी तानों का रस पीने में डूब जाते हैं। क्या यहाँ कोई मुझको बहरा समझता है ?

अकबर—कुछ गाओ तानसेन। मन जब मसलों में डूबने उतराने लगता है तब तुम्हारी तानें ही उसको उबार लाती हैं।

मुल्ला दोप्याज़ा—जहाँपनाह ने सच फ़रमाया पास ही जो अपने थके हुये घोड़े हम बाँध आये हैं, इनकी तानों से वे भी हिनहिना उठेंगे।

बीरबल—खुश तो इनकी तानों से गधे तक हो जाते हैं, मगर मियाँ मुल्ला तुमतो सभी से निराले हो।

अकबर—तभी तो फ़ारसी के कवियों ने इनकी सारी की सारी मुल्ला बिरादरी की ख़बर ली है।

तानसेन—जहाँपनाह, यहाँ तानपूरा, बीन, मृदङ्ग इत्यादि कुछ भी नहीं है।

अकबर—तुम और तुम्हारा स्वर तो है। आओ, इस छाया में बैठें।

(सब यथास्थान बैठ जाते हैं)

[तानसेन सूरदास का पद गाता है]

❀ पद ❀

बा पट पीत की फहरान।
कर धरि चक्र चरन की धावनि, नहिं बिसरति वह बान॥
रथ ते उतरि अवनि आतुर ह्वै, कच रज की लपटान।
मानों सिंह सैल ते निकस्यो, महामत्त गज जान॥
जिन गुपाल मेरो प्रन राख्यो, मेटि वेद की कान।
सोई सूर सहाय हमारे, निकट भए हैं आन॥

(नेपथ्य में शोर होता है)

अकबर—यह क्या है? मैं तानसेन के स्वर और सूरदास के रस के मीठे घोल में इतना डूब गया कि निकट का शोर अब सुन पाया।

फैज़ी—(*पार्श्व की ओर जाकर और लौटकर*) जहाँपनाह, कहीं गाँवों के कारबारी बेमौके आ पड़े हैं—

अकबर—उनको आने दो—पर आखिर हैं काहे के लिये? उनके मुखिया को भेज दो।

फैज़ी—(*पार्श्व के पास जा खड़ा होता है।*) कौन हो तुम लोग?

(नेपथ्य में गुसाईं हैं, दीनबन्धु)

फैज़ी—मैं दीनबन्धु नहीं हूँ, दीनबन्धु का एक छोटा सा सेवक मात्र हूँ। भीड़ की भीड़ मत आओ, केवल दो मुखियों को भेज दो।

(फ़ैज़ी के पीछे पीछे दो गुसाईं साधु आते हैं । जटा, भस्म, लंगोटी, मृगचर्म कन्धे और पीठ पर, दूसरे कंधे पर झोला, हाथ में चिमटा । अकबर को अयाचित आशीर्वाद देते हैं । वह थोड़ा सा सिर हिला देता है । साधु चुपचाप खड़े हो जाते हैं ।)

अकबर—क्या बात है ?

(दोनों साधु आगे बढ़कर एक एक नारियल और थोड़े से फल भेंट करते हैं । अकबर उनको लेकर छाती से छुलाने के बाद पास रख लेता है ।)

अकबर—आप लोगों की यह भेंट राजा महाराजों के हीरे जवाहिरों से बढ़कर है । कहिये आप लोगों को किसने सताया है ?

एक साधु—राजराजेश्वर, हमलोग पुरी जमात के साधु हैं । आज पावन त्योहार है । हम लोगों को सरोवर में स्नान का पहला हक़ है । गिरी जमात के साधु कहते हैं कि हम पहले स्नान करेंगे । संख्या में कुछ अधिक होने के कारण उनके अखाड़ों ने पवित्र घाट पर अधिकार कर लिया है, और हमको—

दूसरा—ठहरो । जहाँपनाह, हम पुरी लोगों के भी अखाड़े हैं । गिरियों से संख्या में कम होने पर भी हम उनके खोपड़ों का भञ्जन कर सकते हैं—

अकबर—ज़रा धीरज धरो, तुम्हारी भी सुनूँगा । (पहले साधु से) कुल कितनी जमातें होती हैं आप लोगों में ? ये अखाड़े कैसे और कब बने ? किसने बनाये ?

पहला साधु—हम सबके गुरु श्री मधुसूदन सरस्वती ने, और हाल मालूम नहीं है । पर इसमें कोई सन्देह नहीं राजराजेश्वर कि पवित्र घाट पर स्नान की सायत चूकने को ही है; धर्म रसातल जाने को है; हम मार डालेंगे और मर जायेंगे, खून की नदियाँ बहा देंगे, परन्तु धर्म को नीचा नहीं देखने देंगे । दीनबन्धु हमारे धर्म की रक्षा करें ।

अकबर—मधुसूदन बैरागी का नाम याद है। सात आठ साल हुये वे कुछ फ़क़ीरों के खिलाफ़ शिकायत लाये थे—तुम्हें कुछ याद है, मुल्ला? तुम उस वक्त मेरे पास थे!

मुल्ला दोप्याज़ा—मैं बलायें लूँ, ग़ज़ब की है जहाँपनाह की याददाश्त। या खुदा, हैरान हूं मैं।

अकबर—अरे म्यां बात ही कितनी सी है! यह बाबाजी, मधु-सूदन साहब शिकायत लाये थे कि कुछ मुसलमान फ़क़ीरों ने कुछ हिन्दू साधुओं को मार डाला है—

मुल्ला दोप्याज़ा—मामूली बात थी जहाँपनाह। रोज़ का वाक़या—मैं कहां तक याद रखता? कैसे याद रखता?

बीरबल—तुम्हारे दिमाग में मुल्ला जी सिवाय प्याज के छिलकों के और है ही क्या? था भी कभी क्या?

अकबर—पूरी बात तो सुनो—मैं उन दिनों लड़ाइयों में बीधा हुआ था इसलिये बाबाजी की बात को अच्छी तरह न सुन सका। उसके बाद ये अखाड़े बखाड़े कैसे क्या बन गये? बीरबल, तुमको कुछ मालूम है?

बीरबल—हां जहांपनाह। मधुसूदन सरस्वती ने मुसलमान फ़क़ीरों के हमलों से बाबा-बैरागियों को बचाने के लिये उनको सशस्त्र करके सब वर्गों में बांट दिया है। अखाड़ा, कुश्ती, कसरत, हथियार चलाना इन सबके लिये उतना ही अनिवार्य है जितनी मोक्ष की साधना। अब फ़क़ीर लोग इन पर हमला नहीं करते।

अकबर—अच्छा, ये हथियारनन्द होगये हैं! हूं—*(साधुओं से)* आप लोग क्या चाहते हैं?

दोनों साधु—सहायता।

अकबर—एकसाथ मत बोलो। सहायता किस तरह की?

पहला साधू—या तो सरकार अपनी फौज भेजकर उन गिरियों को पवित्र घाट पर से हटा दें या हमको लड़ जाने की अनुमति दे दें। सरकार सरोवर के इतने निकट न ठहरे होते तो हम सरोवर में पीछे नहाते, गिरियों के रक्त में पहले—

अकबर—इसका सब मुमीता कर दिया जायगा। मैं अपनी फ़ौज को अभी नहीं भेजूँगा। पहले आप लोग अपने हथियारों को आज़मा लो। अगर आप जीत गये तो ठीक है, अगर सुना कि हार रहे हैं तो आपकी सहायता के लिये तुरन्त फौज भेज दूँगा। जाइये।

दोनों—जय होय। दिल्लीश्वर की जय होय। धर्म की रक्षा होगई।

(दोनों जाते हैं)

अकबर—मुझको खुशी है बीरबल, फक्कीर लोग अब बाबा-बैरागियों का क़त्ल नहीं कर सकेंगे, ओह—ओह—

बीरबल—ओह, जहाँपनाह, उनकी कोई चिन्ता हम लोगों को नहीं है, क्योंकि वे आपस में लड़कर एक दूसरे का क़त्ल करते रहेंगे। संसार का बोझ कम होता रहेगा। धर्म बेखटके चलता रहेगा।

(अकबर ध्यानमग्न हो जाता है)

फ़ैजी—*(धीरे से बीरबल से)* जहाँपनाह अपनी आत्मा के साथ कुछ बातचीत कर रहे हैं—किसी ख़याल का रत्न संसार में प्रकट होगा।

(मुल्ला दोपाज़ा ध्यानमग्न हो जाता है)

बीरबल—*(धीरे से फ़ैजी से)* प्याजी रङ्ग के भी कोई कोई रत्न होते हैं न शेख जी? दो सेर प्याज और दस सेर मांस को डकार जाने वाला मुल्ला देखिये अपने ध्यान में से कौन सा रत्न खोज कर पेश करता है।

अकबर—फ़ैज़ी, इस संसार में कुछ भी टिकाऊ नहीं है। कैसे कैसे लोग आये और चले गये।

फ़ैज़ी—जहाँपनाह, केवल नाम रह गया। नाम, जहाँपनाह।

अकबर—उँह! नाम!! जो चले गये वे क्या अपने नाम को चूमने-चाटने के लिये कभी लौटकर आये?

फ़ैज़ी—(*बीरबल से धीरे से*) मैंने कहा था न? कितना बड़ा ख़याल सामने आया आख़िर! (*अकबर से*) जहाँपनाह से एक अर्ज़ है। हम लोगों के पास यहां क़लम दावात कुछ भी नहीं। याद रखने की शक्ति हमारी ऐसी है नहीं जो हुज़ूर के अनमोल वचनों को सँभाल कर रक्खें। इसलिये हुज़ूर डेरे पर चलकर हर एक हीरे जवाहर को ध्यान के ख़ज़ाने से धीरे धीरे निकाले तो कागज़ पर जोड़ लेने की कोशिश करूँ।

अकबर—(*कुछ निराशा के स्वर में*) अच्छा फ़ैज़ी—(*एक क्षण के ध्यान के उपरान्त*) देखो फ़ैज़ी, तुम इतनी खुशामद मत किया करो; मैं खुदा का एक बहुत ही छोटा बन्दा हूं।

फ़ैज़ी—खुदा मेरा गवाह है, जहाँपनाह—मैंने एक लफ़्ज़ भी झूठ नहीं कहा।

अकबर—(*मुल्ला दोप्याज़ा को ध्यानमग्न देखकर*) मुल्ला साहब, किस ध्यान में मग्न हैं?

मुल्ला दोप्याज़ा—(*जैसे योगी ने घबराकर समाधि को भङ्ग किया हो*) ज···ज···जहांपनाह! ओफ़—दुनियां में कोई सार नहीं।

अकबर—सिवाय दो सेर प्याज़ और दस सेर मांस के।

मुल्ला दोप्याज़ा—उसमें खुदा का साझा ही क्या—वह तो जहांपनाह का बख़्शा हुआ है।

(*नेपथ्य से युद्ध की हुंकारें सुनाई पड़ती हैं*)

अकबर—मालूम होता है बाबा लोगों की लड़ाई शुरू हो गई। मन में चाह है, देखूँ कैसे लड़ते हैं ये लोग बिना कवच के और कैसे ओढ़ते हैं तीर–तलवारों के वारों को। हैं तो मुसण्डे, लड़ेंगे डटकर, मगर देखना है उनके हाथ और पैंतरे। बढ़िया तमाशा होगा।

बीरबल—वह जो थोड़ी दूर एक टेकड़ी है जहांपनाह, वहां से सब तमाशा देख लें। ध्यान लगाने का वहां अच्छा अवसर मिल जायगा।

मुल्ला दोप्याज़ा—हां हां जहाँपनाह जल्दी चलें, गुत्थमगुत्था शुरू हो गया है।

(नेपथ्य में शोर बढ़ता है)

अकबर—मुल्ला तुम दो सौ सिपाहियों को लेकर फ़ौरन जाओ। पुरी बाबाओं को हारते देखो तो उनकी तरफ से मिल पड़ो। जाओ।

मुल्ला दोप्याज़ा—जो हुकुम हुजूर का। करीब से लड़ाई के हर एक ब्योरे को परखने में मज़ा भी आयेगा।

(जाता है)

बीरबल—लौटने पर दुगुनी खुराक—चार सेर प्याज और—और—

अकबर—घायल–वायल हो गया तो फिर और क्या ?

बीरबल—घायल हो गया तो जहाँपनाह की दुआ, और वायल हो गया तो फ़ातिहा।

जसवन्त—जहाँपनाह, इस लड़ाई का चित्र—

अकबर—ओ, हाँ—जसवन्त, तुम भी जाओ। इस लड़ाई का चित्र बनाओ। *(जसवन्त जाता है)* फ़ैजी, तुम भी जाओ। बाबा जब हार जायें और भाग खड़े हों तब गिरी लोग उनका पीछा थोड़ी ही दूर तक कर पावें। तुम मुल्ला और सिपाहियों को तरतीब में रखना।

फ़ैज़ी—जो हुकुम, जहाँपनाह। *(जाता है)*

अकबर—तानसेन, तुम पत्थर के कलेजे को पिघला सकते हो, आँखों से पानी की झड़ी लगवा सकते हो, मुर्दा दिल को जान और जगमगाहट दे सकते हो, शून्य मन को फुरफुरी और फुरफुरे मन को आँधी-तूफ़ान दे सकते हो, क्या तुम्हारी तानों का इस लड़ाई पर कोई असर न पड़ेगा ?

तानसेन—जहाँपनाह, तीर और तलवारों के कान नहीं होते। जिस दिये में तेल-बत्ती होगी लौ उसी में तो उत्पन्न होगी।

अकबर—ठीक कहते हो तानसेन। इसीलिये मैंने अपने कानों की सबसे अधिक चिन्ता की। इसीलिये मैंने पढ़ना बेकार और वाहियात समझा। ये साधु तो पढ़े-लिखे होंगे न बीरबल ?

बीरबल—सब नहीं तो अधिकांश अवश्य, जहाँपनाह। इन्होंने शास्त्र, पुराण सभी कुछ पढ़ा होगा। इसीलिये—

अकबर—इनके दिमाग बिगड़ गये और कान सड़ गये।

(नेपथ्य में शोर और भी बढ़ता है)

तानसेन—गलों की चीखपुकार और तलवारों की इस खड़-खड़ाहट में तो स्वर, तान और ताल, सब, हा हा खा उठेंगे।

अकबर—मैं अपनी आंखों से इस खिलवाड़ को देखना चाहता हूं। मैं उस टेकड़ी पर अकेला जाऊँगा। तुम लोग भी कहीं से देखो। जसवन्त ने चित्र बना लिया हो तो उसी टेकड़ी पर मेरे पास भेज देना।

बीरबल और तानसेन—जो आज्ञा।

(एक दिशा में अकबर, दूसरी में बीरबल और तानसेन जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

[स्थान—सरोवर से कुछ दूर एक टेकड़ी। समय दोपहर उपरांत। सरोवर के निकट गुसाईं लड़ रहे हैं। गिरियों ने पुरियों को पीछे हटा दिया है। मुल्ला दोप्याज़ा कुछ मुग़ल सैनिकों के साथ पुरियों की सहायता के लिये आ जाता है। तीर तलवार से लड़ाई होती रहती है। अकबर और जसवन्त आते हैं। जसवन्त के हाथ मे एक काग़ज़, मोटा पूठा और क़लम है। गले मे डोरे से लटकती हुई दावात।]

अकबर—बैठकर देख सकोगे न जसवन्त ? बैठ जाओ।

जसवन्त—हां जहाँपनाह। चित्र कुछ तो बन गया है, बाक़ी बैठ कर बनाये लेता हूं।

(जसवन्त बैठ जाता है और लड़ाई का चित्र बनाता जाता है।)

अकबर—देखो, देखो, उस बाघा के चेहरे को देखो,—आंखें शैतान की जैसी, मुंह किसी पुराने खुले हुये क़ब्रिस्तान जैसा, मानो किसी की आंते फाड़ेगा—

जसवन्त—हां जहाँपनाह। उसके सिर पर धर्म का भूत सवार है। *(चित्र बनता रहता है। उधर लड़ाई होती रहती है।)*

अकबर—और वह देखो, वह गिरा। दूसरा मारा गया !! तीसरे से ख़ून का पनाला बह निकला !!! अब वे कई एक दूसरे से चिपट गये। कैसा मज़ा आ रहा है ! वाह शिकार से बढ़कर !! यह सब आ जावे चित्र में, जसवन्त।

जसवन्त—मेरा काम है, हुज़ूर; करूँगा।

(लिखता रहता है)

अकबर—ओ हो, उस मोटे पेट वाले बाबा को तो देखो ! लगता है जहां यह अपनी तोंद अड़ा देगा वहां बंटाढार हो जावेगा !!

जसवन्त—इसे भी नहीं छोड़ूँगा।

अकबर—अरे ! कमबख्त भाग उठे हैं !! थोड़े से ही मरे कि पैर उखड़ गये !!! मैं इनका अगुआ होता तो कोड़े लगाकर सीधा करता जमकर लड़ने के लिये।

(गुसाईं भागते हैं)

जसवन्त—मेरा चित्र भी पूरा हो गया, सरकार।

अकबर—देखूँ (*हाथ में लेकर देखता है*) वाह जसवन्त क्या बात है तेरी चतुराई की ! कमाल करता है !!

जसवन्त—जहाँपनाह इनकी अभी लिखाई, जड़ाई करूँगा, फिर रंगत—तब झलक आयगी।

अकबर—यह मोटे पेट वाला और बड़े दांत वाला बाबा—दोनों खूब आये।

(आगे आगे मुल्ला दोप्याज़ा और पीछे पहरे वाले एक गुसाईं को पकड़े हुये लाते हैं। अकबर कागज़ वाले चित्र को जसवन्त के हाथ में दे देता है।)

मुल्ला दोप्याज़ा—जहाँपनाह, यह गिरियों का मुखिया है। इसने कई पुरी मारे हैं।

अकबर—तब और क्या करता ?

मुल्ला—इसने दो सिपाही हमारे भी मार दिये हैं।

अकबर—ऐं !!! हमारे सिपाही !!!! इसके हाथ पैर काट डालो और फिर सिर काटकर फेंक दो।

(बीरबल आता है।)

मुल्ला—यह गुसाईं हेकड़ी मारता था —कहता था हम बीरबल के मौसेरे भाई हैं।

बीरबल—मेरा भाई !

अकबर—बीरबल का भाई !!

मुल्ला—हुजूर। एक ही तबेले के हैं—सिर्फ़ अस्तबल अलग अलग। घोड़े ये हैं नहीं। गधा कैसे कहूं ? इसलिये खच्चर हैं !

अकबर—बीरबल का भाई !!!

मुल्ला—और इसने मुझको भी घायल कर दिया है।

अकबर—इस गुसाईं का हाथ पैर या सिर कुछ भी नहीं काटा फाँका जावेगा। इसको कैद में डाल दो। बस। (*सिपाही उसको ले जाते हैं*) जाओ मुल्ला, तुम भी अपनी मरहम पट्टी करवाओ। (*मुल्ला जाता है*) तुम्हारा मौसेरा भाई है यह !

बीरबल—अब तो जरूर है, जहांपनाह। वैसे कोई दूर का नातेदार होगा। कालपी में मेरे नातेदारों की कमी नहीं है।

अकबर—फिर भी जब तुम्हारा नाम लेता है तो वह मारा नहीं जा सकता। (*मैदान की ओर देखकर*) सब तमाशा खतम हो गया। संसार भी क्या है। एक पल पहले कुछ था, अब कुछ और है। बिलकुल सुनसान ! (*आंखें मूंद लेता है*) मेरे भीतर भी सुनसान सा है।

(*बीरबल सोचने लगता है। जसवन्त चित्र को देखता है, अकबर चुप है।*)

अकबर—न जाने मेरा मन क्यों गिर रहा है। कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है, बीरबल।

बीरबल—जहांपनाह, किसी मधुर स्मृति को मन में जगावें, किसी सुहावने दृश्य को याद करें, किसी कोमलकान्त मुख, किसी मदभरी चितवन, किसी अनोखी मुस्कान—

अकबर—(*कुछ चौंकता हुआ सा*) हां बीरबल, मेरे इस अनमनें-पन के दो ही इलाज हैं,—अपने कारखानों में कसकर काम करूँ, कोई लड़ाई लड़ूँ या किसी नये चेहरे को निहारने के लिये पाऊं। जसवन्त !

जसवन्त—जहांपनाह, इस चित्र के चेहरे मुहरे सब ठीक ठीक उतरेंगे।

अकबर—मैं दूसरे चित्र की बात करना चाहता हूं जसवन्त। दिल्ली में है। एक शेखज़ादी है। पता दूंगा; जैसे बने उसका चित्र बनाकर लाओ। बहुत तारीफ़ सुनी है।

जसवन्त—जो आज्ञा सरकार, परन्तु पर्दा—मैं पर्दे के भीतर कैसे जा सकूंगा ?

अकबर—तुम पर्दे वाली बन जाना। क्या मुश्किल है ? कलावन्त को सब कलायें आनी चाहिये।

जसवन्त—जो आज्ञा।

अकबर—अब तानसेन को ढूंढ़ लाओ, बीरबल। मैं जसवन्त को लेकर रावटी को जाता हूं। वहीं आ जाओ।

बीरबल—वह मुल्ला दोप्याज़ा की कोई रिश्तेदार है, जहांपनाह। यदि चित्र से मन भर जाय तो आगे का मार्ग सहज है।

अकबर—हूं। देखूंगा।

(*अकबर और जसवन्त एक ओर जाते हैं, बीरबल दूसरी ओर।*)

तीसरा दृश्य

[*स्थान—थानेश्वर के निकट का जंगली मार्ग। समय तीसरे पहर के उपरान्त, परन्तु सन्ध्या के लिये अभी काफ़ी विलम्ब है। अकबर और बीरबल आते हैं।*]

बीरबल—जहांपनाह के पैर जैसे घोड़े के लिये प्रबल हैं वैसे ही ज़मीन के लिये दृढ़।

अकबर—तुम कुछ थक गये हो, बीरबल। और आगे नहीं जाऊंगा। यहीं टहलते टहलते बातें करें।

बीरबल—हर हालत में सरकार मेरा कचूमर निकालेंगे। बलिदान का बकरा हूं मैं तो।

अकबर—लोग बलिदान क्यों करते हैं?

बीरबल—डर के मारे और अपना पेट भरने के लिये।

अकबर—होम, हवन पूजन वग़ैरह क्यों करते हैं लोग?

बीरबल—डर के मारे। आप नमाज़ क्यों पढ़ते हैं? मैं सन्ध्या क्यों करता हूं? परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए—मानो वह नाराज़ है। डर के मारे ही न?

अकबर—सच्चा मज़हब क्या है?

बीरबल—ढकोसला, ढोंग।

अकबर—मगर वह इसके अलावा, और आगे भी कुछ और है।

बीरबल—इसके आगे क्रूरता और ठगी।

अकबर—पुराने बड़े लोगों ने कुछ ढूंढ़ा और पाया—

बीरबल—ढूंढ़ा, पाया और अपने साथ लेकर चलते बने। छोड़ गये हमारे लिये दुख। उन्होंने अपने से पहले के लोगों की लकीरों को लांघा, अपना मार्ग बनाया और सुख कमाया, हम लोग नक़लों के करने में बीच गये और गुसाइयों की उस लड़ाई की तरह के गड्ढे में गिरकर सिर फोड़ते और फुड़वाते रहे जो दो-तीन महीने पहले ही हुई थी।

अकबर—हर एक आदमी तो अलग अलग रास्ता बना नहीं सकता। दूसरों की सोची हुई बातों पर तो चलना ही पड़ेगा?

बीरबल—दूसरे लोग हमारे लिये विचार करें ! दूसरे लोग हमारे लिये काम करें !! दूसरे लोग हमारे लिये अपने प्राण दें !!! जहांपनाह, दूसरे लोग हमारे लिये बढ़िया बढ़िया भोजन क्यों न करें ? रेशमी ज़रतारी कपड़े क्यों न पहिनें ? बड़े बड़े भोग-विलासों का आनन्द क्यों न उठावें ?

अकबर—तो आदमी क्या करे ? क्या बिना धर्म, मज़हब के रह जाय ?

बीरबल—तानसेन और जसवन्त जो धर्म और मज़हब देते हैं, सूरदास अपने पदों में जीवन का जो रूप दिखलाते हैं, जिनको गा गाकर तानसेन सरीखा महान कलाकार भी कभी नहीं अघाता और जिसकी धार में जहांपनाह भी डूबते-उतराते रहते हैं उसको पकड़े साधारण आदमी—

अकबर—परन्तु यह सब हरएक आदमी के लिये तो सुलभ नहीं है।

बीरबल—नहीं है तो सात-आठ घण्टे रोज़ काम करे, दो-तीन बार खाये पिये, और रात को बीवी-बच्चों के प्यार-दुलार में सो जाय या इमली के पत्ते पर कुलांट लगाये।

अकबर—यह क्या चीज़ है बीरबल ? किस पर कुलांट लगाये ?

बीरबल—बहुत मोटी और बहुत बारीक जहांपनाह। या तो अपने पडोसी का सिर काट उठे या गुण्डों के आपसी सिरफुटौवल का तमाशा देखकर छाती ठण्डी करता रहे।

अकबर—इस स्थान की इस झुरमुट का कुछ पुण्य प्रताप है जो तुम कविता सी कर उठे बीरबल। उस दिन जसवन्त भी कुछ भटक गया था।

बीरबल—मेरे पैर ज़रूर कुछ भटक गये हैं, पर बुद्धि नहीं भटकी है। जहाँपनाह सोचें, इन कठमुण्डितों और कठमुल्लों ने जो धर्म और मज़हब पेश कर रखा है उससे इमली के पत्ते पर कुलांट लगाने वाले का जीवन क्या बुरा ?

अकबर—बुरा यह है कि फिर वह किसी की भी परवाह नहीं करेगा।

बीरबल—यह बिलकुल सच है। वह पहला हाथ बीरबल पर साफ़ करेगा और दूसरा जहाँपनाह पर।

अकबर—तुम मुझको हँसाकर असलियत को हवा में उड़ा दिया करते हो।

बीरबल—संगीत परमात्मा का स्वभाव है और हँसी भाषा।

अकबर—दुनिया में जितना फूहड़पन है क्या वह सब परमात्मा की भाषा है ?

बीरबल—यह फूहड़पन मनुष्य की नीचता की भाषा है। असली हँसी को या तो बीरबल जानता है या जहाँपनाह। दूसरों को फिसलते, गिरते, और मरते देखकर जो हँसी आती है वह फूहड़पन है और मनुष्य की निजी नीचता और बर्बरता से उत्पन्न होती है।

अकबर—तो बीरबल और अकबर को छोड़ कर बाक़ी कोई असली हँसी को नहीं जानता !

बीरबल—नहीं थोड़े से और हैं जो जानते हैं, जैसे—सूरदास, तुलसीदास इत्यादि।

अकबर—तुलसीदास कौन ?

बीरबल—है एक, जो धर्म के तत्व को जानता है, संगीत को पहिचानता है और हँसी को भी चीन्हता है, और, बड़ी बात यह है कि

अपने पीछे कुछ ऐसा छोड़ जायगा जिसको लोग गाते रहेंगे और जिससे असली हँसी को पाते रहेंगे।

अकबर—उसको मेरे दरबार में ला सकोगे ? उसको पन्च हज़ारी मन्सब दूँगा, अगर वह मेरी जाँच पड़ताल में भी वैसा ही उतरा जैसा कि तुम ज़ाहिर कर रहे हो।

बीरबल—वह जहांपनाह के दरबार में कभी नहीं आयगा।

अकबर—क्यों ? क्या इतना घमण्डी है ?

बीरबल—क्योंकि वह घमण्डी नहीं है, क्योंकि वह ऐसे दरबार में पहुँच गया है जहाँ अपनी चटाई पर बैठकर वह करोड़ों को बेहिसाब बड़े बड़े मन्सब बांट सकता है।

अकबर - किसके दरबार में ?

बीरबल—राम के दरबार में।

अकबर—ओह ! अच्छा—हां—तो बीरबल तुम वास्तव में आस्तिक हो, परन्तु बातें करते हो नास्तिकों जैसी।

बीरबल—जहाँपनाह असली आस्तिक नास्तिक ही होता है, और, बात तो यह है कि असली आस्तिक और असली नास्तिक में बहुत ही थोड़ा अन्तर रहता है।

अकबर—वह अन्तर क्या है ?

बीरबल—बेवकूफ़ी का, जहांपनाह।

अकबर—तुम ठीक कहते हो,—नास्तिक बेवकूफ़ होता है।

बीरबल—नहीं जहाँपनाह, आस्तिक बेवकूफ़ होता है।

अकबर—ऐं ! कैसे ?

बीरबल—ऐसे—आस्तिक में भक्ति होती है, भावना, जिसका ज्ञान या विज्ञान आधार नहीं होता, जो किसी अनजाने स्रोत से उमगती

है और उमड़ती हुई किसी अनजानें शून्य में जा समाती है। नास्तिक किसी भी अनजाने पथ पर डग नहीं मारता।

अकबर—लेकिन आदमी की जानकारी है कितनी? हो भी कितनी सकती है?

बीरबल—यही नास्तिकों का कमज़ोर पहलू है।

अकबर—वेदान्ती और सूफी ज्ञान और भक्ति का मेल बिठला देते हैं।

बीरबल—ज़रूर। ठीक उसी तरह जैसे कोई नादान किसान ठीक असाढ़ के मौके पर मार मार कर अपनी बदिया को बिठला देता है। सड़ियल, दुबले पतले, रोगीले शरीर वाले लोग कह उठते हैं—हम स्वयं परमात्मा हैं! अगर परमात्मा में बोध होता तो वह इन सबकी वह चाँटे बाज़ी करता, वह, कि छठी के दूध की याद आ जाती।

अकबर—मैं समझता हूं, बीरबल, सब समझता हूं। कहता केवल तुमसे हूं—नमाज़ रोज़े, सब, का पाबन्द हूं, लेकिन यक़ीन मेरा किसी पर नहीं। सोचता हूं कोई ऐसा रास्ता निकले जो मुझको भी रुचे और सबको पसन्द आवे। (*एक क्षण ध्यान लगाता है*)

बीरबल—बस, जहाँपनाह, बस। आपने ध्यान लगाया कि कोई नया खतरा सामने आया!

अकबर—क्यों दिल्लगी करते हो? ध्यान तो तुम भी लगाते हो—मुझको मालूम है।

बीरबल—ध्यान तो लगाता हूं, पर यह नहीं जानता हूं कि किसका। पर जहाँपनाह जब ध्यान लगाते हैं तब जानते हैं कि किसका लगा रहे हैं और किस वास्ते।

अकबर—अच्छा बीरबल, मेरे मन के भीतर का ताड़ने झांकने वाला तुमसे बढ़कर और कोई नहीं है—बतलाओ मैं अभी क्या सोच रहा था?

बीरबल—यह कि सरकार पूरे हिन्दुस्थान पर हुकूमत करें और सरकार की बात के भी सामने यह सारा देश ठीक उसी तरह सिर झुकादे जैसा कि तलवार के सामने, और सरकार को परमात्मा पुत्र का सुख दे जो गद्दी को हरा बनाये रखे।

अकबर—शाबाश बीरबल! तुम्हारे इस कथन में केवल एक भूल है।

बीरबल—वह क्या?

अकबर—यह कि वह सारा का सारा गलत है!

बीरबल—ऐं !!! फिर आप क्या सोच रहे थे?

अकबर—यह कि मेवाड़ का राना अपने को किसी के सामने कुछ नहीं समझता। मेवाड़ को क़ाबू में करना है। वह गोंडवाने की रानी दुर्गावती से न तो ज़्यादा रुपये वाला है और न ताक़त वाला। दक्षिण की शिया नवाबियों को ज़ेर करना है। गुजरात को नहीं कह सकता हूं कि बिलकुल आज्ञाकारी है। काबुल छाती का कांटा है। काश्मीर पर अभी हाथ ही नहीं डाल पाया हूं।

बीरबल—सरकार हमारे यहाँ कालपी की तरफ़ एक कहावत है—मूड़ नहीं कपार। मेरी बात तो अक्षर अक्षर सही निकल रही है।

अकबर—मगर मैंने पुत्र-प्राप्ति की बात इस समय बिलकुल नहीं सोची थी; वैसे अकसर मन में उठती रहती है। यहां से डेरे उठाकर पहले गुजरात और फिर मेवाड़। क्या कहते हो—सफल तो होजाऊँगा?

बीरबल—कोई सन्देह ही नहीं। हुज़ूर के बराबर कोई भी चुस्त नहीं और राजाओं से बढ़कर सुस्त और उनके भक्तों से ज़्यादा और कोई मूर्ख नहीं।

अकबर—मगर मेवाड़—

बीरबल—मेवाड़ का राना उदयसिंह सुस्त, अफ़ीमखोर और उसके अनुयायी मारने की अपेक्षा मरना ज़्यादा पसन्द करने वाले। जहाँपनाह के सामने विजय हाथ जोड़कर आखड़ी होगा।

(नेपथ्य में पैरों की आहट और बातचीत का स्वर सुनाई पड़ता है)

अकबर—कोई देहाती जान पड़ते हैं। सुनना चाहता हूं ये लोग आपस में क्या और किस तरह की बातचीत करते हैं। आओ इस बड़े पेड़ के पीछे छिप जायँ। *(वे दोनों छिप जाते हैं)*

(दो देहातियों का प्रवेश। एक हिन्दू है, दूसरा मुसलमान। हिन्दू धोती पहिने है, यह पाजामा। दोनों साफ़ा बाँधे हैं। दोनों कुर्ते में। कपड़े दोनों के फटे हुये हैं। पीठ पर दोनो एक एक पोटली कसे हैं। जूते दोनों के पुराने हैं। उनको वे हाथ में लिये हैं)

हिन्दू—आओ हो रमजानी हियन, तनक सुस्ता लेयँ।

रमजानी—आधी घरी में कछू बिगरत नहीं आय, यो सार अकबरा औ बिरबलवा यहीं कहूं ठहरा रहा ओ दिन जब गुसइयां कट मरा। हम बादसाह होतन तो मारि मारि कै सारा गुसइयन क्यार हलुआ बनाय डारित्यो और आपस में कटाकुटी न करन देत्यो। बैठौ भैया लल्ली।

(दोनों बैठ जाते हैं)

लल्ली—पूरब जनम के पुन्न हैं इन लोगन के सो कर रये मजा-मौजें। आगे के जनम में होने इन्हें कुढ़िया।

रमजानी—पूरब जनम क्यार पुन्न होय चाहे एही जनम में हमार तुम्हार नलाखी का कारन होवै, ये सार बादसाह लोग बगर का बगर औरत राखत हन औ' जो एक बार बगर मां उरिया जात तो का मुलक का खबर लेत फिन ?

लल्ली—और दैय्या रे दैय्या खात कितनो हैं जे राजा रईस ! कुरन भर भर !! और कितने बेला और कटोरन में !!!

रमजानी—औ बिचारा रसोइया खाना ढोवत ढोवत अधमरा हुइ जात होय।

लल्ली—और उन बिचारे किसान मजूरन की तो कहो खाँ साथ जिनको अन्न और घी जे खात रहत और वाको खाद बिरथा करत रहत। दे कर, दे उगाही। मरी जात है बिरजा करन के बोझ सें। मजूर कों मजूरी दो पैसा रोज, सो बाई में खटका, और मनसबदारन को हजार हजार और सोरह सोरह हजार रुपया महीना ! हे राम, न जानें पिरलय कबै हुइये !!

रमजानी—पै भैया लल्ली, एक बात जरूर है। ये बादसाह, राजा इमारत बड़ा सुन्दर सुन्दर बनवावत हैं और फकीरन साधुअन का पूजा करित हन।

लल्ली—फकीरन साधुअन की पूजा तो ठीक है, पै मजूरन के पेट काट काट कें जो महल और बिलासघर बनवाउत हैं सो बे तो ठीक नाहिंयां। लाख में एक के पास महल और बाकी सब फूस की झुपरियन में ! जिनमें वे कीरन मकोरन की तरा मरत रहत !!

रमजानी—अब चलौ भैया लल्ली।

(दोनों उठते हैं)

(एक ओर से धीरे धीरे बीरबल आता है। वे दोनों उसको देखकर भयभीत होते हैं। प्रणाम करते हैं)

बीरबल—डरो मत। हम रास्ता भूल गये हैं। थानेश्वर जाना चाहते हैं। तुम हमको पहिचानते हो ?

दोनों—नहीं तो।

बीरबल—कहाँ जा रहे हो ?

दोनों—दिल्ली, सरकार।

बीरबल—काहे के लिये ?

दोनों—नौकरी को।

बीरबल—हमको थानेश्वर का रास्ता बतला दो, हम तुमको अच्छी नौकरी देंगे।

रमजानी—हम का जानी ?

लल्ली—हमको का मालूम कितै है थानेसुर ?

बीरबल—फिर आ कहां से रहे हो ?

लल्ली—हियन कहूं से। हम बहुत गरीब हैं मालिक। हमने कछू नईं बिगारो है।

रमजानी—हम कुछ नाहीं जानित मालिक।

बीरबल—तुम्हारा नाम ?

रमजनी—हम कुछ नाहीं जानित मालिक !

बीरबल—मुसलमान हो ?

रमजानी—हाँ, गरीबपरवर।

बीरबल—हम तुमको बादशाह के यहां नौकरी दिलवायँगे।

रमजानी—वाह, मालिक ! वाह !! खुदा आपको सौ लडके दे।

बीरबल—एक साथ सौ ! (*रमजानी बरबस आई मुस्कराहट को रोक लेता है। लल्ली खोखली दृष्टि से देखता है*) तुम हिन्दू हो ? कालपी की तरफ़ के रहने वाले न ?

लल्ली—ओ भगवान ! अपुन का हमाये पेट में बैठे हो ?

बीरबल—बैठे थे, अब निकल आये हैं। हो न ?

लल्ली—हौं जू। नौकरी कौन की मिल है ?

बीरबल—बीरबल की। राजा बीरबल की। करोगे ?

लल्ली—हाँ दीनबन्धु। पूरब जनम कौ हमारो पुन्न !!

बीरबल—अगले जनम की भी कुछ याद रखना। (*जिस दिशा में अकबर छिपा है उस ओर मुँह करके*) मीर साहब ! ओ मीर साहब !! कहां भटक गये ? ये लोग रास्ता दिखलायंगे। यहां आइये।

अकबर—(*ओट से*) आया।

(*अकबर आता है। बीरबल उसकी तरफ़ धीरे धीरे जाता है। रमजानी उसको पहिचान लेता है।*)

रमजानी—(*धीरे से लल्ली से*) यो सार अकबरा आय ! औ' यो सायद सार बिरबलवा !!

लल्ली—(*धीरे धीरे*) अरे चुप, मियाँ चुप। हाथ पांव जोड़ कें फुसलाओ इन्हें।

(*अकबर और बीरबल पास आते हैं। रमजानी और लल्ली पैरों पड़ने को दौड़ते हैं। अकबर रोक लेता है। वे दोनों आखें नीची किये खड़े रहते हैं।*)

अकबर—(*रमजानी से*) तुम्हारा नाम ?

रमजानी—र···म···ज···नि···यां·· खुदावन्द।

अकबर—और तुम्हारा ?

लल्ली—ल···ल···ल···ल···ल···ल्ली···महाराज।

अकबर—रमजानी, तुमको बादशाह के यहाँ नौकरी मिलेगी, और तुमको लल्ली इन राजासाहब के यहाँ।

(*वे दोनों हर्षमग्न हो जाते हैं।*)

अकबर—इनको जानते हो ? नहीं जानते हो। जान जाओगे।

लल्ली—आँ···ऊँ···ब···बा···बि···बी···

बीरबल—अब चलिये; इनकी बब्बा बिब्बी अनन्त है—अर्थात हम लोगों के सामने इसी प्रकार चलती रहेगी।

(वे सब जाते हैं)

चौथा दृश्य

[स्थान—दिल्ली की एक गली में छोटे बड़े मकान। समय—दिन का पहला पहर। गली में लोग आ जा रहे हैं। जसवन्त का स्त्री-वेश में प्रवेश। वह इधर उधर देखकर एक मकान की कुण्डी खटखटाता है। किवाड़ खुलते हैं। आड़ में एक सुन्दरी आती है। नाम हसीना। यौवन और हुस्न—दोनों उस पर छाये हुये हैं। जसवन्त मकान के भीतर हो जाता है। मकान के एक कमरे में हसीना के साथ पहुँच जाता है। कमरे में आरायश का सामान है। एक बड़े तख्त पर गद्दी और तकिये लगे हैं। सामने एक छोटा तख्त है। उसपर भी गद्दी तकिया है। कमरे में फर्श बिछा हुआ है। उगालदान, पीकदान, पानी की सुराही इत्यादि रखी हुई हैं। कमरा मध्यम श्रेणी से कुछ ऊँचे व्यक्ति का है।]

जसवन्त—*(बनाई हुई बारीक आवाज़ में)* आज मैं सब सामान ले आई हूं। आप उस तख्त पर बैठें। *(वह बैठती है)* कई तरह से बैठना पड़ेगा, तब कहीं तस्वीर बन पावेगी।

हसीना—क़वायद तो बेढब है, मगर अखर नहीं रही है।

(हसीना विविध प्रकार से बैठती है। खड़ी होती है। मुड़ती है, झुकती है, गर्दन को लोचें देती है। ऐसा उसको कई बार और कई तरह से करना पड़ता है। फिर बैठ जाती है।)

जसवन्त—अब आप तकिये से टिक कर एकचश्म हो जायँ।

हसीना—(*मुस्कराकर*) एकचश्म ! दूसरी आँख का क्या करूँ ?

जसवन्त—नहीं साहबज़ादी । तस्वीर खीचने वालों की बोली में एकचश्म होना कहते है ऐसा कोना लेकर बैठना जिसमें तस्वीर बनाने वाले को एक आँख और उसके साथ का ही चेहरा दिखलाई पड़े । आप ज़रा मुस्कराती भी रहें ।

हसीना—*(हँसते हुये)* मुस्कराना क्या, मेरे तो पेट में बल पड़ रहे हैं । बड़ी लम्बी कसरत है ।

जसवन्त—उसी में से तो तस्वीर खीचने वाली अपने लिये जौहर चुनेगी ।

(यकायक गोमती का प्रवेश । गोमती ने यौवन में पदार्पण किया है । वह बहुत सुन्दर है । रङ्ग गोरा, ठोड़ी पर तिल, आँखें बड़ीं, भौंहें धनुषाकार)

गोमती—बहिन हसीना, अपना कौनसा जौहर दे रही हो इनको ?

हसीना—जौनसा इनको पसन्द आवे । वैसे मैं तो चाहूंगी तकिये से टिकी अपनी तस्वीर—

जसवन्त—और मुस्कराती हुई ।

(जसवन्त एक क्षण के लिये ध्यान के साथ गोमती को निरखता है)

हसीना—यह हमारी पड़ोसिन गोमती हैं । पढ़ी-लिखीं और बड़े मन वालीं । अभी ब्याह नहीं हुआ है, चाहती हैं किसी राजा के साथ भांवर पड़े ।

गोमती—अपने दिल की बात कह रही हो हसीना । तकिये से टिक कर मुस्कानों के साथ तस्वीर के खिचवाने का और मतलब ही क्या हो सकता है ?

हसीना—तस्वीर को तो मैं अपने पास रखूँगी ।

(गोमती तेज़ निगाह से जसवन्त को देखती है)

गोमती—मालूम तो बड़ी चतुर पड़ती हैं ये। किससे सीखा चित्र बनाना तुमने? दिल्ली में तो दो-एक स्त्रियां ही हैं जो चित्र बनाना जानती हैं।

जसवन्त—मैं आगरे से आई हूं। हमारे घराने में यही काम होता है।

हसीना—इनके मालिक बादशाह के हुज़ूर में नौकर हैं।

जसवन्त—यहां रिश्तेदारी में आई हूं। आप भी अपना चित्र खिचवा लीजिये। बहुत अच्छा बनाने की कोशिश करूंगी।

गोमती—तो दिल्ली के बादशाह के पास आप अकेली इनका चित्र ले जायेंगी या मेरा भी?

जसवन्त—(*घबराकर*) दिल्ली के बादशाह के पास! मैं क्यों ले जाने लगी? साहबज़ादी मज़दूरी दे रही हैं—मैं उनकी तस्वीर बना रही हूं। बादशाह के पास क्यों ले जाने लगी?

गोमती—क्योंकि वह औरतों का भूखा रहता है, क्योंकि तुमको इधर से मज़दूरी मिलेगी और उधर से इनाम।

जसवन्त—(*संयत होकर*) मैं यहीं बैठकर चित्र बनाऊँगी—रङ्गत इत्यादि सब यहीं करूंगी, और मज़दूरी लेकर खाली हाथ चली जाऊँगी।

हसीना—गोमती, तुम भी अपनी तस्वीर बनवाओ।

जसवन्त—मैं बड़ी खुशी से बनाऊँगी। आप ज़रा तिरछी खड़ी होंगी तो बढ़िया ठवन रहेगी।

गोमती—मुझको कौन किसी राजा के साथ ब्याह करना है?

हसीना—तुम्हें मेरे सिर की क़सम है गोमती, तस्वीर खिंचवाओ। मैं खाने-पीने से फ़ारिग होकर आती हूं।

गोमती—अच्छी बात है। दाम कितने देने पड़ेंगे?

जसवन्त—जो कुछ साहबज़ादी देंगी—केवल दो रुपये।

गोमती—अर्थात् छः मन गेहूं। मान लिया। कपड़े बदल आऊँ?

हसीना—मैं घंटे डेढ़ घंटे में आई जाती हूं। (*जाती है*)

जसवन्त—आप कपड़े और गहनों की फ़िकिर न करें, मैं सब पहिना लूंगी। कलम और रंगों का तो काम है।

गोमती—अच्छा। अब क्या करूं?

जसवन्त—अब आप कई तरह से आड़ी, तिरछी, लोच-लचक लेती हुई खड़ी हों और हँसती मुस्कराती रहें। आप बहुत सुन्दर हैं।

गोमती—मुझको क्रोध आसानी के साथ आ जाता है, हँसी मुस्कराहट कम।

जसवन्त—मैं दो तीन प्रकार से आपका चित्र बनाऊँगी।

गोमती—केवल दो रुपये में!

जसवन्त—जी हाँ। कलाकार केवल रुपये पैसे के ही लिये काम नहीं करता। अपने मनको रिझाने के लिये भी कुछ करता है।

[गोमती चित्र खिंचवाने के लिये नाना प्रकार की लंकों, लोच-लचकों और [illegible] के साथ खड़ी होती है। जसवन्त की क़लम चलती जाती है, परन्तु आँख गोमती के अंगों की परख में अधिक उलझ उलझ जाती है। वह कई प्रकार के रेखाचित्र बनाता है, परन्तु चितवन पकड़ मे नहीं आती।]

जसवन्त—आप कुछ देर तक मेरी ओर देखती रहें।

(गोमती मुस्कराती हुई देखती रहती है। जसवन्त उसकी चितवन को निरखता रहता है। उसकी कलम काँपने लगती है। गोमती हँसकर ज़रा सा मुँह फेर लेती है। जसवन्त के मुँह से स्वभाविक स्वर मे निकल पड़ता है—'वाह !! फिर से !!!' गोमती तुरन्त मुड़कर, तनकर, सीधी खड़ी हो जाती है।]

गोमती—फिर कहना—वाह ! फिरसे !!

जसवन्त—*(घोर नियन्त्रण के साथ बनावटी स्त्री-कण्ठ से)* वाह ! वाह !! फिरसे !!! *(गोमती बैठ जाती है)*

गोमती—तुम स्त्री नहीं हो। स्त्री वेश में पुरुष हो। सच बोलो, नहीं तो मैं हल्ला करती हूं; अभी यहीं मार डाले जाओगे।

जसवन्त—*(गोमती के स्वर में मरवा डालने की दृढ़ता और प्रखरता को अवगत न करके)* मैं स्त्री ही हूं—पेट भरने के लिये निकल पड़ी हू।

गोमती—*(दांत पीस कर)* अच्छा ! अभी सारा भेद खुला जाता है। *(गोमती उठकर मकान के भीतर जाने को होती है। जसवन्त घबरा जाता है।)*

जसवन्त—*(स्वभाविक स्वर में, परन्तु धीरे से)* मेरी बात सुनिये—विनती सुनिये।

(गोमती लौट पड़ती है)

गोमती—जल्दी बतलाओ कौन हो ? यहाँ क्यों आये ? कोई आ गया तो तुम्हारे प्राण नहीं बचेंगे।

जसवन्त—पुरुष हूं, बादशाह अकबर का चित्रकार। उन्हीं का भेजा हुआ यहाँ आया हूं। बादशाह—

गोमती—वह कलमुहां अकबर ! मुझको तुम्हारे ऊपर पहले ही शङ्का हो गई थी। अरब से आई हुई इस शेखज़ादी को तुम धोखे में

डाल सकते थे, परन्तु मेरी मिट्टी इसी देश की है, मुझसे कितनी देर छिपते ? बादशाह ने तुमको किस प्रयोजन से भेजा यहां ?

जसवन्त—बादशाह ने इनकी सुन्दरता की तारीफ़ सुनी। हरम में दाखिल करना चाहते हैं, परन्तु चित्र द्वारा पहले अपना मन निखार लेना चाहते हैं।

(गोमती मकान के इधर उधर देखती है कि कहीं से कोई आतो नहीं रहा है। जसवन्त को इससे आश्वासन और उत्साह मिलता है)

गोमती—परन्तु हसीना का तो ब्याह होने वाला है।

जसवन्त—इससे बादशाह के मार्ग में कोई बाधा नहीं आयगी। उन्होंने बैरामखां की विधवा से शादी की। हसीना की यदि शादी हो गई तो उसका पति हसीना को छोड़ छुट्टी दे देगा, बादशाह उसको महल में कर लेंगे।

गोमती—हसीना की इच्छा न भी हो, तो भी ?

जसवन्त—हसीना की इच्छा का कोई सवाल ही खड़ा नहीं होता।

गोमती—मैं तुमको बचाना चाहती हूं—तुम मेरी एक बात मानोगे ?

जसवन्त—अवश्य।

गोमती—मैं इस स्त्री की उस अत्याचारी से रक्षा करना चाहती हूं। तुम चित्र भले ही बनालो, तुम्हारे चले जाने के पीछे मैं इस स्त्री को सावधान करूंगी और अपने पिता द्वारा इसके पिता को। तुम हसीना के चित्र में कोई दोष उत्पन्न कर देना।

जसवन्त—मैं प्राण दे सकता हूं, परन्तु अपनी कला को बदनाम नहीं कर सकता—मेरे मरने के पीछे कोई भी यह नहीं कह सकेगा कि जसवन्त निकृष्ट चित्रकार था !

गोमती - ओह ! तुम जसवन्त हो !! स्त्रियां जब घरों के सामने उरेहना डालती हैं और भीतों पर चित्र बनाती हैं तब कह उठती हैं यह जसवन्ती कला है ! अच्छा, मैं तुम्हारे प्राण और तुम्हारी कला, दोनों, को बचाना चाहती हू, पर तुम चित्र की तैयारी के बाद फिर कभी यहां मत आना—कला को इस प्रकार दूषित मत करो।

जसवन्त—आपका चित्र ?

गोमती—उँह, चाहे जैसा बनाकर दे देना। मैं यहीं से लेलूंगी—पर क्या दो ही रुपये में ?

जसवन्त—अब कुछ भी नहीं लूंगा। (*कलम चलाते हुये*) बहुत पा गया।

गोमती—प्राण बचाने के बदले में ?

जसवन्त—प्राणों से भी बढ़कर कुछ और। अब मेरी कला को जो चमत्कार मिलेगा उसकी कोई भी बराबरी नहीं कर सकेगा, न इस देश का और न विलायतों का।

गोमती—हुं—(*फिर मकान को इधर उधर से देखती है*)

जसवन्त—मैं चाहता हू मेरे बनाये हुये चित्र आप कभी कभी देख सकों, मैं किसी प्रकार उनको आपके हाथों में पहुँचा सकूं।

गोमती—गोमती जसवन्त का पता लगा सकती है, परन्तु जसवन्त गोमती का पता शायद ही कभी लगा सकें। (*आहट लेती है*) कितनी कसर रह गई है ? बहुत समय तो लग गया !

(*हसीना आती है*)

हसीना—बन गई तुम्हारी तस्वीर ?

जसवन्त—(*गोमती की ओर देखते हुये*) करीब करीब बन गई। कोनियों को बनाकर, चित्रों को उसमें बिठलाऊंगी। रंगत, ओपनी, भालक सब एकाध दिन में कर लूंगी !

गोमती—इनका स्वर कैसा अजीब है बहिन ! ह !! ह !!! ह !!!! गाने और चीखने के बीच का। ह ! ह !! ह !!!

(जसवन्त नीचा सिर करके कलम चलाने लगता है)

जसवन्त—*(कलम चलाते चलाते)* भगवान ने जैसा दिया है—

हसीना—ठीक तो कहती है बिचारी।

गोमती—हां—बिचारी ! भगवान की दी हुई चीज़ को सुधारा भी जा सकता है, चित्रकरी जी।

जसवन्त—*(कलम चलाते चलाते हीं)* कोशिश करूंगी।

गोमती—ह ! ह !! ह !!!

हसीना—ह ! ह !! ह !!! क्यों हँस रही हो गोमती ?

गोमती—ओह ! इन्होंने इतना नचाया मुझको कि जिसकी हद नहीं। खड़े रहना पड़ा, झुकना पड़ा, तिरछे, आड़े टेढ़े ! परन्तु वाहरी चित्रकरी !!

(वे हँसती रहती हैं। जसवन्त कभी मुस्कराते हुये, कभी गम्भीरता के साथ उनको देखता हुआ कलम चलाता रहता है)

जसवन्त—अब मैं जाती हूं।

गोमती—*(उसके स्वर की नक़ल करके)* जी, बहुत अच्छा।

जसवन्त—*(अपना सामान समेट कर)* परसों बना लाऊंगी।

गोमती—*(उसके स्वर की नक़ल में)* ज़रूर। *(जसवन्त चला जाता है)*

गोमती—अब मैं भी जाती हूं। बहुत देर हो गई। जब चित्र बन कर आ जाय, बुलवा लेना। किवाड़ बन्द कर लो। ह ! ह !! ह !!!

(गोमती जाती है)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—फ़तेहपूर सीकरी। अभी फ़तेहपूर एक छोटा गाँव ही है। इधर उधर टौरियाँ, बीच में छोटे बड़े मैदान। एक ओर तालाब जिसके किनारे पेड़ों की झुरमुटें हैं। यहाँ से गाँव थोड़ी दूर है। गाँव से हटकर शेख़सलीम चिश्ती का आश्रम है। समय—शरद की सन्ध्या के उपरान्त।]

(बीरबल और रमज़ानी आते हैं)

बीरबल—यहीं ठीक रहेगा रमज़ानी साफ़। जगह है। फ़र्श क़ालीन बिछे हुये हैं। मशालों का इन्तज़ाम करलो।

रमज़ानी—बिछाइयों का इन्तिज़ाम तो हुज़ूर मैंने कई जगह कर रखा है। जौन सी पसन्द हो। बादशाह सलामत ने किसी ख़ास जगह के लिये नहीं फ़रमाया था।

बीरबल—बादशाह सलामत की मर्ज़ी को ठीक ठीक समझ पाना सहज नहीं है, पर यह जगह उनको अच्छी लगेगी। सलीम बाबा की

कुटी से काफ़ी दूर है। बादशाह सलामत उनकी कुटी के क़रीब कोई भी धमा-चौकड़ी नहीं करना चाहते हैं, और मलिका महारानी वहीं प्रसवघर में हैं।

रमज़ानी—बहुत दुश्वार है, हुज़ूर बहुत दुश्वार। बादशाहों की मर्ज़ी का पता लगाना तलवार की धार पर चलने के बराबर है।

बीरबल—ओ हो रमज़ानी! तुम तो अब दरबारी भाषा बोलने लगे हो! बहुत साफ़। गांव की बोली तो भूल ही गये होगे?

रमज़ानी—नहीं हुज़ूर। ऐसा कहीं हो सकता है? जब गांव को जाता हूं तब अपनी ही बोली बोलता हूं घर में।

बीरबल—क्यों न हो? यही एक ऐसा देश है जहां लोगों को अपने धर्म और अपनी भाषा के लिये भय या लाज के मारे सिर झुकाना पड़ता है।

रमज़ानी—हुज़ूर का इक़बाल बुलन्द हो, मैं समझा नहीं।

बीरबल—मेरा मतलब है—हमारे यहां किसी को भी बहुत समझदारी की नालायक़ी नहीं करनी चाहिये।

रमज़ानी—हुज़ूर के हज़ार पुत्र हों और नाती पोते दिन दूने रात चौगुने बढ़ें। अब समझ गया।

बीरबल—खूब समझे! सौ से हज़ार हुये और फिर लाखों!! सब एक साथ!!! यानी हिन्द में ही क्या सारे संसार में मेरे पुत्र और पोते वबा की तरह फैलकर सबको खतम कर देंगे और सिर्फ़ खुद रह जायंगे!!!!

रमज़ानी—ह! ह!! ह!!! सब बातन का दिल्लगी में कड़ोर घसीट ल्यावत ब्यार तुम्हार सुभाव आटै। ह! ह!! ह!!!

बीरबल—यह कुछ अक़ल की बात कही तुमने रमज़ानी।

रमज़ानी—हम अबकी ब्यार दसहरा दिवारी मा घर जाई तौ हमहूं लोगन का खूब हँसाई।

बीरबल—हां इसी में सार है। अब मशालें जलालो। मैं बादशाह सलामत को लिवा लाऊं। तानसेन का गाना तुम भी सुनना।

रमज़ानी—जो हुकुम।

(बीरबल जाता है, रमज़ानी रोशनी करता है। रोशनी हो जाने पर अकबर, बीरबल, तानसेन, जसवन्त, मुल्ला दोप्याज़ा, और साज वाले आते है। सब यथास्थान बैठ जाते हैं। एक ओर ओट लेकर रमज़ानी बैठ जाता है।)

अकबर—*(वैसे स्वर ऊँचा और पैना, परन्तु इस स्थान पर मुलायम)* उम्मेदों, अरमानों और झिझकों के बीच में मन झूल रहा है। आज तुम्हारी कारीगरी को देखना है, तानसेन।

तानसेन—जहाँपनाह, वह परमात्मा के हाथ में है। सूरदास का पद सुनाता हूं।

(तानसेन सूरदास का पद गाता है)

❀ पद ❀

मैया, मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसों कहत मोल को लीनों, तू जसुमति कब जायो॥
कहा कहौं यहि रिस के मारे, खेलन हौं नहिं जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तुमरो तात॥
गोरे नन्द जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब, सिखै देत बलबीर॥
तू मोही को मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै।
मोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति सुनि सुनि रीझै॥
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत।
सूरस्याम मो गोधन की सौं, हौं माता तू पूत॥

(अकबर आनन्द विभोर हो जाता है। ओट में बैठा हुआ रमज़ानी भी बेसमझी का सिर थोड़ा सा झुलाता है।)

अकबर—क्या बात है मियाँ तानसेन ! मैं तो बिलकुल हिल गया ! सूरदास की कविता और तुम्हारे गायन में पत्थर को भी पिघलाने की शक्ति है, मैं तो फिर आदमी ही ठहरा !

(मुल्ला दोप्याज़ा को हिलकियां आती हैं)

तानसेन—इनको संभालें जहाँपनाह ।

बीरबल—इनके कुंजड़े की दूकान दिवालिया हो गई है जहाँ से प्याज़ चुराकर लाया करते थे । गायन ने इनको अपनी बेबसी की याद दिलाई और ये रो पड़े !

मुल्ला दोप्याज़ा—जहाँपनाह, भाव का काम है, यह मनहूस विन्ध्याचली क्या जाने !

बीरबल—भाव या बेभाव एक समान है मुल्ला जी के लिये । बिना भाव के चाहे जिसका माल उठा लाये और बेभाव खा गये ! और गाने की समझ तो इनकी मौरूसी ही ठहरी, जहाँपनाह । अरब के रेगिस्तान की आंधियों की तानें मियाँ तानसेन की तानों से कहीं अधिक सुरीली और लम्बी ! उस रेगिस्तान के ऊँटों की बलबलाहट का ऐसा मिठास कि एक तानसेन तो क्या दस तानसेन भी गले से वह मिठास अदा नहीं कर सकते !! और फिर गधे तो वहाँ के मशहूर हैं ही जिनकी रेंक के मुक़ाबिले में बीन, रबाब, स्वरमंडल, सितार सब की झंकारें मात !!!

(शोर करते हुये कुछ लोग दौड़ते आते हैं)

वे लोग—जहाँपनाह, इनाम ! जहाँपनाह बधाई !! शहज़ादा ज़िन्दाबाद !!!

(अकबर खड़ा हो जाता है । सब लोग खड़े हो जाते हैं ।)

(अकबर ध्यानमग्न हो जाता है । सब उसी प्रकार थोड़ी देर चुप खड़े रहते हैं)

बीरबल—जहाँपनाह, फिर ध्यान ! मन की बाछें खिल खिलकर उछल रही हैं ! उम्मेदों, अरमानों और झिझकों का समन्वय हो गया है !!

अकबर—फ़ैज़ी कहां हैं ?

बीरबल—अपने पिता और भाई के पास धामोनी में।

अकबर—और सूरदास ?

बीरबल—अपने पिता के साथ आगरे में। इनमें से कोई भी खतरे में नहीं है।

अकबर—मेरे मित्रो, मैं आज यहाँ एक घोषणा करता हूं। बहुत जल्दी फ़तेहपुर सीकरी में ऐसी इमारतें बनवाई जावें जिनसे बीरबल की हँसी, सूरदास की कविता, तानसेन की तानें, जमवन्त की चित्रकारी और शेख सलीम चिश्ती की दुआ, सब एक साथ अनन्त काल तक प्रकट होती रहें। गोविन्ददास मैमार को दिल्ली से बुलालो और उसकी मदद के लिये बहाउद्दीन को।

मुल्ला दोप्याज़ा—आमीन।

बीरबल—इस मुल्ला बिचारे के लिये भी कुछ ? इमारतों का रङ्ग प्याज़ी हो ! बिलकुल प्याज़ी !!

अकबर—बहुत खूब। गहरा प्याज़ी: आसपास बेशुमार लाल पत्थर है ही यहां, सङ्गमरमर जयपुर से आ जायगा। सलीम बाबा की जो दरगाह बनेगी उसका दरवाज़ा इतना ऊँचा और गोलमय बनेगा जैसे बाबा हैं; गुम्मजें, पठानी गुम्मजों सरीखी तुचकी पिचकी और बैठी हुई नहीं बनेगीं बल्कि ऊँची, फैली हुईं और मुल्ला दोप्याज़ा के पेट की गुलाई के समान।

मुल्ला दोप्याज़ा—शाहन्शाह ज़िन्दाबाद ! शाहज़ादा ज़िन्दाबाद !!

अकबर—शाहज़ादे का नाम होगा सलीम, सलीम बाबा की दुआ का प्यारा रूप।

सब—शाहज़ादा सलीम ज़िन्दाबाद !

मुल्ला दोप्याज़ा—जहांपनाह, जहांपनाह, मैं नाचूंगा। इजाज़त बख़्शी जाय।

अकबर—ज़रूर।

बीरबल—घुँघरू मँगवा लीजिये न, तब तो शरद ऋतु में बहार का मज़ा आवेगा।

अकबर—यहां से गांव दूर है। बाबा सलीम की कुटिया में मलिका मेरे इन्तिज़ार में बेचैन होंगी। बाबा सलीम के चरण जल्दी चूमने हैं। लोग इनामों की बाट जोह रहे होंगे।

बीरबल—ठीक है, जहांपनाह, ठीक है। नाचने के समय मुल्ला के पेट का पानी ही इतना बोलेगा कि घुँघरू के स्वरों से बाज़ी ले जायगा।

जसवन्त—सरकार, मैं इस अवसर का चित्र बनाऊँगा। सामान मेरे पास है।

अकबर—ज़रूर। कहां गया रोशनी वाला ? मशालों को तेज़ करे।

(रमज़ानी झिझकता हुआ आता है)

अकबर—क्या यहीं कहीं छिपा बैठा था ? बेअदब ! खड़ा—रोशनी को बढ़ाओ।

(रमज़ानी डरते डरते मशालों को तेज़ करके चला जाता है)

मुल्ला दोप्याज़ा—*(झेंपते हुये)* जहाँपनाह देर हो जायगी। सलीम बाबा की कुटी पर भीड़ जमा हो रही होगी। मेरी तस्वीर ऐसी हालत में !

जसवन्त—कई खींच चुका हूं।

अकबर—नाचो भी, नखरे मत करो मुल्ला। तुम्हारा नाच देखे और नहीं जाने के हम यहां से।

मुल्ला दोप्याज़ा—जो···हु···कुम···जहाँ···पनाह···

(मुल्ला दोप्याज़ा नाचता है। जसवन्त चित्र बनाने लगता है)

बीरबल—*(थोड़ी देर नाच होने के उपरान्त)* जहाँपनाह, मुल्लाजी गाते भी हैं। इनके गले से तान निकली नहीं कि जान पड़ेगा जैसे पहाड़ लुहार बनकर धौंकनी चला रहा हो। बिलकुल कुम्भकर्ण मालूम पड़ेंगे।

(मुल्ला दोप्याज़ा हिन्सापूर्ण दृष्टि के साथ बीरबल की ओर देखता है)

अकबर—मुल्ला, एक तान, बस एक सतर। रुको मत नाच के साथ, नाच के साथ।

(मुल्ला विवश होकर एक सतर गाता है। अत्यन्त बेसुरा। नाचता भी है, परन्तु उसका उल्लास कम होगया है)

बीरबल—*(धीरे से अकबर से)* अब बस करें जहाँपनाह। मुल्ला अनमना हो गया है।

अकबर—अच्छा। मुल्ला शाबाश! इनाम पाओगे। अब यहां से सब चलो।

(वे सब चले जाते हैं। उनके चले जाने पर रमज़ानी और लल्ली आते हैं)

लल्ली—दूर से नाहीं देख सकत हते जो सब स्वांग तुम, सो पास ही दुबक के बैठ गये ?

रमज़ानी—राजा बीरबल ने कह दिया था।

लल्ली—तो अब चिन्ता काहे के लानें करत हो ? कौनउं गड़बड़ हुइहै तौ राजा साब बचा लैहैं। हमने हू दूर सें सब देख सुन लओ है; राजा साब की बहुत मानत है बादसाह।

रमजानी—ठीक है हो। हम कौन उई सार मुल्ला का पौंद काट डाला जो हमार गर्दन मारी जइ है ?

लल्ली—हां—अब ठीक बोले। ए, हियन बड़े बड़े महल बन हैं जो तानसेन की तानन के और जसवन्त की चित्रकारी के—और न जानें काहे काहे के—रूप बन जैहैं ! उनके आसपास गरीब लोगन की जो झुग्गियां उठती बैठतीं रैंहैं वे किनके रूप हुइहैं ?

रमजानी—(*मशालें बुझाता हुआ*) लल्ली भैयन, देखि हो, कितना मजूर किसान, कितना मनई उन महलन के उठावन माँ मरित है ! इतना बिगार लई जाही, इतना बेगार लई जाही कि सार महलवा कीयामत तलक गोवत रही !! (*मशालें बुझ जाने पर वे दोनों चले जाते हैं*)

दूसरा दृश्य

[स्थान—अन्तर्वेद के एक गांव के निकट का जङ्गल जो फ़तेहपूर सीकरी से दूर है। बीहड़ के मार्ग से अकबर और बीरबल आते हैं। वे दोनों देहातियों के वेश में हैं। समय—तीसरा पहर।]

अकबर—कहो बीरबल पैरों का क्या हाल है ?

बीरबल—जो जहाँपनाह के धर्म का—देखने में चलने वाला और भीतर से थका हुआ।

अकबर—और तुम्हारे विश्वासों को क्या कहूं ? बातें करते रहते हो नास्तिकों जैसी और पूजा करते हो नित्य घंटे भर सूर्य की। उजाले में आंखें बन्द और अँधियारे में खुली हुईं !

बीरबल—क्योंकि जहाँपनाह परमात्मा को कोई देख नहीं सकता, क्योंकि सूर्य संसार को सब भृद्धियां सिद्धियां देता है, क्योंकि सूर्य परमात्मा की शक्ति का चिन्ह है, क्योंकि जहाँपनाह की तरह सूर्य के भी पैर कभी नहीं थकते—

अकबर—अब लगे मुझको फुसलाने! अच्छा बीरबल, जो लोग तुमको दरबार में बाअदब, बामुलाहज़ा खड़े हुये देखते हैं वे क्या कभी कल्पना कर सकते हैं कि एकान्त में हम लोगों के बीच में कोई संकोच या तकल्लुफ़ नहीं रहता?

बीरबल—जहाँपनाह, जनता देखने में ही भोली भाली और अनजान मालूम पड़ती है, वैसे जनता की निगाह बड़ी बारीक और समझ बहुत पैनी होती है। दुनियाँ जानती है कि सबसे ज़्यादा कृपा और मुहब्बत हुज़ूर की मेरे ऊपर है—

अकबर—और तुम्हारे मसखरेपन को भी लोग जानते ही होंगे?

बीरबल—शायद जानते हों। यदि जीवन के कठोर और रुलाई लाने वाले पलों को मैं या कोई और थोड़ी सी हँसी देदे तो संसार की कुछ तो सेवा हो जायगी। शायद इसे नाते जानते हों। जहाँपनाह इस गाँव के मेले तमाशे को देखने और जनता को जाँचने के लिये चल रहे हैं, उसके मन का पता लग जायगा।

अकबर—मैं हमेशा जानने की उधेड़बुन में लगा रहता हूं। मालूम करता रहना चाहता हूं कि प्रजा मेरे कामों की बाबत क्या सोचती है, क्या राय देती है। इसके अलावा और भी दुनियां भर के सवाल हैं जो मनमें उठते रहते हैं, शायद उनका कहीं कोई जवाब मिल जाय।

बीरबल—जैसे हज़रत कभी कभी सोचते हैं कि अगर कुछ बच्चों को कहीं बिलकुल अकेला रख दिया जाय तो उनकी कौनसी भाषा होगी? कोई भाषा होगी भी या नहीं? या वे गूंगे रह जायंगे?

अकबर—बिलकुल, बिलकुल। अजी, इससे भी बढ़कर अजीब अजीब सवाल मनमें उठते हैं। खुदा को कैसे देखूं? असली मज़हब को कैसे समझूं? अख़्लियत क्या है? दुनियाँ भर का एक ही धर्म कैसे हो?

बीरबल—और जहाँपनाह सारी दुनियां को तलवार से जीता कैसे जाय ? और सारी दुनियां को एक ही ख्याल या खब्त से लीपा कैसे जाय ? आपने गोंडवाने की दुर्गावती को हरा दिया, चित्तोर के उदयसिंह को जीत लिया, रनथम्भोर का क़िला ले लिया, कालन्जर को हाथ कर लिया; जो कुछ बाक़ी बचा है जैसे चीन, लंका, पुर्तगाल वग़ैरह उनकी भी बारी किसी दिन आयगी; परन्तु, इन सब भूखण्डों में हज़रत किसी एक धर्म को भी देंगे, इसमें मुझको बड़ा सन्देह है।

अकबर—अगर किसी दिन दिया तो ?

बीरबल—तो सबसे पहला चेला बीरबल।

अकबर—उस धर्म का सबसे पहला सिद्धान्त होगा सूर्य की पूजा करना, और उसका सबसे पहला महन्त होगा कालन्जर का राजा।

बीरबल—कालन्जर का राजा कौन ?

अकबर—बीरबल। तुमको दिया वह राज्य मैंने।

बीरबल—जहाँपनाह को अनेक धन्यवाद। परन्तु वह महन्ती बहुत बोझिल बैठेगी मेरे लिये। चाहे राजा बनाइये, चाहे महन्त, रहूंगा साथ में छाया की तरह।

(नेपथ्य से शोर सुनाई पड़ता है जैसे दूर से आरहा हो)

अकबर—गाँव बहुत दूर नहीं है अब। (*बीरबल सोचने लगता है*) अब तुम कुछ ध्यान लगा रहे हो ! कोई खतरा, संकट, या कुछ अंडबंड, क्या पेश करोगे ?

बीरबल—मैं सोचता हूं हमलोगों को अपना वेश थोड़ा सा और बिगाड़ लेना चाहिये। अगर कहीं पहिचान लिये गये तो कुछ मुश्किल पड़ जायगी, क्योंकि घोड़े, सिपाही इत्यादि सब बहुत दूर हैं।

अकबर—डर क्या है ?

बीरबल—है जहाँपनाह। पहिचान लिये जाने पर मेला-तमाशा तितर-बितर हो जायगा, फिर आगे आप कोई जाँच-पड़ताल न कर पावेंगे। आपके दुश्मन भी हैं। शायद कोई कुछ कर बैठे।

अकबर—दुश्मनों से नहीं डरता मैं।

बीरबल—तो दोस्तों से डरिये। दोस्त आपको आपकी आँखों तक से पहिचान लेंगे और फिर हल्ला कर देंगे इसलिये जितना छिपाव कर सकें करलें।

अकबर—आँखें मैं कई तरह की बना सकता हूं। देखो। (*अकबर कई तरह से भेंड़ा बनकर देखता है*) अब भी कोई पहिचान लेगा?

बीरबल—धन्य है। पर आप कितनी देर इस प्रकार भेंड़ी भेंड़ी आँख बनाये रह सकते हैं?

अकबर—चाहे जितनी देर।

बीरबल—तभी आप इतने ज़बरदस्त शासक हैं। शासन वही कर सकता है जो नाटक, अभिनय बहुत अच्छा कर सकता हो।

अकबर—दुनियां ही एक नाटक है।

बीरबल—इसमें क्या सन्देह है? हरम की सैकड़ों-हज़ारों स्त्रियों के मनमें अलग अलग इस विश्वास को बिठलाये रखना कि उस अकेली, एक, से बढ़कर आप और किसी को भी नहीं चाहते होंगे; छोटे से छोटे और बड़े से बड़े के, हरएक के, मनमें इस आस्था को टिकाये रखना कि उससे बढ़कर आपका और कोई मित्र नहीं। जहाँपनाह, वे सब मूर्ख थे जो यह कह गये हैं कि संसार का आधार सत्य है। संसार झूठ पर टिका हुआ है। गृहस्थों, सन्यासियों, बच्चों और बुड्ढों—किसी को भी—देख लीजिये। शायद ही कहीं थोड़ा सा सत्य हो।

अकबर—और वह थोड़ा सा सत्य कहां है ?

बीरबल—शायद योगियों, किसानों और मज़दूरों के पास।

अकबर—शायद ! शायद। यह थोड़ा सा सत्य और बाक़ी झूठ नमालूम कहां और किस तरह बँटा हुआ है—यों कहो पहले ! (*नेपथ्य में बढ़ते हुये शोर को सुनकर*) हाँ तो वेश में थोड़ी सी अदला-बदली करके, चलो पहुँचें। गाँव पास आरहा है। (*दोनों जाते हैं*)

तीसरा दृश्य

[*स्थान—एक गांव से लगा हुआ खुला मैदान। मैदान में थोड़ी देर रामलीला होती है। कुम्भकर्ण और रावण मारे जाते हैं। रामलीला के पात्र चले जाते हैं। फिर दूसरे स्वांग की तैयारी होती है। इस स्वांग के लिये तख्त बिछा हुआ है। उसकी बगल में और आगे थोड़े से टूटे फूटे पीढ़े, दो टूटी हुई चारपाइयां जिनको ढकने के लिये छोटी छोटी सी धोतियां डाल दी गई हैं—पर चारपाइयां बहुत कम ढक पाई हैं। तख्त पर भी इसी तरह का ढांकन है। मोटे बिस्तर को लपेट कर एक बड़ा तकिया बनाया गया है जिसके सहारे अकबर की नकल करने वाला पात्र बैठा है। एक चारपाई पर गाँव का मुखिया बैठा है और दूसरी पर साहूकार के साथ गाँव का पटवारी। छोटे पीढ़ों पर बीरबल, मुल्ला दो प्याज़ा, तानसेन और जसवन्त का अभिनय करने वाले पात्र बैठे हैं। ये पात्र रंग बिरंगे चमकदार काग़ज़ों से बहुमूल्य वस्त्रों और गहनों के अभाव की पूर्ति कर रहे हैं। चारपाइयों को पीढ़ियों और तख्त से अलग करने के लिये दो बांस गड़े हुये हैं जिनके सहारे एक मैला पर्दा टंगा है। चारपाइयों के पीछे कुछ नर नारी, दर्शक, खड़े हैं। नारियां अपने बच्चों को लिये हैं। चारपाइयों के बीच में कुछ दर्शक बैठे हैं। काफी शोर हो रहा है। तख्त के दोनों ओर एक एक पहरेदार, जो बाहर से दिखलाई पड़ रहे हैं।]*

मुखिया—पर्दा खोलो जी, बहुत देर होगई। लोग अकुला रहे हैं।

(*पर्दे के पीछे से*) पल भर ठहरना मुखिया, मुल्ला दोप्याज़ा पेट पर डलिया को ज़रा ठीक तौर से कसले।

(*पर्दा हटा दिया जाता है। पात्र एक दूसरे का मुँह देखते हैं*)

साहूकार—कुछ बोलो जी, बोलो। अकबर के दरबार में सब चुप थोड़े ही बैठे रहते होंगे।

अकबर पात्र—उन गाने वालों को तो भेजो। पहले गाने वालों का गाना होगा, तब हमारी बातचीत होगी।

साहूकार—(*नेपथ्य की ओर मुँह करके*) कहाँ मर गये रे? जल्दी आओ।

(*नेपथ्य से*)—आये।

(*लँगोटियां लगाये, फटे कपड़े पहिने चार आदमी गाते हुये आते हैं, इन में से एक रमज़ानी है। उन्हीं के पीछे अकबर और बीरबल। वे भीड़ में मिलकर खड़े हो जाते हैं*)

❀ गीत ❀

कलजुग नहीं करजुग है ये इस हाथ दे उस हाथ दे,
धन से दे औ' तन से दे, अन्न से—कपड़ों से दे।
घर से दे, ऋण लेके दे, भिक्षा से दे, चोरी से दे,
कलजुग नहीं·······
खाँडपात न हो तो मिट्टी के ही बर्तनों को बेचकर
छप्पर से दे, टप्पर से दे, झोली से दे, खप्पर से दे,
इस कर को दे, उस कर को दे, मिटकर के दे, मरकर के दे।
कलजुग नहीं करजुग है ये इस हाथ दे, उस हाथ दे।

अकबर पात्र—बीरबल, पूछो ये लोग कौन हैं? क्यों हमारे आराम में खलल डालते हैं?

बीरबल पात्र—(*बैठे ही बैठे*) तुम कौन हो जी ? क्यों—

मुखिया—खड़े होकर बोल रे गनुआ ! दरबार की बेअदबी हो रही है ।

बीरबल पात्र—(*खड़े होकर*) क्यों शोरा मचा रहे हो ?

उन चार में से एक—हजूर ने जजिया माफ करने का हुकुम तो निकाल दिया, पर आमिल मन्सबदार अब भी वसूली करते चले जारहे हैं । ज़मीन के ऊपर कर बहुत बढ़ गये हैं । हमसे बड़ी सख्ती के साथ वसूल किये जाते हैं ।

अकबर पात्र—हम उनको बहुत बहुत सज़ा देंगे ।

एक—जिनको आप सजा देने का हुकम देंगे वे खुद अत्याचार करते हैं । वे कुछ नहीं करेंगे ।

अकबर पात्र—देखो, हमको बहुत गुस्सा आ जाता है, हमने अपने चाचा कामरां के लड़के तक को ग्वालियर के किले में मरवा दिया, चित्तौर का सफाया कर दिया, गोंडवाना, मालवा सबकी अक्किल ठिकाने से लगादी, भला आमिलों और मन्सबदारों की क्या चली ? जजिया बिलकुल बन्द कर दिया जायगा । तुम्हारे दूसरे कर भी माफ कर दिये जायँगे ।

दूसरा—सरकार, गाय हमारे देश की जान है । गाय, बैल, बछड़ों के मारे जाने से सब चौपट हुआ जारहा है ।

अकबर पात्र—ढोरों का मारा जाना कतई बन्द किया जाता है । जो कोई ढोर का वध करेगा उसकी गर्दन काट डाली जायगी ।

(*कुछ बच्चे रो पड़ते हैं, स्त्रियों में रोरा होता है*)

अकबर पात्र—कहा था कि बच्चों को न लाना खेल में । इतना हल्ला, चिल्ल-पुकार करती हैं कि जिसकी हद नहीं । चुप करो उन्हें ।

मुखिया—तुम अपना काम किये जाओ । (*स्त्रियों से*) कम से कम थोड़ी देर के लिये तो दया करो हमलोगों पर ।

अकबर पात्र—और कोई तकलीफ है तुमको ?

रमजानी—हां सरकार, यो पटवरिया सार उधैड़े खात है, मुला रिसवत खवावत खवावत हम तो फांक हुइ गइन। इहिका कौनउँ नरक माँ सरकार भेज देईं तो गाँव को चैन मिले।

अकबर पात्र—बुलाओ पटवारी को बीरबल।

(बीरबल पात्र भीड़ मे छिपे अकबर और बीरबल की ओर देख रहा है)

अकबर पात्र—अबे गनुआ कहाँ देख रहा है? हुकुम नहीं सुना?

बीरबल पात्र—उई—उई—हां क्या हुकुम दिया सरकार ने?

अकबर पात्र—पटवारी को बुलाओ।

बीरबल पात्र – कहाँ के पटवारी को सरकार?

अकबर पात्र—कहीं के भी एक पटवारी को बुला लो। यहाँ के पटवारी को नहीं। वह बहुत अच्छा आदमी है।

पटवारी—शाबाश।

मुखिया—बीच में मत बोलो, अभी तो बहुत मज़ा आने को है।

बीरबल पात्र—*(पहरेदार से)* जाओ एक पटवारी को पकड़ लाओ। *(वह जाता है)*

(एक गुलाम आता है)

गुलाम—हुजूर के शहज़ादा हुआ है! शहज़ादा हुआ है!!

अकबर पात्र—ओह! सब लोग खुशी मनाओ। हम ताड़ी पियेंगे, सबको ताड़ी पिलायेंगे। गाना नाचना होगा। तानसेन तुम गाओ।

(तानसेन पात्र थोड़ी देर गाता है—सुरा बेसुरा)

अकबर पात्र—तुम्हारा गाना अच्छा रहा। अब नाचने वालियों को बुलाओ बीरबल।

(बीरबल पात्र पार्श्व में खड़े हुये स्त्री--वेश धारी पुरुषों की ओर देखता है)

बीरबल पात्र—चले आओ जी जल्दी, देखते क्या हो ?

(स्त्री--वेशधारी दो पुरुष घुँघरू पहिने नृत्य करते हुये आते हैं। नृत्य करने के समय एक का मुँह खुल जाता है। उसकी बड़ी बड़ी मूछें हैं। उन मूछों को देखकर अकबर हँस पड़ता है। लोगों का ध्यान उसकी ओर जाता है। वह भेंड़ा बन जाता है। नाचने वाला उसकी ओर देखता है)

मुखिया—नाचे जाओ। कोई बाहर का बेहूदा है। *(अकबर से)* हँस मत बे, बीच में।

बीरबल—(अकबर से) सावधानी से काम करे। बेखबर मत होजा !!

नाचने वाले—(नृत्य की समाप्ति पर) सरकार, इनाम।

अकबर पात्र—अच्छा, हमने एक को दिल्ली जागीर में लगादी, और दूसरी को आगरा।

मुखिया—(हंसता हुआ) फिर सरकार कहाँ रहेंगे घूरे पर ?—करे जाओ, काम करे जाओ।

(दूसरा नाचने वाला हँस पड़ता है और मुँह खोल लेता है इसके दाढ़ी है। दर्शक हंस पड़ते हैं)

अकबर पात्र—अबे नालायक मुंह ढकले। क्यों हँसी करवाता है ?

(वह मुँह ढक लेता। दोनों नाचने वाले जाते हैं। पटवारी पहरेदार के साथ आता है)

पहरेदार—सरकार, यू बड़ा दयार लगाइस। हम घसीट कै ल्यावा हन।

अकबर पात्र—बहुत अच्छा किया। पटवारी हम तुमको हुकुम देते हैं कि तुम घर पर बैठ कर हिसाब किताब मत किया करो। सारी आफ़तों की जड़ तुम्हारा घर है।

पटवारी—(*नीचे ऊपर देखकर*) तो सरकार कहाँ जाऊँ ? कहाँ रहूँ ? न पृथिवी पर जगह, न स्वर्ग में !

अकबर पात्र—हम तुम्हारे लिये एक ठौर बनवाये देते हैं। दिन भर वहीं रहा करो। नज्ञाफोगी देकर जाया करो वहाँ से।

पटवारी—जो हुकुम गरीपरवर।

अकबर पात्र—बीरबल, एक चौखटा खड़ा करवाओ। पटवारी उस पर बैठा रहकर हिसाब किया करेगा। अभी तैयार करवाओ। पटवारी उस, पर इसी समय से बैठो। अभी से अभ्यास करो।

बीरबल पात्र—बहुत अच्छा सरकार। (*एक चौखटा तैयार खड़ा है। बीरबल पात्र एक पीढ़े को उस पर रख देता है*) हो गया सरकार, तैयार।

(*पटवारी उस पर जा बैठता है*)

अकबर पात्र—हिसाब लगाओ पटवारी। छः सौ पचीस का पाँच गुना करो। और तुम इसकी तस्वीर बनाओ जसवन्त।

जसवन्त पात्र—बहुत अच्छा सरकार।

(*वह चित्र बनाने का स्वांग करता है*)

पटवारी—पचंपचीस, हाथ लगे दो—

रमजानी—ओ सरकार, यू पटवरिया ने बैठते ही खन हाथ माँ दो लगा लिहिन न दो ! पचंपचीस हाथ लागी दो ! इहि क्यार खाना-तलासी लीन जाय, हुजूर।

(पटवारी की खाना तलाशी ली जाती है। उसकी अंटी में से दो रुपये निकलते हैं)

रमज़ानी—हम कहा रहा न। दुई रुपैया खसोट लिया यू गिनती गिनत गिनत माँ !

(अकबर को फिर हँसी आजाती है। रमज़ानी उसकी ओर देखता है। अकबर भेंड़ी आंख करता है। बीरबल उसके पीछे हो जाता है। रमज़ानी पहिचान नहीं पाता)

अकबर पात्र—अच्छा पटवारी को कैद में डाल दो।

पटवारी—जहाँपनाह, हम तो ये दो रुपये शाहज़ादे की न्योछावर के लिये घर से लाये थे !

अकबर पात्र—अच्छा ! तब यह बात ही और है। पटवारी को छोड़ दो। यह अपना हिसाब घर पर बैठकर ही किया करेंगे। बुरे आदमी नहीं हैं।

(पटवारी को छुटकारा मिल जाता है। वह चला जाता है)

अकबर पात्र—अच्छा, अब केवल हम, बीरबल और मुल्ला दोप्याज़ा दरबार में रहेंगे। बाक़ी सब लोग जाओ।

(तानसेन, जसवन्त और पहरेदार, पटवारी पात्र जाते हैं। मुल्ला दो प्याज़ा सो रहा है। रमज़ानी उसको देखता हुआ रह जाता है, उसके तीनों साथी चले जाते हैं)

रमज़ानी—यो अकबरा दिन दिन रात रात दरबार में बैठकै काम करत्यो; जो मुल्ला दुप्याजा इहि भाँति सो जाई तो सार का गर्दन कटकै फिक जाई।

अकबर पात्र—चुप भी रहो। अरे ओ मुल्ला दुप्याज़ा, तू दरबार में सोता है ?

(वह चौंक पड़ता है)

बीरबल पात्र—इसके पुरखे लड़ाई में मारे गये, यह भीख मांगता हुआ, लूटता खसोटता हुआ हिन्द में आ गया। अभी अपने पुरखों के पास अपनी कहानी सुनाने चला गया था।

मुल्ला दोप्याज़ा पात्र—ये बीरबलवा मेरी बहुत बेइज़्ज़ती किया करता है। मैं किसी दिन इसको मरवा डालूँगा। तेरे पुरखे नरक में पड़े हैं, उनको देखने गया था।

बीरबल पात्र—रोकलेरे अकबरा, रोकले इसको, नहीं तो मैं इसका पेट फोड़ डालूँगा।

अकबर पात्र—जाने भी दो, हम तुमको बीरबल, गुजरात जागीर में लगाते हैं।

मुल्ला दोप्याज़ा पात्र—ठीक है, अकबरा ठीक है। भेजदे इसको गुजरात। वहाँ के मिर्ज़ा सूबेदार तेरी ही परवाह नहीं करते, इसको तो बहुत जल्दी जहन्नुम में भेज देंगे।

बीरबल पात्र—लूँगा जागीर तो ग्वालियर, नरवर या कालञ्जर की। मैं गुजरात क्यों जाने चला?

अकबर पात्र—अच्छा, अच्छा—यही सही।

मुल्ला दोप्याज़ा पात्र—ओ अल्लाह! ओ अल्लाह!! अब मेरे लिये क्या बचा? मैं रोज़ दस सेर प्याज़ और तीस सेर मांस कहाँ से पाऊँगा? आज़ारे बीरबलवा, मेरे पेट की ठोकर से बच जाय तो ले लेना जागीर।

बीरबल पात्र—ठहरो, ठहरो। अकबरा तुमको पाँच सौ औरतों का हरम लगा देगा जागीर में। तब तो मन में कसक नहीं रहेगी तुम्हारे?

मुल्ला दोप्याज़ा पात्र—अरे ये अकबरा औरतों का खुद इतना भूखा है कि हज़ारों वाले हरम में दाखिल होने के लिये हज़ार आठसौ

तो उम्मेदवारी के ही लिये खड़ी हैं। यह क्या लगावेगा औरतों को जागीर में !

रमज़ानी—यू ठीक कहा भैयन तुम।

मुल्ला दोप्याज़ा पात्र—हमको जागीर में एक हजार बेगारी दे दिये जायें तो हम अपनी बहुत सी ज़िमीन उनसे जुतवावें।

अकबर पात्र—पर बेगारी तो फतेहपूर सीकरी की इमारतों के बनाने में ही बहुतसे मर गये !

अकबर—ओफ़ !

(रमज़ानी अकबर की ओर देखता है। वह आँख भेंड़ी कर लेता है। बीरबल उसके पीछे छिपने की कोशिश करता है, परन्तु रमज़ानी उसको देख लेता है)

रमजानी—उई ! उई !! अरे रे रे !!!

मुखिया—क्या हो गया ?

(संध्या हो रही है। अकबर और बीरबल खिसक जाते हैं)

रमज़ानी—ये दून कौन रहा ?

मुखिया—कौन थे, देखो तो। कौन थे रमज़ानी ?

रमज़ानी—इक राजा बीरबल सरीख लगत रहा और दूसरा, दूसरा—नाहीं, उहिका आँख तो भेंडी रहा।

बीरबल पात्र—आँख तो दोनों का भिंडी रहा।

मुखिया—जाने भी दो। होंगे कोई। यहां बादशाह और बीरबल कहां से आये ? अकबर भगवान का अवतार हैं। राजा बीरबल बड़े दानी हैं। कहो सब लोग इसी तरह। चिल्लाकर कहो।

सब—अकबर भगवान के अवतार हैं ! राजा बीरबल बड़े दानी हैं !!

मुखिया—कहो दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा।

सब—दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा !

मुखिया—(*धीरे से*) अब सब लोग अपने अपने घरों को जाओ। जल्दी से चेहरे धो-धाकर कपड़े बदल डालो। रङ्गशाला को बदल दो। कोई बात रही भी होगी, तो अब कोई कुछ नहीं कहेगा, क्योंकि जयजयकार तो कर दिया।

(*वे सब जाते हैं*)

चौथा दृश्य

[स्थान—उसी गाँव के निकट का जङ्गल। बीहड़ के मार्ग से अकबर और बीरबल लौट रहे हैं। समय—संध्या के उपरान्त।]

बीरबल—कोई पीछा नहीं करेगा। बहुत बचे। जहांपनाह की ओफ़ ने पकड़वा दिया होता आज !

अकबर—यह न कहोगे कि मेरी आँख की करामात ने लगातार बचाया। मगर ओफ़ ! आगे देहातियों को कभी भोलाभाला न कहूंगा। कितने चालाक और कितनी पैनी सूझ के होते हैं ये !

बीरबल—जहांपनाह—

अकबर—अकेले में जहांपनाह मत कहा करो—सीधी बात करो। वह गांव वाला बीरबल तो अकबरा कहता था।

बीरबल—हमलोग अपनी चालाकियों को मकड़जाले से ढांकते हैं और ये मोटे गाढ़े की चादर से। वे अपने भोलेभाले ढांकन से ही तो बचा पाते हैं अपने को; हमलोग उनको समझने में हमेशा धोखा खाते रहते हैं।

अकबर—बातें बड़े भद्दे और बेहूदे तौर से कहीं। इनको पता कहां से लगा ? उस रमज़ानी ने बतलाई होंगी।

बीरबल—हर गांव में दो-दो चार-चार रमज़ानी निकलेंगे। हर गांव को छोटा सा आगरा और फ़तेहपुर सीकरी समझिये।

अकबर—हरम वाली बात रमज़ानी ने ही बतलाई होगी। कितना बेअदब, ओफ!

बीरबल—उसने सत्य की ज़्यादा कन्जूसी नहीं की। परन्तु आपकी इस कीर्ति से तो आपको बहुत लाभ है—पांच हज़ार शेरनियों को जो एक-दूसरे को फाड़ खाने से बचाये रहे, उन्हें खेल खिलाते खिलाते भी अपना अङ्ग भङ्ग न होने दें, उसके लिये करोड़ों शहरातियों और देहातियों को क़ाबू में रखना क्या मुश्किल है—

अकबर—यह गुस्ताख़ी है—

बीरबल—तो अब सचाई को खर्च नहीं किया करूँगा।

अकबर—नहीं मेरे भाई, मेरी कमज़ोरी को माफ़ करो। तुम्हारी खरी-खोटी मुझको सूरदास की भी कविता से अच्छी लगती हैं। तुमने ठीक कहा, हरम को क़ाबू में रखना दुनियां को क़ाबू में रखने का सबक़ सिखलाता है। किताबें और पढ़ना दिमाग़ को चुन लेते हैं। मैंने आँखों से नहीं, कानों से पढ़ा है, इसलिये मुझमें हर तरह की ताक़त है। हरम को क़ाबू में रख सकता हूं।

बीरबल—अति से अति ही उत्पन्न होती है।

अकबर—तुम कुछ गम्भीर हो गये हो!

बीरबल—विचार ठोकर खाकर टुकड़े टुकड़े हो गया था। अब ठीक हूं।

अकबर—आगे कभी ऐसे खिन्न न होना। उस मेले की बात करो। जिज़िया उठा देने से हिन्दू जनता बहुत खुश है, जो कुछ कसर ये बदमाश सूबेदार और मन्सबदार लगा रहे हैं, उसको मिटाकर रहूंगा।

बीरबल—हां जहांप—मैं कहता हूं कुछ मन्सबदारों और कठमुल्लों का काला मुँह कर दीजिये तो पूरी शान्ति हो जायगी। मन्दिरों के तोड़ने फोड़ने और जज़िया ने हमेशा हिन्दुओं को बादशाहत से अपने को अलग समझने के लिये मजबूर किया।

अकबर—मैं इस तरह के मन्सबदारों और मुल्लों को काबुल कन्दहार भेजूंगा और उनके बदले में घोड़े और खच्चर मँगवाऊँगा जो ज़्यादा काम के होंगे। क्योंकि बुरे घोड़े और खच्चर दाँत से काट सकते हैं, पर क़ाबू में लाये जा सकते हैं, और ये ज़बान से काटते हैं जिसका कोई इलाज नहीं। इसी ज़हर ने हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को एक नहीं होने दिया।

बीरबल—जहाँपनाह—मैंने कहा भाईसाहब, बड़ा ही मुश्किल काम है। हिन्दुओं की संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है, मुसलमान जिस दिन उसको अपना समझने लगेंगे और उसको अपनालेंगे उस दिन हिन्दू और मुसलमानों के दिल एक होंगे। फिर कोई फ़क़ीर या मुल्ला कुछ नहीं कर सकेगा।

अकबर—लाल कलावन्त और सूरदास से मैंने हिन्दी में कमाल हासिल कर लिया है सो तुम जानते ही हो,—सब मुसलमानों को सीखनी चाहिये—पर भाई संस्कृत ज़रा मुश्किल है। मैंने अब्दुल रहीम खानखाना को संस्कृत की तालीम दिलवाई है। उसने सीखी भी खूब है, मगर ये सब तुर्क, तूरानी और ईरानी संस्कृत को कैसे सीख सकेंगे?

बीरबल—संस्कृत और संस्कृति में फरक़ है जनाब! संस्कृत भाषा है; पुराने ज़माने का जो कुछ ज़्यादा से ज़्यादा खूबसूरत है, रहन-सहन, ललित कलायें, इतिहास, दया, विरोधी की बात का समझना इत्यादि, इन सबका, इकट्ठा एक नाम है संस्कृति।

अकबर—अब कभी नहीं भूलूंगा।

(अकबर आँखें मूँद कर चलने लगता है)

बीरबल—बीहड़ के इस मार्ग पर आँख मूँद कर ध्यान करते हुये चलने से सिवाय आपके और किसी को तो खतरे का सामना करना नहीं पड़ेगा।

अकबर—मैंने निश्चय किया है, सारे देश को जीत कर, बागियों को खतम करके, सब पर इसी संस्कृति का रंग चढ़ाऊँगा। इस मेले में नक़ल करने वाले ने ठीक कहा था,—अब गुजरात के मिर्ज़ों का सिर कुचलना पड़ेगा, फ़ौरन।

बीरबल—बिलकुल ठीक, क्योंकि पृथिवी प्राप्ति की इच्छा की सीमा है स्त्रियाँ, और, स्त्रियों की प्राप्ति की सीमा है पृथिवी का वश में करना। पर अभी मेवाड़ भी तो है।

अकबर—चित्तौड़ का इतना बड़ा क़िला तो हाथ में आगया—

बीरबल—परन्तु अति ने अति को उत्पन्न कर दिया। आपकी बड़ी चित्तौड़ विजय ने बड़े राणाप्रताप को उत्पन्न कर दिया है।

अकबर—लेकिन मैं जयमल और पत्ता की हाथी पर सवार मूर्तियाँ बनवाऊँगा जो आगरे के क़िले पर ऐसी जगह रहेंगी जहाँ क़िले में आने वाले हर आदमी को प्रणाम करना पड़े। मैं चित्तौड़ का प्रायश्चित करूँगा; तब तो राणाप्रताप छोटा हो जायगा।

बीरबल—पटवारी नज़र न्योछावर लाकर आपके प्रायश्चित की मनोती कर लेगा।

अकबर—खूब याद दिलाया! नक़ल में उन देहातियों ने अपना यक़ीन साफ़ ज़ाहिर किया है—वे समझते हैं बादशाह तक रिश्वतखोर है!! मैं रिश्वतखोरी को बन्द करूंगा। जागीरों को मौरूसी नहीं रखूंगा,—यानी सिवाय तुम्हारे कालन्जर के,—जागीरदार के मरने के बाद उसके रुपये पैसे का हिसाब लिया जाया करेगा, और सारा फ़ालतू रुपया ज़ब्त कर लिया जाया करेगा।

बीरबल—सुन्दर उपाय है खज़ाने में रुपया बढ़ाने का, पर यदि जागीरदारों में रत्ती भर भी अक़्ल हुई तो वे अपनी ज़िन्दगी में ही सब फूक फाँककर बराबर कर जायंगे और पटवारी दो रुपये की जगह चार रुपये नज़र भेंट में चढ़ाया करेगा।

अकबर—ओफ़! पटवारी !! ह !!! ह !!!! ह !!!!! ह !!!!!!

बीरबल—आप अवतार हैं! सब कुछ कर सकते हैं !! चाहे जो कुछ अटपटा करें आपको सब शोभा देगा। आपके सामने सब छोटे होते चले जायंगे।

अकबर—बात कुछ ज़्यादा ग़लत भी नहीं। मैं अवतार न सही, परन्तु बादशाह या राजा एक तरह का अवतार ही तो होता है, परमात्मा का बहुत बड़ा अंश। आखीर में उन देहातियों ने ठीक ही कहा था। उसमें सचाई थी। अवतार हर एक युग में हो सकता है। तुमतो ब्राह्मण हो। जानते होगे।

बीरबल—जी हां—जिस युग में ब्राह्मणों के भरण पोषण की ज़रूरत बढ़ गई, उसी में अवतार हो गया; इस समय यह ब्राह्मण बहुत भूखा है।

अकबर—अरे भाई, न हुआ मुल्ला दोप्याजा साथ में—अपनी नक़ल को देखकर आत्मघात कर डालता। पेट पर फटी डलिया कसे था जो दिखलाई पड़ रही थी। ह! ह !! ह !!!

बीरबल—हां वह मुल्ला दोप्याज़ा। हाँ—हूं—ह! ह !! और तानसेन होते तो?

अकबर—तो वे सीधे स्वर्ग चले जाने की तैयारी कर डालते। ओफ़ कितना भद्दा था वह!

बीरबल—और वह जो अकबर बना था! ह! ह !! ह !!!

अकबर—और वह बीरबल! ह! ह !! ह !!!

(दोनों हँसते हुये जाते हैं)

पांचवां दृश्य

[स्थान—गुजरात में सूरत के निकट एक हरे भरे स्थान पर पुराने महल के भीतर बारहदरी। समय—रात्रि। अकबर के आमोद-प्रमोद के दरबार का संयोजन। कुछ दरबारी जमा हैं। एक दरबारी के साथ मुल्ला दोप्याज़ा आता है और इधर उधर देख कर आगे एक कोने में खड़ा हो जाता है।]

मुल्ला दोप्याज़ा—ज़रा ठहरो भी, अभी जहाँपनाह के आने में देर है।

दरबारी—तुम्हारी बातें खतम थोड़े ही होती हैं। लम्बी बातचीत का मौक़ा नहीं है।

मुल्ला दोप्याज़ा—लम्बी बातचीत न सही, छोटी सी का तो है। सुनो मतलबे की है। इधर आओ।

(वे दोनों ज़रा और बढ़ जाते हैं)

मुल्ला दोप्याज़ा—शराब पीनी पड़ेगी आज यहां बेहद।

दरबारी—कोई नई बात नहीं। मैं कह दूंगा भंग पी आया हूं। बीरबल इसी तरह बच निकलता है। मैं भी बच जाऊँगा। अपनी तुम जानो। तुमको कोई खास परहेज तो है नहीं?

मुल्ला दोप्याज़ा—मुझको बीरबल और भंग दोनों से परहेज़ है। जी चाहता है मार डालूं और मर जाऊं। बीरबल ने बादशाह को एक बड़े मनहूस इरादे पर चढ़ा दिया है। आज ही खबर मिली है। बादशाह नशे में कुछ बके और मारने मरने की नौबत आई।

दरबारी—ऐं! खैर तो है!! क्या बात है मुल्ला साहब?

मुल्ला दोप्याज़ा—मेरी एक भतीजी दिल्ली में है। उसकी शादी हो चुकी है। बादशाह की नीयत उसपर जापड़ी है। वे कुछ ज़बरदस्ती

करना चाहते हैं। चाहते हैं मेरा दामाद तलाक़ देदे। जसवन्त से कोई तस्वीर बनवाई गई है। जसवन्त इसी वजह से साथ नहीं लाया गया है, दिल्ली में छोड़ दिया गया—हालांकि बसावन, जगन्नाथ, सांवलदास, ताराचन्द वगैरह को लाया गया है।

दरबारी—बीरबल की लड़की या भतीजी भी तो दिल्ली में है, जो बहुत खूबसूरत भी है। मौक़ा पाते ही उसका ज़िकिर छेड़ देना। बादशाह को औरतों की बेहद भूख है ही, काटे से कांटा लड़ जायगा और बीरबल तुम्हारे ज़ेर हो जायगा।

मुल्ला दोप्याज़ा—खूब बतलाया! मैं सकुच के मारे दिन में ज़िकिर न कर सका, मगर कलेजा मुँह तक आगया है, इसलिये कहना पड़ा। अब जी हलका हो गया है। ऐसा वार करूँगा ऐसा, कि हां। उसका नाम मालूम है?

दरबारी—उसका नाम गोमती है।

(मुल्ला नाम याद करता है। गायिकायें अपने दल के साथ आकर एक कोने में खड़ी हो जाती हैं)

मुल्ला दोप्याज़ा—बाबा सलीमशाह चिश्ती के मर जाने के बाद से बादशाह में बहुत फ़र्क आगया है।

दरबारी—अब वे बीरबल को और भी ज़्यादा मानने लगे हैं, हमलोगों की अब और भी कुछ परवाह नहीं रही। दीन खतरे में है। ईराक़ियों, तूरानियों वग़ैरह की गोली गड्ढे में। कुछ करना पड़ेगा मुल्ला साहब।

मुल्ला दोप्याज़ा—जी हाँ, वह भी देखा जायगा—मुल्लों, आलिमों, मीरों और अमीरों को मिलकर फ़रियाद पेश करनी पड़ेगी। अभी तो सवाल अपनी इज़्ज़त और जान का है। आपका ईमान भी खतरे में है।

दरबारी—कैसे ? (*वह दरबार में आये हुये लोगों पर एक दृष्टि डालता है। वे सब परस्पर धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। मुल्ला और दरबारी थोड़ा सा और कोने में हट जाते हैं।*)

मुल्ला दोप्याज़ा—आप से महाभारत का तर्जुमा फ़ारसी में करवाया जायगा।

दरबारी—मुझसे महाभारत का तर्जुमा फ़ारसी में ! ग़ज़ब हो जायगा। आयुर्वेद और ज्योतिष की किताबों के तर्जुमे तक को ग़नीमत थी, लेकिन महाभारत का तर्जुमा !

मुल्ला दोप्याज़ा—मुझको एक तरकीब सूझी है—जब से चित्तौर का साका हुआ हिन्द भर में साढ़े चौहत्तर का चलन हो गया है। किसी भी काम के मना करने के लिये साढ़े चौहत्तर जादू का काम करता है। एक एक तख्ती पर हिन्दी में साढ़े चौहत्तर लिखकर चोग़े के नीचे गले से टांग लें। नया इलाज है। बच जायँगे। बादशाह खुश भी होंगे।

दरबारी—लेकिन हिन्दी में लिखकर ! मगर खैर कोई बात नहीं, जान बड़ी चीज़ है।

मुल्ला दोप्याज़ा—चलो, जल्दी से कर डालें। बादशाह आते ही होंगे। देवी के क़हर से बचने के लिये कुछ मसखरापन करके आऊँगा।

(*एक ओर से दोनों जाते हैं। नेपथ्य में शब्द होता है—'बाअदब, बाक़ायदा, होशियार ! दूसरी ओर से आगे अकबर और पीछे बीरबल आते हैं। वे दोनों मूल्यवान वस्त्रालंकारों में हैं। अकबर तलवार और कटार तथा बीरबल कटार बांधे है। दोनों उपयुक्त स्थानों पर पास पास बैठ जाते हैं*)

अकबर—(*गायिकाओं की ओर देखकर*) हूं—शुरू हो।

(*गायिकायें गाने नाचने लगती हैं। अकबर और दरबारी थोड़ी थोड़ी शराब पीने लगते हैं। बीरबल नहीं पीता*)

❀ गीत ❀

गावैं गुनी गनिका गन्धर्व औ,
सारद सेस सबै गुन गावैं ।
नाम अनन्त गनन्त गनेस ज्यौं,
ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावैं ॥
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध,
निरन्तर जाहि समाधि लगावैं ।
ताहि अहीर की छोहरियाँ,
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ॥

(गायन की समाप्ति के पहले मुल्ला विदूषक के वेश में आकर एक ओर बैठ जाता है । उसके साथ उसका संगी दरबारी भी बैठ जाता है । दरबारी उसकी विचित्र वेशभूषा को देख कर हँसी दबाने का प्रयत्न करते हैं । गायन की समाप्ति पर गायिकायें अकबर के संकेत पर साजवालों के साथ चली जाती हैं)

अकबर—तानसेन के और इनके गाने में कितना बड़ा अन्तर है ! तानसेन को आगरे में न छोड़कर साथ ले आये होते तो कितना अच्छा होता !

बीरबल—जहाँपनाह, गुजरात और आगे चलकर चित्तौड़ की, लड़ाई में, तानसेन की गुज़र कैसे होती ? तान या तलवार—कौन बाज़ी लेती ?

अकबर—सब हो जाता—इसी गीत को तानसेन के कण्ठ की रसायन कुछ का कुछ कर देती ।

(मुल्ला बार बार अपने को प्रदर्शित करने का प्रयास करता है)

बीरबल—कवि का ओज, रस सुहावनापन मुल्ला की इस हुलिया में कैसे बैठेंगे, जहाँपनाह ?

(अकबर एक प्याला ढालता है)

अकबर—जैसे गधे के कानों में सोने के कुण्डल। न हुआ जसवन्त यहाँ। वह इनकी पूरी शिब्बी काग़ज़ पर ज्यों की त्यों उतार देता।

बीरबल—बसावन चित्रकार तो है, जहाँपनाह।

अकबर—जैसे हिन्द में इधर हज़ार साल से तानसेन जैसा गवैया पैदा नहीं हुआ वैसे ही जसवन्त सरीखा चित्रकार हिन्द में तो क्या दुनियां भर में कभी नहीं हुआ। वह आजकल दिल्ली में है।

(मुल्ला और उसका साथी दरबारी सहसा एक दूसरे की ओर देखने लगते हैं)

बीरबल—एक से एक बढ़कर, अनोखे कलाकार जहाँपनाह के शासनकाल में ही तो हो रहे हैं। मिर्ज़ा रहीम को जहाँपनाह ने सोलह साल की आयु में ही, सेनानायक और कवि बना दिया!

अकबर—*(बीरबल की खुशामद पर ध्यान न देकर)* मुल्ला, तुम्हारे खानदान में तुम्हारे सिवाय बाक़ी सब खूबसूरत हैं। तुम्हारी कमी को उनकी खूबसूरती पूरा करती है।

मुल्ला दोप्याज़ा—*(गर्व के पास आतुरता के साथ हाथ को फेरकर)* जहाँपनाह, ठीक यही हाल बीरबल का है। तलाश करने से पता लग जायगा।

बीरबल—जाने समझे की छानबीन क्या? तलाश तो पर्दे की तहों की करनी पड़ती है।

(नेपथ्य में दूरी पर सुरीले कण्ठ में कविता पाठ सुनाई पड़ता है)

मुल्ला दोप्याज़ा—जहाँपनाह कवि और शायर लोग इकट्ठे हुये हैं। अपना अपना करतब सुनना चाहते हैं।

बीरबल—समय तो अच्छा ढूंढ़ा उन्होंने अपनी कविता-कौमुदी को छिटकाने का।

अकबर—ये लोग समय कुसमय कुछ भी नहीं देखते। सिर्फ़ गलेबाज़ी, वाह वाह और इनाम से मतलब। बातें इतनी बेतुकी कि ठिकाना नहीं। लम्बी इतनी कि शैतान की आँत को मात करें! पहाड़ों पर लिखने के लिये कहा जाय तो मेरे सिर पर; पेड़ों के लिये कहा जाय तो मेरे बालों पर लिख डालेंगे!! चाँदनी से उछलकर किसी सुन्दर या सुन्दरी के चेहरे पर, नदी के पड़ोस में भी न जाकर किसी स्त्री की आँखों की एक बूँद पानी पर जा बैठेंगे!!! बुलबुल और गुलाब का तो इनलोगों ने कचूमर ही निकाल दिया है। एक बार इन्होंने अपनी चीख शुरू की नहीं कि सुनने वाला चाहे घबरा कर जान छोड़ बैठे, मगर इनकी गलेबाज़ी खतम न होगी। गुजरात का देश खुद एक बड़ी कविता है,—घनी हरियाली, साफ़ सुन्दर पानी, ठंडी, मीनी खुशगवार हवा और सलोने नर-नारी। ये अपनी कविता आगरा चलकर सुनावें, यानी जब मैं लौटकर पहुँचूँ। गुजरात में नहीं सुनना चाहता।

(अकबर एक प्याला और पीता है)

बीरबल—जहाँपनाह, काग़ज़ के चिटके पर एक बढ़िया कविता लिखी आई है।

अकबर—कहाँ से? कवि कौन है? चिटके पर कविता लिख भेजने की अजीब सूझ इस गुजरात देश के किसी कवि की उमंग होगी? मैं गुजरात में अपनी राजधानी बनाना चाहता हूँ। यहीं दूसरा फतेहपुर सीकरी खड़ा किया जाय तो कैसा रहेगा?

बीरबल—हाँ जहाँपनाह। इतिहास के लिये कोई नई बात न होगी। मुहम्मद तुग़लक ने दौलताबाद को दो दिन में ही बसा डालने की ठानी थी! और अभी फ़तेहपुर सीकरी अधूरा भी है।

(अकबर हँस पड़ता है)

अकबर—तुगलक पागल था, मैं पागल नहीं हूं। अच्छा यह कविता क्या है? किस कवि की सूझ और उमङ्ग है? गुजरात या ईरान के किस गाँव का रहने वाला है वह कवि?

बीरबल—गुजरात या ईरान का नहीं है वह जहाँपनाह, बल्कि अपने सँडीले का, अपना कारिन्दा मदनमोहन है। तेरह लाख रुपये की जमा आई, उसने साधू-सन्तों पर या न जानें कहाँ साफ करदी! सन्दूकों में कंकड़-पत्थर भरकर भेज दिये!! काग़ज़ के एक चिटके पर कविता लिख भेजी है—'तेरह लाख सँडीले आये सब साधुन मिल गटके, सूरदास मदनमोहन आधी रात सटके!'

(अकबर हँस पड़ता है। मुल्ला और उसका साथी दरबारी एक दूसरे की ओर देखते हैं)

अकबर—कुछ खा गया, कुछ साधू-फ़क़ीरों को खिला दिया। लेकिन आदमी सच्चा है। सब साधुन मिल गटके! शाबाश!! अकेले साधुओं ने नहीं खा डाला। मिलकर गटक गया! ह! ह!! ह!!! और आधी रात को सूरदास मदनमोहन सटक गया!!!! बीरबल, मैं उसको माफ़ कर दूँगा। उसने कुछ भी नहीं छिपाया।

बीरबल—जहाँपनाह, वह साधुओं के साथ ही कहीं सटक गया होगा।

अकबर—*(चुस्की लेते हुये)* लेकिन बीरबल, यह कविता ब्रजभाषा में तो नहीं है। और, इसको कविता कहने में हिचकी सी आती है।

बीरबल—खड़ी हिन्दी तो है जहाँपनाह, जिसमें कठोर बात आसानी के साथ ज़ाहिर की जा सकती है।

मुल्ला दोप्याज़ा—*(धीरे से अपने साथी दरबारी से)* कितना चालाक है बीरबल! किस तरह माफ़ करा लिया इसने!

दरबारी—हूं—।

अकबर—(उन दोनों से) तुम दोनों क्या खुसपुस कर रहे हो? पियो और जोर से बोलो। ताड़ी पियो, ज़बान का ताला खुल जायगा।

(अकबर गाँव के स्वांग का स्मरण करके हँस पड़ता है। मुल्ला दोप्याज़ा खड़ा हो जाता है। वह अपने विचित्र विदूषक वेश से अकबर को प्रसन्न बनाये रखना चाहता है)

मुल्ला दोप्याज़ा—जहाँपनाह, हम दोनों भङ्ग पी आये हैं—

अकबर—जो दिमाग़ को सड़ा देती है और कलेजे को मसोस डालती है।

मुल्ला दोप्याज़ा—फिर भी बीरबल जहाँपनाह को धोखा देता रहता है।

अकबर—मैं आँखों से सुनता हूं और कानों से देखता हूं। यह रीछ-भालू का चोगा किससे मांगकर पहिन आये हो?

मुल्ला दोप्याज़ा—एक पहुंचे हुये फ़क़ीर से, जहांपनाह।

अकबर—(*धक्का सा खाकर*) फ़कीर से। फ़क़ीर की गुदड़ी पहिने हो!! दुनियां में फ़क़ीर ही बादशाह से बड़ा होता है। मैं मिलूंगा उस फ़क़ीर से। कहाँ है वह?

मुल्ला दोप्याज़ा—मुझको गुदड़ी देकर चला गया।

बीरबल—और इनकी अक़्ल को अपने साथ लेगया।

मुल्ला दोप्याज़ा—जहांपनाह, अक़्ल से बढ़कर यक़ीन है जो मेरे पास बीरबल से ज्यादा है।

बीरबल—क्योंकि जिनकी गांठ में अक़्ल नहीं होती है वे केवल यक़ीन से काम लेते हैं।

(नेपथ्य में फिर कविता-पाठ का शब्द होता है)

अकबर—जिस समय ये कवि और शायर मुँह फाड़ फाड़कर चिल्लाते हैं और भांड़ों की तरह सिर और हाथ हिलाते हैं उस समय चित्रकारों को इनके सामने बिठला देना चाहिये जो इनकी पूरी हुलिया को खींच दें। (*एक दरबारी से*) इनको कुछ दे दिवाकर टालो।

(*दरबारी जाता है। अकबर अपनी एक जेब पर हाथ फेरता है। एक क्षण सोचता है। मुल्ला उत्सुक और चिन्तित होकर उसकी ओर देखता है। बीरबल भी उत्कंठित होता है, परन्तु वह अपना नियन्त्रण कर लेता है। अकबर जेब में से एक चित्र निकालता है। चित्र को देखकर टहलने लगता है। सब दरबारी खड़े हो जाते हैं*)

अकबर—(*चित्र को देखते हुये*) कितनी सलोनी सुहावनी है यह! रङ्गों की बांट, चेहरे का नाप-तोल, सारे शरीर की रेखायें, पृष्ठभूमि का अनुपात, और आँखों में तो मानो इस परी की जान को ला बिठलाया है। शरीर और आत्मा का ऐसा विलक्षण और लुभाने वाला घोल सिवाय जसवन्त की कलम के और कौन कर सकता है?

(*बीरबल कुछ दूर से देखता है। मुल्ला सकपकाता है*)

बीरबल—बड़े सुन्दर रंगों से सजाया गया है, यह चित्र! तुम भी देखो।

अकबर—हां, मुल्ला आओ।

(*मुल्ला शिथिलता से आता है। भंग के नशे का बहाना करके अपने क्षोभ को छिपाने का प्रयास करता है। बीरबल पर क्रोध भरी दृष्टि डालकर चित्र को पास से देखता है। चित्र हसीना का है, परन्तु, आंखें हसीना की नहीं हैं। मुल्ला के चेहरे पर का क्षोभ कुछ घुल जाता है। अकबर के संकेत पर बीरबल पास आकर चित्र को देखता है। हसीना के चित्र में गोमती की आंखों का सादृश्य अनुगत करके उसका चेहरा उतर जाता है*)

अकबर—मुल्ला, यह शक्ल किसकी है ? तुमने देखा होगा इसकी अस्लियत को ?

मुल्ला दोप्याज़ा—(*काँपते हुये गले से*) नहीं जानता जहाँपनाह।

अकबर—तुम बीरबल ?

बीरबल—(*बैठे हुये स्वर में*) कह नहीं सकता जहाँपनाह।

अकबर—(*मुल्ला के साथी दरबारी से*) तुम देखो जी पास आकर। देखो आँख कितनी सुन्दर है !

(*यह दरबारी पास आकर देखता है*)

दरबारी—जहाँपनाह, मैं नहीं जानता। किताबों के तर्जुमे करने, लिखने से सिर उठाने तक की फ़ुर्सत नहीं मिलती। मैं नहीं पहिचानता।

अकबर—मुल्ला ने नहीं पहिचाना तो कोई अचम्भे की बात नहीं, मगर बीरबल, तुम भूल गये ! शायद कारण तुम लोगों की भंग है। मैं बतलाता हूं, क्योंकि इतनी ताड़ी पी जाने के बाद भी मेरा होश ठिकाने में है। यह मुल्ला की भतीजी, शेखज़ादी की तस्वीर है। यह मे···रे··· ह···र···म···मे ·आ···य·· गी। मु···ल्ला···

(*जीभ की लड़खड़ाहट के साथ अकबर भरभरा कर बैठ जाता है। मुल्ला चोगे की तनी खोलकर पटली को बादशाह की आँखों के सामने कर देता है जिस पर हिन्दी में साढ़े चौहत्तर लिखा हुआ है। अकबर उस लेख को देखकर चौंक पड़ता है, सहम जाता है, और खड़ा होकर बैठ जाता है। उसका नशा कम हो जाता है*)

मुल्ला दोप्याज़ा—(*पटली को उंगलियों से हिलाते हुये*) जहाँपनाह, उसकी शादी हो चुकी है।

अकबर—(*आँखें बन्द करके*) तलाक़ हो सकती है। (*आँखें खोलकर और पटली की ओर देखते हुये*) क्या तुमको यह तावीज़

उस फ़क़ीर ने दिया है ? इस पर क्या लिखा है ? क्या लिखा है इस पर बीरबल ?

बीरबल—(*तुरन्त*) सादे चौहत्तर जहाँपनाह ।

(*अकबर भौंचक्का होकर सन्नाटे में आजाता है । उसका नशा उतर जाता है । माथे पर पसीने की बूंदें आजाती हैं । एक क्षण के लिये बहुत खिन्न हो जाता है*)

मुल्ला दोप्याज़ा—इस तस्वीर में आंखें बीरबल की भतीजी की हैं ! जहाँपनाह ।

अकबर—हूं—खैर, सोचूंगा; देखा जायगा । (*अकबर चित्र को जेब में रख लेता है*) जसवन्त ने इतनी बड़ी ग़लती की ! सादे चौहत्तर !! ओफ़ !!!! चित्तौर का खून !!!! हूं—फिर चित्तौर से लड़ना है । राणाप्रताप क्यों नहीं पल भर के लिये सिर झुका लेता ?

(*मुल्ला मन ही मन प्रसन्न होता है*)

बीरबल—काबुल और बंगाल के बाग़ियों को भी तो दबाना है जहाँपनाह ।

अकबर—बंगाल के बाग़ियों को टोडरमल ठिकाने लगा रहा है । काबुल की तरफ़ मैं खुद जाऊँगा । मगर मेवाड में लड़ाई को जारी रखने का बन्दोबस्त करके, फिर देखूंगा । (*सुराहियों और कटोरों पर दृष्टि घुमाकर*) ये बिचारे किसी लड़ाई भिड़ाई का इन्तज़ार नहीं कर रहे हैं । (*पीता है*)

अकबर—कैसे कैसे बहादुर हो गये हैं दुनियां में—जैसे अर्जुन भीम वग़ैरह महाभारत के जमाने में—

बीरबल—(*अकबर की ओर इङ्गित करके*) और आजकल भी हो रहे हैं, जहाँपनाह ।

अकबर—यह ताड़ी का युग है और वह सोम का था, यह फ़र्क है, बीरबल । (*मुल्ला के संगी से*) तुम महाभारत का तर्जुमा फ़ारसी

में करो। जसवन्त वग़ैरह उसके चित्र बनायेंगे। करो शुरू जल्दी से जल्दी।

दरबारी—जहांपनाह, बड़ी मुश्किल पड़ेगी। उसकी संस्कृत दुश्वार है।

अकबर—(*तेज़ होकर*) महाभारत की संस्कृत दुश्वार है या तुम्हारा बुग्ज़ ? याद रखना मैं कानों से देखता हूं। हिन्द की संस्कृति से बुग्ज़ रखने वालों का मैं करारा दुश्मन हूं। (*अकबर की आंख में करालता देखकर दरबारी थरथराने लगता है। घबराहट, असमन्जस और संकल्प से वह अपने चोगे से बाहर साढ़े चौहत्तर की पटली निकाल लेता है। अकबर उसको देखकर तुरन्त आत्म नियन्त्रण करके हँस पड़ता है*)

दरबारी—जहांपनाह।

अकबर—यह भी साढ़े चौहत्तर की लखनी है! यानी तुम इसको दिखलाकर मेरा खाना पीना, सोना, उठना बैठना, यहाँ तक मेरी बोलती तक बन्द कर सकते हो!! कितने बड़े मूर्ख हो तुम !!!

बीरबल—सोने की तोल पर गोबर बेचने की इच्छा रखने वालों में से हैं ये!

(*अकबर करारी निगाह से दरबारी को देखता है। दरबारी बिलकुल सहम जाता है*)

दरबारी—जहांपनाह, खुदावन्द, मैं कल से ही तर्जुमा शुरू कर दूंगा। माफ़ कर दिया जाऊँ! बख़्शा जाऊँ!!

अकबर—मुसलमान होते हुये भी हिन्द की भाषा को अपनी भाषा, यहां की कलाओं को अपनी और यहां की संस्कृति को अपना अदब मानता हूं। तुम तो चीज़ क्या हो!

बीरबल—जहांपनाह, हिन्द में लैला मजनू शीरीं फ़रहाद वग़ैरह को कहां से पायेंगे ये?

अकबर—बकावली है, इन्द्र की सभा है, अप्सराऐं हैं, देवदानव हैं—यहां किसी की भी तो कमी नहीं है।

दरबारी—जहाँपनाह ने सच फ़रमाया। उनके अलावा राजपूत हैं, उनकी प्रेम की कहानियां, उनकी बहादुरी के गीत—

बीरबल—उनकी अफ़ीम के तरान—

अकबर—अफ़ीम से मुझको भी परहेज़ नहीं है। पुरुषार्थ को अजीब्र लौ देती है।

(अकबर और भी पीता है)

दरबारी—(*उत्साहित होकर, काइयेंपन के साथ*) इसमें क्या शक है जहाँपनाह। राजपूत लोग जिस वक्त कसूमा की तरंगों में तैर उठते हैं भाले की नोक, और तलवार की धार को मोम समझने लगते हैं। दो राजपूत तो एक दूसरे के भाले की नोक पर इसी सूरबीरी के हुलास में झपट पड़े, भालों को अपने अपने पेटों में छेदकर पार कर लिया और एक दूसरे के सीने से जा भिड़े। हद हो गई बहादुरी की !!!

बीरबल—इस करतब को तो जंगल के शेर, तेंदुये, भालू और भेड़िये तक नहीं कर सकते! वाह!! वाह!!! वाह!!!! क्या बात है !!!!!

अकबर—(*खड़े होकर*) मैं कर सकता हूं—अभी करके दिखलाता हूं। राजपूतों से कुछ ज़्यादा करके दिखलाऊँ तब तो मेरा नाम अकबर।

(अकबर तुरन्त अपनी तलवार को म्यान से बाहर निकालता है और कटार को भी। कटार से दीवार में छेद करके तलवार को मूठ की तरफ़ से ठोक कर खोंस देता है। नोक उसके सामने और धार ऊपर की तरफ़ है। अकबर अपनी पगड़ी कलगी और जामें को

एक ओर रख देता है। दरबारी आश्चर्य चकित हैं। मुल्ला के मन मे सन्तोष है, परन्तु वह भी चिन्ता प्रदर्शित करता है यद्यपि उसकी बनावटी व्याकुलता में होकर सन्तोष झलक पड़ता है। अकबर उस तलवार की नोक पर दौड़ पड़ने की तैयारी करता है)

अकबर—*(दांत भींचकर, भयङ्कर ओज के साथ ऊँचे तीव्र स्वर में)* इस तलवार की नोक को अपने पेट में लेकर पीठ के बाहर निकाले देता हूं। देखूँ कौन सा राजपूत ऐसा करता है?

(अकबर तलवार पर दौड़ पड़ने की कोशिश करता है। बीरबल बीच में आजाता है। अकबर उसको धक्का देकर गिरा देता है। अकबर पीछे हटकर, फिर हुंकार के साथ दौड़ पड़ता है। अन्य दरबारी आड़े आते हैं। वह उनको भी गिरा देता है और अपने आत्मघाती हठ को पूरा करने का प्रयत्न करता है)

बीरबल—जहांपनाह! जहांपनाह!! संसार सूना हो जायगा!!!

अकबर—मेरी बला से। *(प्रयत्न करता है)*

बीरबल—आपके इस काम से न तो एक ताड़ के पेड़ और न ताड़ी की एक बूंद को कोई नुक़सान पहुँचेगा। हिन्द मिट जायगा, हिन्द जिसको आप इतना चाहते हैं।

अकबर—नाम तो रह जायगा जिसको मैं हिन्द से भी बढ़कर समझता हूं।

(अकबर अपने को छेद डालने का प्रयत्न करता है। दरबारी उसको रोकने के लिये जुट पड़ते हैं। वह उनको अपनी शक्ति के कारण इधर उधर पटक पटक देता है। मुल्ला दो प्याज़ा भी कई बार गिरता है)

बीरबल—यही है असली तलवार! इसको रख लीजिये अपने पेट में!! अक़्ल काम न कर रही हो तो यक़ीन से काम लीजिये!!!

(बीरबल अकबर से चिपट जाता है। एकाध दरबारी और भी। अकबर अपने हठ को पूरा नहीं कर पाता है। हाँफ उठता है। नशा भी कम हो जाता है। वह बैठ जाता है)

अकबर—*(दरबारियों की ओर देखता हुआ कि उसकी फ़ज़ीहत का कोई बुरा प्रभाव तो नहीं पड़ा है)* बादशाह को सब इन्सानों से बड़ा होना चाहिये, हर एक बात में सबसे बढ़कर असाधारण।

बीरबल—सो तो जहाँपनाह हैं। गाँव के लोग भी कहते हैं, जंगल के लोग भी।

मुल्ला दोप्याज़ा—दुनियां भर कहती है।

बीरबल—हाँ, जंगल के जानवर, स्यार वग़ैरह तक। जहाँपनाह, देखें मुल्ला अपने अनोखेपन में किस जानवर से कम है!

अकबर—*(मुल्ला की ओर देखते हुये और एक क्षण सोचते हुये)* मुल्ला तुम नाचो। अच्छा लगेगा, सबको भाएगा। क्या कहते हो तुम लोग?

सब—ज़रूर जहाँपनाह।

मुल्ला दोप्याज़ा—*(बीरबल की ओर हिम्सापूर्ण दृष्टि से देखते हुये, अकबर को प्रसन्न करने के लिये)* जहाँपनाह के चेहरे पर हँसी बुलाने के लिये मैं ज़मीन पर तो क्या आसमान पर भी नाच सकता हूं, बिना साजबाज के।

(मुल्ला नाचने लगता है। अकबर दरबारियों को देखता रहता है—उसको विश्वास होजाता है कि दरबारी उसके भोंड़े काम को मुल्ला के नृत्य में भूल रहे हैं। मुल्ला की आकृति भी विकसित होती जाती है। उसको भी विश्वास हो गया है कि अकबर का हसीना सम्बन्धी हठ शिथिल पड़ गया होगा)

छठवां दृश्य

[स्थान—दिल्ली की एक गली में छोटे बड़े मकान। समय दोपहर। गली में होकर बहुत थोड़े लोग आ जा रहे हैं। स्त्री-वेश में जसवन्त का प्रवेश। वह एक साफ़ सुथरे कपड़े में कुछ काग़ज़ लपेटे हुये है। हसीना के निकटवर्ती घर की कुण्डी खटखटाता है। गोमती आकर किवाड़ खोल देती है। वह जसवन्त को घर की पौर में ले जाती है। पौर में एक चबूतरा है जिस पर साफ़ कपड़ा बिछा हुआ है। गोमती उसपर बैठ जाती है। चबूतरे के नीचे एक उँचा पीढ़ा रखा है। जसवन्त गोमती का संकेत पाकर पीढ़े पर बैठ जाता है। किवाड़ खुले रहते हैं]

गोमती—बहुत दिनों में आई तुम—कौन से चित्र बना लाई हो? *(इधर उधर देखती है)*

जसवन्त—*(किवाड़ों की ओर और इधर उधर देखते हुये)* बादशाह फ़तेहपुर सीकरी आ गये हैं, इसलिये आने में विलम्ब लग गया। *(कपड़े के बस्ते को खोलता है)* आपके कुछ चित्र बनाये हैं। *(बनावटी स्वर में)* हसीना के भी दो चित्र हैं। *(चित्रों को गोमती के हाथ में देता है)*

गोमती—*(चित्रों को देखते हुये हँसकर)* हसीना के चेहरे में मेरी आँखें चिपकादीं तुमने! हसीना ने देखा इन चित्रों को?

जसवन्त—उस दिन वहीं बैठकर जो चित्र उनके बनाये थे, उनको दे दिये थे। ये चित्र उन्होंने नहीं देखे।

गोमती—उसको दिखलाऊँ तो क्या वह अपनी आकृति को पहिचान पावेगी?

जसवन्त—*(विनय के साथ)* ऐसा मत करना। आपके लिये बनाये हैं। बड़ा श्रम खर्च किया है।

गोमती—(*मुस्कराकर*) पर ये तो गलत हैं। उतने श्रम का परिणाम ऐसी बड़ी गलती !

जसवन्त—जब हसीना का चित्र कल्पना की सहायता से बनाती हूं तब वे आँखें याद नहीं रहतीं, याद ये आँखें रहती हैं।

गोमती—हसीना का ब्याह हो गया है और मेरा भी—जानती हो ?

जसवन्त—जानती हूं। होना ही था ऐसा एक दिन। अचरज तो कुछ नहीं हुआ, पर—

गोमती—पर, पर क्या हुआ ?

जसवन्त—एक टीस सी बनी रहने लगी है। उस टीस के नशे में इन सब चित्रों को बनाया है।

गोमती—तुम व्यर्थ पागल हुई जा रही हो।

जसवन्त—मनुष्य व्यर्थ ही तो पागल होता है। कभी कभी गाने की इच्छा होती है, परन्तु नहीं गा पाती हूं—जानती ही नहीं हूं; कविता करने की इच्छा होती है, नहीं कर पाती हूं। इसलिये आँसुओं से रंगों को भिगोकर और पक्का करके चित्र बनाती रहती हूं। शायद किसी दिन पागल भी हो जाऊं।

गोमती—मेरे मनमें असम्भव की वान्छा नहीं है, फिर भी तुम्हारी मनोहर चित्रकारी को नहीं भूलती हूं—नहीं भूल पाती।

जसवन्त—जातपाँत की विषमता, कठोरता और अन्तर को कौन नहीं जानता ? परन्तु हृदय नहीं मानता है।

गोमती—पतंग उड़ाने वाले और पतंग के बीच में सदा अन्तर रहता है, डोर हाथ में होने से वह उसे खीच सकता है, परन्तु दूसरी डोर के पड़ जाने से वह नहीं खीची जा सकती। झटका देने से कटकर पतंग कहीं सुनसान में समा जाती है।

जसवन्त—यह सब जानते हुये भी बुद्धि काम नहीं करती। भगवान की ओर भी नहीं जाती। उनके भी चित्र बनाती हूँ तो आँखें वे ही बन जाती हैं। लोग सोचते होंगे मैं चित्रों को एक सांचे में ढालने लगी हूँ।

(घर के भीतर कुछ आहट होती है)

गोमती—फ़तेहपूर सीकरी तो बड़ा नगर हो गया होगा?

जसवन्त—आगरे से कम नहीं है। महल पर महल बन गये हैं और बनते चले जारहे हैं। राजा बीरबल का महल तो एक रंगबिरंगे फूलों के उद्यान जैसा है। बादशाह ने उस महल में उनकी बेटी के लिये एक बड़ा सुन्दर खण्ड बनवाया है—मानो खिले हुये गलाबों की छोटी सी क्यारी हो।

(गोमती चौंक कर खड़ी हो जाती है। ज़रा सा टहलती है)

गोमती—बीरबल की बेटी! बीरबल के कोई बेटी नहीं है। मैं उनकी भतीजी हू।

जसवन्त—*(स्वाभाविक स्वर मे)* आप उनकी भतीजी हैं!! *(प्रसन्न होकर)* उस महल में आप रहेंगी तो मुझको भी दर्शन मिल जाया करेंगे!!!

गोमती—इस स्वर में नहीं—उसी स्वर में बोलो। चित्रकरी, क्या मेरा चित्र भी अकबर ने देखा है?

जसवन्त—*(बनावटी स्वर मे)* कह नहीं सकती। शायद देखा हो।

गोमती—*(क्षुब्ध दबे हुये स्वर मे)* तुमने अच्छा नहीं किया। घात किया! अकबर शेख के घर में आग लगाकर अब ब्राह्मण के घर को फूकना चाहता है!! और तुम उस आगी की पर्चाने वाली निकलीं!!!

जसवन्त—(*स्वाभाविक स्वर में*) कैसे ? गोमती रानी, कैसे ? ओफ़ !!!

गोमती—(*और भी दबे हुये स्वर में*) कह दिया कि उसी स्वर में बोलो। नहीं बोल सकती हो तो जाओ। पूछती हो कि कैसे ? सुनो—ऐसे, हसीना का ब्याह हो चुका है, परन्तु अकबर उसको बांदी बनाने की धुन में पागल है। हसीना प्रसन्नमन चिड़िया जैसी है। उसके पति को उसपर शङ्का हो गई है। यातो वह हसीना को मार डालेगा या तलाक दे देगा। मैं समझती थी ब्याह हो जाने पर बच जायगी, परन्तु आशा बहुत कम दिखती है। और, और, तुम अकबर के इस घटिया काम में सहायक बनी !! छि !!!

जसवन्त—मैं क्या करती ? बादशाह की नौकर हूं। अपनी निज की मेरी स्वतन्त्र इच्छा ही कितनी ? सकरी गली में होकर मेरी वाञ्छा किसी प्रकार निकल पाई और आपके पैरों में जा पड़ी। मेरे ऊपर दया करो।

गोमती—दसवन—जसोदा चित्रकरी, मैं तुम्हारी और तुम्हारी कला की अमर रहने की अभिलाषा करती हूं, परन्तु कला को अमरता न तो फूलों को मुर्झा देने से मिलती है और न कीचड़ से। ध्यान से कला को उत्पन्न करो, सेओ और बढ़ाओ। आगे मेरा तुम्हारा मिलन शायद ही कभी हो। मैं किसी भी हालत में फ़तेहपूर के महल में जाकर नहीं रहूंगी।

जसवन्त—मैं ध्यान से तभी काम ले सकती हूं जब छबि मेरी आँखों के सामने हो।

गोमती—फिर हसीना के चेहरे में ये आँखें किसने लगाईं ?

जसवन्त—पागलपन ने।

गोमती—(*इधर उधर देखकर*) परन्तु मैं पागल नहीं हूं। हसीना के पति का पागलपन एक अठवारे में ही तृप्त होगया, हसीना का पागलपन जन्म भर प्रकट न होगा। मेरे पागलपन की रङ्गत या चहक फ़तेहपूर के महल को कभी नहीं मिलेगी, कभी नहीं! क्या अकबर की कुत्सित भावना का पता काका को है?

जसवन्त—बादशाह महान है इतना मैं अवश्य कहूंगी। अन्य स्त्रियों के प्रति उनकी भावना चाहे जैसी हो, आपके प्रति कभी भी नहीं हो सकती।

गोमती—(*मुस्कराकर*) जैसे मन के भीतर कोई लोहे की दीवार खिची हो। काका को मालूम है?

जसवन्त—अवश्य होगा। परन्तु वे इसमें कोई दोष पाते हुये नहीं दिखलाई पड़ते।

गोमती—उन्होंने यहाँ कोई समाचार नहीं भेजा। हँसने वाला मानव पत्थर को भी पानी बनाकर बहा देने की हिम्मत रखता है। अच्छा, अब तुम जाओ। अकबर इस गली में अपना नवरोज़ और खुशरोज़ नहीं मना पावेगा। (*जसवन्त चित्रों वाले कपड़े की तह करता है*) चित्रों को मेरे पास मत छोड़ो, ले जाओ।

(*जसवन्त धक्का सा खाता है, उसकी आंखें अस्थिर हो जाती हैं*)

गोमती—(*मुलायम स्वर में*) मेरा एक चित्र छोड़ जाओ, बाक़ी ले जाओ।

जसवन्त—(*प्रसन्न होकर, स्वाभाविक स्वर में*) कौन सा छोड़ जाऊँ?

गोमती—जौन सा चाहो। (*दबे हुये स्वर में*) स्वर को ठीक करो।

(जसवन्त छाँटकर एक चित्र उसको दे देता है जो गोमती की मुस्कराती हुई छवि का है। बाक़ी चित्रों को बस्ते में बांध लेता है। जसवन्त जाता है। गोमती किवाड़ बन्द कर लेती है—किवाड़ों में थोड़ी सी सन्ध खुली है, जहां से जसवन्त एक बार उसकी आँख को देख पाता है। फिर केवल लहराते हुये कपड़े दिखलाई पड़ते हैं। जसवन्त उम उमाकर देखता हुआ चला जाता है)

[यवनिका]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—फ़तेहपूर के पास का जङ्गल। दूरसे फ़तेहपूर सीकरी की इमारतें दिखलाई पड़ती है। समय दिन। अकबर के लिये शिकार का आयोजन होरहा है। अकबर जङ्गल के नखी, खुर और सींग वाले जानवरों का शिकार करने वाला है। नेपथ्य में जानवरों के बोलने और भागने की आवाज़ होती है। अकबर और बीरबल आते हैं। अकबर शिकारी वेश में है। बीरबल साधारण वेश में]

अकबर—मुझको हाथियों की लड़ाई बहुत भली लगती है। पागल हाथी पर सवार होना तो मोहक है ही। पर हाथियों को पागल करके लड़ाना तो बड़ा ही मनोहर है।

बीरबल—और आदमियों की?

अकबर—लड़ाई तो थानेश्वर में गुसाइयों की लड़ाई के बाद फिर देखने को नहीं मिली।

बीरबल—जहाँपनाह ने गुजरात, मेवाड, अवध, मालवा इत्यादि में काफ़ी नरहत्या देखली है। अब पञ्जाब, काश्मीर और काबुल की बारी है।

अकबर—तुम उसे नरहत्या कहते हो बीरबल! बादशाही बिना आतङ्क के नहीं चल सकती, और लड़ाई के बिना आतङ्क क़ायम नहीं रह सकता।

बीरबल—बड़ी बड़ी इमारतें बनवाने और तड़क-भड़कदार दरबारों से भी तो आतंक खूब बनता है।

अकबर—परन्तु नरहत्या कोई न कोई तो करता ही रहेगा। मनुष्य आपस में बिना लड़े नहीं मानते। बचपन से बुढ़ापे तक यही होता रहता है।

बीरबल—*(मुस्कराकर)* जहाँपनाह बड़े परोपकारी हैं। दूसरों को मारने के प्रयास का कष्ट न करने देकर स्वयं पिल पड़ते हैं। आज आप काफ़ी जानवरों को मार चुके हैं, अब आदमियों का शिकार शुरू कर दीजिये। आपने जिस जैन साधू को गुजरात से बुलाया है, वह आपके मनको बदलने के लिये इतनी दूर से पैदल आ रहा है। उसको जहांपनाह यहां आते ही मार दें तो बड़ा नाम होगा और इतना आतङ्क फैल जायगा कि गांवों के लोग आपकी किसी तरह की भी नक़ल कभी नहीं उतारेंगे।

अकबर—*(बीरबल के कन्धे को अपने हाथ से हिलाकर, भौंह सिकोड़ कर, और आँखें तरेरते हुये)* बीरबल, तुम मुझको कसाई समझते हो!

बीरबल—*(बिना किसी सकपकाहट के, उसी प्रकार मुस्कराकर)* जहांपनाह ने मुझको बरसों पहले अभयदान दे दिया था, इसलिये इन बड़ी बड़ी और काली कराली आंखों का कोई प्रचण्ड प्रभाव मेरे ऊपर नहीं पड़ सकता है, और फिर यह कोई दरबार भी नहीं है जहां दूसरों को विनय सिखलाने के लिये नम्रता का अभिनय करना पड़े।

अकबर—(*हाथ खींचकर और बिलकुल ढीला पड़ कर*) बीरबल, तुमसे बढ़कर मुझको पहिचानने वाला और कोई नहीं। मेरा मन बहुत चल विचल रहता है। कहीं ठहरता ही नहीं। शिकार से मन ऊब गया है—

बीरबल—स्त्रियों पर जा ठहरेगा।

अकबर—(*एक क्षण के लिये गर्दन एक ओर लटकाकर, विचार में एक आँख कुछ सिकोड़कर झुके हुये, तलवार का सहारा लेकर*) कोई स्त्री ऐसी नहीं मिली जो मुझको दो घूँसे भी मार सकती।

बीरबल—(*ऊपर की ओर देखते हुये*) हूँ ढ़ लीजिये फिर या तो एक दिल्ली की दो हो जायंगी या पूरी दिल्ली वैसी स्त्री की मुट्ठी में समा जायगी।

अकबर—(*आँखें बन्द करके*) मैं बैठकर कुछ ध्यान करना चाहता हूं, मन बहुत उचटा हुआ है।

(*अकबर बैठ जाता है। वह अपना ताज एक पेड़ की जड़ पर रख देता है। बीरबल टहलने लगता है। मुल्ला दोप्याज़ा और फ़ैज़ी आते हैं। बीरबल उनको चुपचाप आने का संकेत करता है। वे लोग चुपचाप आकर बीरबल के पास खड़े हो जाते हैं। परस्पर प्रश्नसूचक इशारे करते हैं। कुछ क्षण उपरान्त अकबर हिलने लगता है, फिर आँखें खोलता है*)

अकबर—(*कम्पित स्वर में*) ओह! मैं एक नाचीज़ हूं। इस ब्रज भूमि में यह सब क्या कर रहा हूं!!! ओह। वह पीतपट, मोर मुकुट, काछनी, लहराते हुये केश और मोहिनी मुस्कान! उन मुस्कराते हुये होठों पर थिरकने वाली बंसी को नाचती हुई तानें गोपियों को लुभाने वाली चितवन!!!!

वे सब—(*धीमें, दबे हुये स्वर में*) जहांपनाह।

अकबर—ठहरो। उस चितवन के पीछे कालीय और पूतना को डराने वाला वह तेज। मिठास और तेज़ धार सब एकसाथ। बीरबल!

बीरबल—*(नम्र स्वर और विनीत भाव से)* जहांपनाह।

अकबर—*(फ़तेहपूर सीकरी की इमारतों की ओर देखते हुये)* आगे की पीढ़ियां कहेंगी फ़तेहपूर सीकरी की इमारतें अकबर की सनक की मधुर मूर्खता का परिणाम हैं ये। इनमें हँसी, तान और चित्र की विचित्रता तो है, पर बंसी वाले की मुस्कान! ओफ़!! ओफ़!!! वह मुस्कान, साधुओं फ़क़ीरों की भीख, अपने भीतर आपे को भरकर विश्व भर को मस्ती भरी चितौनी देने की आन बान, अपनी शांति से दूसरों को शान्ति देने की जान रखती है। बीरबल, मथुरा वृन्दावन में कोई ऐसा मन्दिर बनवाओ जिसमें ये सब की सब बातें हों और वह तोतली बानी में संसार से सदा कुछ कहता रहे और संसार सदा अपनी तुत-लाहट में उस मन्दिर से कुछ कहता रहे।

बीरबल—*(उत्साह के साथ)* जहांपनाह, राजा मानसिंह इत्यादि एक विशाल मन्दिर बनवाना चाहते हैं। वे ऐसा मन्दिर बनवा देंगे। कारीगरों का सरदार गोविन्ददास अभी जीवित है।

अकबर—हां, वह मेरे इस ख्याल को, मेरे इस सपने को पत्थर में तराश सकता है। फ़तेहपूर सीकरी के बनाने में उसका न मन खुल पाया और न हाथ।

बीरबल—*(फ़ैज़ी और मुल्ला की ओर देखते हुये)* जहांपनाह पूर्व जन्म में कोई योगी थे,—कोई बड़े अवतार है,—किसी अप्सरा ने योग भंग कर दिया इसलिये शाहन्शाह हो गये।

अकबर—हां बीरबल, अच्छी याद दिलाई, वह मन्दिर किसी अत्यन्त रूपवती स्त्री की तरह सुन्दर भी हो।

बीरबल—*(मुल्ला की ओर देखते हुये विनीत स्वर में)* स्त्रियां तो सभी सुन्दर होती हैं, कोई कम, कोई बढ़; कोई स्त्री कुरूप नहीं

होती—केवल वे स्त्रियां बदसूरत होती हैं जो निर्दय और क्रूर होती हैं, जिनके दिमाग में बकरे या मेंडक जैसी अक्ल होती है, फिर शकल उनकी चाहे जितनी सीधी, तिरछी और सुन्दर गोल रेखाओं की बनी हो।

(मुल्ला कुछ सन्देह और कुछ विश्वास की दृष्टि से बीरबल को देखता है)

फ़ैजी—*(बीरबल और मुल्ला की ओर देखते हुये)* जहांपनाह किसी महापवित्र आत्मा के अवतार हैं, स्वयं पवित्र हैं।

अकबर—वह मन्दिर ऐसा बने जिसकी भव्यता अक्ल को चिनोती दे।

बीरबल—*(उमंग के साथ)* बनेगा जहांपनाह, अवश्य बनेगा।

(अकबर मुल्ला की ओर देखता है। वह अनिश्चय की घबराहट में सिर नीचा कर लेता है)

अकबर—*(थोड़ा सा दहलते हुये, भावातिरेक की थिरक में)* मुल्ला, कन्हैया अकेले हिन्दुओं का नहीं है, मुसलमानों का भी है। मन्दिरों में बैठी हुई मूर्ति वाला कन्हैया नहीं,—वह तो केवल पुजारियों का है,—वह कन्हैया जिसकी मुस्कान इन्सान की जिन्दगी है, जिसकी मानव की आत्मा है, जिसकी आन बान सारे जहान का सहारा है, जिसकी मुरली महान से महान की क्षमा की जाने योग्य कमज़ोरी है, जिसकी—*(अकबर आँखें मीचकर ऊपर की ओर माथा कर लेता है)* ओ माखन मिसरी वाले योगीश्वर मुझको—मुझको—अपनी एक मुस्कान, एक तान—ओह! ओह!! *(बैठ जाता है। आँखों पर हाथ धर लेता है। दबे स्वर में)* अब जुदाई नहीं सही जाती—*(मुल्ला की आँखों में ग्लानि, फ़ैज़ी की आँखों मे खुशामद भरा हुआ आदर और बीरबल की आँखो मे हास मिश्रित स्नेह आ जाता है)*

बीरबल—इस भाव को आप अकेले न पीजाइये, थोड़ा सा इस संसार को बाँट दीजिये।

फ़ैज़ी—ओह ! शाहन्शाह के बराबर कितने महात्मा आज तक हुये होंगे ?

मुल्ला—या खुदा, या बाबा सलीम शाह हमारे जहांपनाह को जलवा दो।

(अकबर का भावा तिरेक ठंडा हो जाता हैं। उसके आंसू निकल आए हैं जिन को वह खड़े होकर पोंछ डालता है)

अकबर—*(मुस्कराकर मुलायम स्वर में)* मैं कहां था अभी ? ओफ ! क्या देखा मैंने अभी अभी !! उस सपने पर सारी सल्तनत न्योछावर है। *(उसका भाव फिर उत्तेजित होता है स्वर कुछ प्रखर)* मैं गोश्त का खाना छोड़ता हूं, शराब का पीना त्यागता हूं, जितनी चिड़ियाँ मेरे चिड़िया घर में कैद हैं उनको छुटकारा देता हूं—

बीरबल—कुछ गुसाईं क़ैद में हैं जहाँ पनाह थानेश्वर की आपसी लड़ाई के समय से। उनको क्या चिड़ियों की जगह रक्खा जायगा अब ?

अकबर—उनको भी छोड़ता हूं। कोई भी जानवर खाने पीने के लिये नहीं मारा जायगा। अगर कोई मारेगा तो उसका सिर काट कर फेंक दिया जायगा। जो जैन मुनि गजरात से यहां आ रहे हैं वे सुनकर प्रसन्न होंगे।

बीरबल—अब पशु तक आपका जय जयकार करेंगे क्यों कि मनुष्यों से बदला लेने का उनको अवसर मिलेगा, जहांपनाह। *(मुल्ला को गंभीर तथा उत्साह हीन देख कर)* ऊँटों की बलबलाहट अब और अधिक बढ़ जायगी।

फ़ैज़ी—*(अकबर को हँसाने के प्रयास में)* और गधों की रेंक चेंक। *(अकबर गंभीर बना रहता है–उसको हँसी नहीं आती)*

अकबर—मैं शिकार को बन्द करता हूं। शिकार खेलने से जङ्गल के हरे पेड़ों की पौध नष्ट हो जाती हैं और देहाती लोग चोरी से जङ्गल के हरे हरे पेड़ों का सफ़ाया कर-डालते हैं—मैं अब जाता हूं। अकेला पैदल जाऊँगा। रास्ते में शायद कन्हैया की झलक फिर मिल जाय। *(थोड़ी दूर जाकर ज़रा सा मुड़ कर)* बीरबल तुम आओ।

(अकबर जल्दी जल्दी जाता है। बीरबल उसके पीछे पीछे मुल्ला और फ़ैज़ी को वह चकित छोड़ जाता है। जल्दी में ताज को भूलजाता है। उनदोनों के चले जाने पर मुल्ला की अन्तर्ग्लानि प्रकट होजाती है। फ़ैज़ी चकित नहीं है, पर गंभीर है)

मुल्ला—क़रीब आधे बड़े बड़े उहदे बादशाह ने हिन्दुओं को दे दिये! मज़हब का उनके कुछ ठीक नहीं!! मुसलमानों की न जाने क्या गत बनने वाली है!!!

फ़ैज़ी—बादशाहत एक पेशा है मुल्ला, महज़ एक पेशा। यह सही है कि हिन्द में मुसलमानों की माली हालत शाही इनायत और इस्लाम की सयासी ताकत पर बनती बिगड़ती रही है, मगर यह आसरा बहुत ही कमजोर है, हिन्दुओं के साथ मिलकर चलना चाहिये। फिर मुसलमान कमज़ोर नहीं हो सकते।

मुल्ला—सच बतलाना शेख साहब, आपसे बढ़कर कुफ्र की ताईद करने वाला क्या कोई और भी है?

फ़ैज़ी—*(मुस्कराते हुए)* तफ़रीह के लिये कभी कभी कुफ्र की हरी भरी घाटियों और बहती हुई नदियों की सैर कर लेता हूं।

(मुल्ला हँस पड़ता है)

मुल्ला—सुना है बादशाह कोई नया मज़हब चलाने वाले हैं, आपके भाई ने संस्कृत सीख ही ली है, वह बादशाह के पहले चेले बनेंगे। बादु को शायद पीर।

फ़ैज़ी—अबुलफ़ज़ल अकेले ने क्या, अब्दुलरहीम ने और न जाने कितनों ने सीखी है। उसमें बुराई भी क्या है।

मुल्ला—पर शाहज़ादा सलीम ने तो नहीं सीखी है।

फ़ैज़ी—जिनका पेशा बादशाहत है उनको ज़बानों के सीखने की ज़रूरत नहीं रहती। (*मुस्कराकर*) शाहज़ादा सलीम तो हैं तुम लोगों के ख्याल के साथ। (*गम्भीर होकर*) मुल्ला साहब, घूरे के भी दिन फिरते हैं। अच्छे से अच्छे शाही जमाने में हिन्दुओं के धर्म को बरदाश्त भर ही तो किया गया है, अब ज़माना आया है कि उसको इज्जत भी मिल रही है।

मुल्ला—जागीरों के मौरूसी न रहने की वजह से मुसलमानों का बहुत नुक़सान हुआ है। उम्मेदों और इज्ज़तों के बनावटी दर्जे कर दिये गये हैं, रुतबों का एक फ़ज़ूल ज़खीरा बना दिया गया है। इन रुतबों से हमलोगों का पेट थोड़े ही भर सकता है।

फ़ैज़ी—बादशाह की इनामत कमाने से फिर दौलत की कमी नहीं रह सकती।

(*फ़ैज़ी का ध्यान पेड़की जड़ पर रखे हुये ताज की ओर जाताहै*)

फ़ैज़ी—देखो! हमारी तुम्हारी बातें ताज सुन रहा था!! होशियारी से काम लेना!!! मैं जाता हूं, बादशाह दूर न गये होंगे। ताज को दे आऊं। लौट कर आता हूं।

(*फ़ैज़ी ताज को उठा कर एक ओर चला जाता है। ग्लानि को मिटाने के लिये मुल्ला टहलता है और विविध प्रकार की शकलें बनाता है उसके विचार निश्चय और अनिश्चय के बीच में झूल रहे हैं। दूसरी ओर से बीरबल आता है*)

बीरबल—बादशाह यहां ताज छोड़ गये थे।

मुल्ला—थोड़ी देर हुई जब फ़ौज़ी लेकर गये हैं। कहते थे लौटकर आऊँगा।

बीरबल—ताज बादशाह के पास पहुँचा जाता है, अब मुझको कोई जल्दी नहीं। मुल्ला जी, मैं तुम्हारे साथ कुछ सलूक करना चाहता हूं।

(मुल्ला बीरबल को ग्लानियुक्ति सन्देह की दृष्टि से देखता है। वह अपने ऊपरी भाव को हास-परिहास के आवरे में छिपाना चाहता है, और चेहरे पर हँसी के भीतर सौहार्द के भाव को लाने की चेष्टा करता है)

बीरबल—मेरा विश्वास करो। तुम्हारे कान में बात कहूंगा। तुम्हारी कुछ बातों को उस ताज ने सुन लिया था। मैं नहीं चाहता कि मेरी किसी भी बात को यहाँ के पौधे या पत्ते भी सुन पावें।

(मुल्ला भौंचक्का सा हो जाता है। घबराहट का नियन्त्रण करने की कोशिश करता है)

बीरबल—बादशाह ने यदि पूरा विश्वास कर लिया कि वे महात्मा हैं, तो महात्मा बनने की जीवन भर लगातार कोशिश करते रहेंगे। इसमें सबका लाभ है। तुम्हारा भी।

(मुल्ला की घबराहट कुछ कम होती है)

मुल्ला दोप्याज़ा—मैं अभी समझा नहीं।

बीरबल—इधर कान को लाओ—सुनो।

(मुल्ला बीरबल के निकट जाकर बीरबल की खुस फुस सुनता है। पहले उसको क्षोभ होता है। फिर वह आशा और निराशा के बीच में रंग जाता है। चेहरे पर क्रोध भी आ जाता है। इसके उपरान्त उसका चेहरा विकसित होने लगता है। फिर कुछ प्रसन्न उसके मुँह से बीच बीच में निकल पड़ता है—ऐं! 'अच्छा!!' फ़िर उसको हँसी आती है। मुँह से निकल पड़ता है—'हां हां')

मुल्ला दोप्याज़ा—(उससे हटकर, हँसते हुये) कब ? कब ? राजासाहब ।

बीरबल—बादशाह का दरबार हो जाय, एक काम से निबट लें, बस फिर वही ! अब चलो न यहां से मेरे साथ । बादशाह के पास ही फ़ैज़ी भी मिल जायंगे ।

मुल्ला दोप्याज़ा—चलो ।

(दोनों जाते हैं)

दूसरा दृश्य

[[illegible] सीकरी । अकबर का दीवान ख़ास । बीच मे अठ पहलू खम्बे के पास तख्त पर मखमली गद्दी, उस पर तकिया लगाये अकबर बैठा है । तख्त के नीचे कुछ दूर, फ़ैज़ी, मुल्ला दो प्याज़ा, अबुल फ़ज़ल और एक पुर्तगाली पादरी खड़े हैं । अबुल-फ़ज़ल फ़ैज़ी का छोटा भाई है । आयु लगभग ३० साल । शरीर छरेरा, चेहरा पर दाढ़ी, आंखें तेज़, ओठ खुशामद के लिये सदा तत्पर से पुर्तगाल पादरी के लम्बी दाढ़ी है । चेहरा कठोर । समय रात]

अकबर—सबकी बहस सुनी अ। खूब सुनी । जितनी बहस सुनो उतना ही बड़ा चक्कर, और फ़ितूर दिमाग में पैदा होता है । मैंने ध्यान लगाकर एक नये मज़हब का नक़शा बनाया है—जैनियों से लिया है, अहिंसा यानी किसी भी जानवर का न मारा जाना, जो कोई मारे उसका सिर कटवा कर फिकवा देना—(*बीरबल धीरे धीरे आता है*) आओ बीरबल, बीच में कहां चले गये थे ?

बीरबल—[illegible], सन्ध्या के समय सूर्य को नमस्कार करने ।

अकबर—मुझको एक नई बात सूझी है उसी को कह रहा था । जानवर की हत्या करने वाले को प्राण दण्ड दिया जायगा । इससे

लोगों में दया का भाव जाग उठेगा। सूर्य की पूजा, जो प्रकाश का पुन्ज है और संसार भर को प्रकाश देता है। जो कोई भी ईश्वर का ध्यान लगाता है वह प्रकाश का ही तो ध्यान है। इसको ब्राह्मणों से लिया। आग सबसे बढ़कर जिन्दा चीज़ है। इसको पारसियों से और अल्लाह का नाम मुसलमानों से। इस मज़हब का नाम होगा दीन इलाही। मैं यही सब कह रहा था। यह मज़हब सबको परस्पर मित्र बना देगा।

अबुल फ़ज़ल—और हुज़ूर होंगे इस मज़हब के पहले गुरू (*देखता है कि खुशामद का कितना प्रभाव पड़ा है*)

अकबर—फ़ैज़ी, कितना चतुर और होनहार है यह अबुल फ़ज़ल! मैं कहने ही वाला था, क्योंकि जो कोई नया ख़याल संसार को दे उसको उस ख़याल का वली या गुरू बनने और ज़ाहिर होने में कोई लाज संकोच नहीं होना चाहिये।

फ़ैज़ी—जहांपनाह की मिहरबानी।

पुर्तगाली पादरी—जहांपनाह, हमारे धर्म से बढ़कर और कोई धर्म नहीं—

मुल्ला दोप्याज़ा—और हमारे मज़हब से बढ़कर कोई धर्म या मज़हब नहीं।

बीरबल—बहस से तो अब जाँच होने की नहीं।

अकबर—एक जांच बाक़ी है। दहकते हुये अंगारों पर से जो अपनी किताब लिये हुये निकल जाय उसका धर्म सच्चा, जो न निकल पावे उसका झूठा।

बीरबल—और जो जहांपनाह, दोनों जल भुन गये तो?

अकबर—तो मेरा दीन इलाही तो बाक़ी रहेगा।

पुर्तगाली—मैं इस तरह की जांच को बच्चों की सी सनक या पागलपन समझता हूं। जहांपनाह का हुक्म हो तो मैं अब जाऊँ?

अकबर—हां जा सकते हो पादरी साहब। तुमको अपना धर्म फैलाने की इजाज़त दी जाती है।

(पादरी सिर झुका कर चला जाता है)

बीरबल—पुर्तगालियों ने पश्चिमी समुद्र के कई किनारों पर पक्के अड्डे बना लिये हैं। विलायतों का सारा रोज़गार अपने हाथ में कर लिया है।

अकबर—जब तक मियाँ पादरी यहां अपना धर्म फैलाते हैं, तब तक मैं इनके अड्डों को साफ़ किये देता हूं। दक्षिण के सूबेदार को हुकुम भेज दिया है।

अबुल फ़ज़ल—जहाँपनाह कितने व्यवहार कुशल हैं!

(बीरबल उझक कर द्वार की ओर देखता है)

अकबर—क्या है?

(बीरबल द्वार के पास जाकर एक बुर्क़ा वाली स्त्री के हाथ में प्रार्थनापत्र लेकर आता है)

बीरबल—जहांपनाह, एक बुर्क़ा पोश स्त्री यह अर्ज़ी लेकर आई है। *(मुल्ला आँख गड़ाकर बीरबल की ओर देखता है)*

अकबर—मज़हब की चर्चा के बीच में अर्ज़ी पुर्ज़ी!

बीरबल—तो इसको लौटा दूँ? जहाँपनाह का फ़रमान है कि फ़रियादी किसी समय भी आ सकता है।

अकबर—अच्छा, अच्छा, सुनाओ क्या है।

बीरबल—*(प्रार्थनापत्र को चुपचाप पढ़कर)* कहने का साहस नहीं होता, जहाँपनाह।

अकबर—*(उत्साह के साथ)* मेरे खिलाफ़ भी फ़रियाद होगी तो सुनूंगा और इन्साफ़ करूंगा।

बीरबल—तो सुनाये देता हूं जहाँपनाह। यह फ़रियाद जहाँपनाह के ही खिलाफ़ है।

अकबर—सुनाओ। डरो मत।

बीरबल—दीन इलाही के जगत गुरु से यही आशा की जाती है। फ़रियादी का नाम हसीना है। वह दिल्ली की एक शेखज़ादी है। फ़रियाद करती है कि जहाँपनाह उसको ज़बरदस्ती उसके पति से छीन लेना चाहते हैं—तलाक़ दिलवा कर। इन्साफ़ चाहती है।

(बीरबल प्रार्थना पत्र को अकबर के हाथ में दे देता है। मुल्ला बीरबल को कृतज्ञता की दृष्टि से देखता है। बाक़ी दरबारी सिर नीचा कर लेते हैं)

अकबर—फ़रियादी को बुलाओ।

(बीरबल बुर्क़ापोश हसीना को ले आता है)

अकबर—मुँह खोल लो। तुम अपने बादशाह के सामने हो।

(हसीना मुँह खोल लेती है)

हसीना—*(काँपते हुये स्वर में)* जहाँपनाह, इन्साफ़।

अकबर—*(उसको ध्यान पूर्वक देखकर)* कभी किसी ने तुम्हारी तस्वीर बनाई थी?

हसीना—हाँ, जहाँपनाह, एक औरत ने जो आगरे से दिल्ली गई थी। उसने मेरी एक हिन्दू पड़ोसिन की भी तस्वीर बनाई थी।

अकबर—*(उसको फिर ध्यान पूर्वक देखकर)* शेखज़ादी, मैं तुम्हारा अपराधी हूं। जो सज़ा देना चाहो दे डालो। अब तुम्हारा कोई बाल भी बांका न कर सकेगा! *(दरबारियों के मुँह से 'वाह! वाह!!' निकल पड़ती है—सबसे ऊँची अबुल फ़ज़ल के मुँह से)* तुमको कभी कोई तङ्ग न कर सकेगा।

हसीना—मुझको और कुछ नहीं चाहिये। सब कुछ पा गई। बड़े आदमियों के लिये सबसे ज़्यादा मुश्किल काम है अपनी ग़लती का क़बूल करना। ग़लती क़बूल करलें तो उनकी यही सज़ा है।

अकबर—मैं तुम्हारी हिम्मत को कुछ इनाम भी दूँगा। हूं—जसवन्त कहाँ है? बुलाओ उसको।

(अबुलफ़ज़ल जसवन्त को ले आता है। हसीना उसको देख कर धक्का सा खाती है। जसवन्त उसको देखकर सन्न रह जाता है)

बीरबल—जहाँपनाह, जसवन्त से इस इन्साफ़ का चित्र बनवायें जिसमें यह अमर हो जाय।

अकबर—*(रीती चितवनसे)* जसवन्त से?···हाँ, जसवन्त से। *(जसवन्त को कुछ अनमनी दृष्टि से देखते हुये)* बना सकोगे? इसी समय।

जसवन्त—*(कंपित स्वर में)* जहाँपनाह।

(जसवन्त बैठकर चित्र बनाने लगता है। उसका हाथ काँप रहा है, परन्तु वह दृढ़ प्रयत्न करके चित्र बनाता है)

अकबर—शेखज़ादी, तुम मेरी बहिन के बराबर हो, जाओ। नक़द इनाम तुम्हारे घर पर पहुँच जायगा।

(हसीन जाती है। जसवन्त उस दृश्य का रेखा चित्र बनाकर खड़ा हो जाता है। सिर नीचा किये है)

बीरबल—अब जसवन्त को इजाज़त मिल जाय तो जाय।

अकबर—*(रुष्ट स्वर में)* ऐसा सस्ता! *(कुछ सोचकर परन्तु अकबर अपना नियन्त्रण करना जानता है)* जसवन्त, उस तस्वीर में आँखें किसकी थी? *(जसवन्त चुप रहता है)* तुमको मैं दुनिया का सबसे बड़ा चित्रकार कहा करता था, अब क्या कहूं? *(जसवन्त चुप है)* किसी की आँखें किसी का सिर, बन गये मियां मिट्ठू मुसव्विर! दो कौड़ी का काम करने लगे हो!! क्या हो गया है तुमको!

जसवन्त—(*गला साफ़ करके, कठिनाई के साथ*) जहाँपनाह, कलम को हृदय न मालूम कहाँ ले गया।

अकबर—(*तीव्र स्वर में*) जाओ, हटो।

(*जसवन्त चला जाता है*)

बीरबल—जहाँपनाह, एक बहुत बड़ी अनहोनी होने वाली है जैसी कि पहले कभी नहीं हुई और न कभी होगी।

(*सब चौकन्ने हो जाते हैं*)

अकबर—(*मुस्कराते हुये*) अब क्या फ़िलस्त है, बीरबल ?

बीरबल—(*गम्भीरता के साथ*) फ़िलस्त नहीं है, जहाँपनाह। अभी देखकर आया हूं और दिखलाये देता हूं। प्रलय होने वाली है! क़यामत !! क़यामत !!!

अकबर—क़यामत ! क्या कह रहे हो ?

बीरबल—हाँ, जहाँपनाह। अभी सन्ध्या समय एक बड़ा पुच्छलतारा देख आया हूँ। ज्योतिष से फल प्रलय का ही निकला है।

(*सब घबरा जाते हैं। बीरबल मुल्ला को छिपे संकेत द्वारा सावधान करता है*)

अकबर—(*निर्बल स्वर में*) हूं—(*प्रबलतर स्वर में*) देखूं कहाँ और कैसा है वह तारा। चलो, छत पर से देखेंगे। यहाँ की बत्तियां बुझ जावें।

(*वे सब जाते हैं। दूसरी ओर से रमजानी और लल्ली आते हैं*)

रमजानी—अब हमार तुम्हार दरबार हो जाइ हो लल्ली भया।

लल्ली—अरे मियाँ बा जो पिरलय होन वारी है, अब का लूघर दरबार कर हो !

रमजानी—अरे भइय्यन, पिरलै कयामत दारी हमार तुम्हार का करी ? कयामत बयार डर होई महल जायदाद दाम वारन कौं। हम तुम कयामत कौं निगल जाई कच्चा।

लल्ली—कोऊ आजै है तो सांचमांच पिरलय होजै है, बुझाउत चलौ बत्तियन कों। हम तुम्हारी सहाय करहैं।

(वह और लल्ली बत्तियां बुझाने लगते हैं)

रमज़ानी—उई सार नया दरबारी अब्बुल फजलवा कितना खुसामदी बाटै! कहत हैं बड़ा पढ़ा लिखा है। काहे का पढ़ा लिखा!

लल्ली—आज तानसेन ने नाहीं गाओ। जब वौ गाउत है तब ऐसो लगत है कि तानें सुर्ग में पौचा रही होंय, सारङ्गी बजत है तो ऐसो लगन लगत जैसें सुर्ग कों नसेनी लग गई होय!

रमज़ानी—सुर्ग का पूरा पूरा नसेनी लागत लागत रह गई! उई औरत मार डारी गई होतिन। बच गई बाल बाल भइयन।

लल्ली—पै बाको गुस्सा बिचारे जसवन्त पै उतार दओ! कही 'हटो जाओ।' इतने बड़े कारीगर सें ऐसी कहूं कही जात है? पै बड़े कौ मुँह को पकरै?

रमज़ानी—जे जो बड़े कहलावत हैं, ओ खुदा, एक मौज में दूसरी मौज पै चूहा अस कुदकत फुदकत रहत हैं और गरीब आदमी उन क्यार मनुहार करे का सिरजा आही। फिर बड़े आदमी क्यार मौज चाहे नीकी होई चाहे बहुत जियादा निखद्द होई, गरीब उनकी मौज क्यार गुलाम आही।

लल्ली—और वौ दीन इलाही का आहे?

रमज़ानी—सुनत जाओ भइयन, उई दीन इलाही आज उखर परा है, कल कोई दीन पिलाई खिलाई पिलपिला पड़ी! ई कयामत तो समझ मां आवत है। पै दीन इलाही? कयामत नहीं तो का आय यू? न हिन्दू धरम, न इस्लाम!!

(बत्तियां बुझाकर दोनों जाते हैं)

तीसरा दृश्य

[स्थान—दिल्ली की एक गली में छोटे बड़े मकान। समय दोपहर। गली में कोई नहीं आ जा रहा है। जसवन्त आता है। सिर पर रंग बिरंगी पगड़ी बांधे है। शरीर पर कुर्ता–अंगरखा फटा हुआ। फटी धोती पहिने है। नंगे पैर है। कमर में कटार बांधे है। उसकी आंखों में विलक्षण तेज है। चेहरा थका और धूल धूसरित सा। हाथ में कुछ समूचे और कुछ फटे हुये काग़ज़ लिये हुये है। कन्धे पर लोटा डोर डाले है। उसके पैर डिगमिगाते है, परन्तु वह नशा नहीं किये है]

जसवन्त—उस्ताद अब्दुल समद अगर एक छोटे से दाने पर कुरान शरीफ़ की आयतें लिख सकते हैं तो मैं इस काग़ज़ के टुकड़े पर दुनियां भर की शकलें बना सकता हूं। पर नहीं, आँख बनाऊँगा आँख। कहते हैं मैं आंख बनाना नहीं जानता हूं! ह! ह!! ह!!! ह!!!! तब क्या हड्डियों के नक़्शे बनाता फिरूं? वह आँख! ओफ़ वह आंख!! कहाँ है वह आँख? *(लोटा डोर कन्धे से उतार कर)* अब यात्रा समाप्त हो गई। पर यहां कुआँ कहां है? आंख का कुआँ! आंखों का कुआँ!! मैं अपनी जागीर मन्सब को दान में देता हूं। कोई है? कोई है! सब लेलो! सब लेलो!! *(नेपथ्य में शोर होता है—'कहां गया जसवन्त? उसको पकड़ो, वह पागल हो गया है!!)* पागल! जसवन्त पागल!! आँखों वाले देखें जसवन्त कितना बड़ा चित्रकार है। *(कुछ लोग दौड़ते हुये आते हैं)* ओह, कमबख्त बादशाह आ रहा है! मेरी आंखें फोड़ेगा!! मार डालूंगा!!! मार डालूंगा!!!! *(कटार निकाल कर भोंक लेता है और गिर पड़ता है)* ओह! वे·····आँखें!! *(लोग आकर घेर लेते हैं। उसी समय गोमती द्वार खोलकर आती है। उसके काग़ज़ इधर उधर बिखर जाते हैं। एक काग़ज़ पर गोमती का चित्र है)*

गोमती—(*घबराहट में*) ओह ! क्या हुआ ?···यह कौन है ?

भीड़ में से एक—जसवन्त कहार। शाहन्शाह अकबर का संसार प्रसिद्ध चित्रकार। बिचारा पागल हो गया है।

भीड़ में से दूसरा—इसको यहां से ले चलो ! जल्दी ले चलो !!

जसवन्त—(*अधमुँदी आंखें करके, कष्ट पूर्ण स्वर में*) या···आ···पू···री···हो···ग···ई···वे आँखें ! वे आँखें !! ओफ़ !!! ओफ़ !!!!

गोमती—हे भगवन् ! यह क्या हो गया ?

(*एक ओट में हसीना आती है*)

हसीना—बहिन गोमती, जैसे मुझको बचाया था, वैसे ही इसको भी किसी तरह बचाओ।

जसवन्त—(*कष्ट में है परन्तु दृढ़ स्वर के प्रयास में*) रंग··· इन्द्रधनुष···छाया और प्रकाश···प्रकाश और छाया···आँखें···ता··· न··· ओफ़ !!! और तरंग···वे आँ···खें···

गोमती—(*आंखों को मलती हुई बिसूरते हुये स्वर में*) ओह ! हे भगवन् !!

(*लोग जसवन्त को उठा ले जाते हैं। उसकी लुटिया डोर और कुछ काग़ज़ों को भी। गोमती अपने चित्र को देखती है, कभी जाते हुये जसवन्त को। जसवन्त जाते जाते आंखें खोलता है। दोनों एक दूसरे को एक क्षण के लिये देखते हैं। जसवन्त उसकी ओर एक हाथ बढ़ाता है। गोमती दौड़कर उसके हाथ में अपने चित्र को देती है*)

गोमती—(कंपित स्वर में) इसको लिये जाओ। (*चित्र जसवन्त के हाथ से छूट पड़ता है। भीड़ में से एक उस चित्र को उठा लेता है। वे सब जाते हैं। जाते हुये एक बार गोमती उसको मुड़ कर*

देखती है और फिर चुपचाप बिसूरती हुई चली जाती है। हसीना 'हाय !' करके ओझल हो जाती है)

चौथा दृश्य

[स्थान—फ़तेहपूर सीकरी से कुछ दूर झील जिसके किनारे पर बड़े बड़े पेड़ों की झुरमुटें हैं। समय सन्ध्या के पूर्व। अकबर और बीरबल आते हैं। अकबर कमर में तलवार बाँधे है और कन्धे पर अपनी नामी बन्दूक 'संग्राम' रक्खे है। पोशाक साधारणशाही है]

बीरबल—आपकी बन्दूक—संग्राम से पुच्छलतारा तो नहीं मारा जा सकता। इसको वापिस कर दीजिये, जहाँपनाह।

अकबर—पुच्छल तारा नहीं मारा जा सकता है लेकिन उसका डर, हर तरह का डर तो मारा जा सकता है।

बीरबल—पुच्छलतारा जिस महाभय का प्रतीक है उस भय को कोई नहीं मार सकता। अब भय अभय, श्रद्धा अश्रद्धा, पाप पुण्य, प्राण अप्राण सब एक समान हुये जाते हैं। क्योंकि प्रलय आ रही है, केवल यह जानना बाक़ी है कि कब आयगी सो वह अगिया बेताल रात आने पर बतला देगा।

अकबर—(*निराशा के स्वर में*) प्रलय आवे या न आवे,—वैसे हर एक आदमी के जीवन में एक बार प्रलय आती ही है। मुझको जब उदासी आ दबाती है तब मैं समझता हूं कि प्रलय आ गई है।

बीरबल—जहांपनाह यह प्रलय वैसी नहीं है। ईरान से उधर की विलायतें साफ़ होती चली आ रही हैं।

अकबर—एक साथ व्यापक रूप से यह प्रलय नहीं हो रही यही एक अचरज है। किताबों में यह सदी प्रलय की लिखी है, परन्तु यह नहीं सुना कि धीरे धीरे होगी।'

बीरबल—यह भी नहीं सुना है कि एक साथ होगी। जहाँपनाह ने ठीक कहा कि हरएक आदमी के जीवन में प्रलय आती है। ठीक उसी प्रकार हर एक देश या भूखण्ड पर भी आती है। जिस के ऊपर प्रलय आती है उसके लिये तो उसका आना एक साथ ही आना कहलायगा।

अकबर—चौरासी करोड़ योनियों में होकर जिसने मनुष्य को सृजा और बड़ा किया अब वही उसको समाप्त भी करने जा रहा है। बादशाह और दरिद्र बराबर हो जायंगे। पहले क्या रहा होगा? आगे क्या आयगा?

बीरबल—जब परमात्मा ने मनुष्य को सृजा तब सब बराबर ही थे। फिर विषमता आई। अब सब बराबर हो जायंगे। पर जहाँपनाह, यह मान लेने की ग़लती क्यों की जाती है कि परमात्मा ने इस पीढ़ी को रचकर अपना सारा प्रयत्न और उद्देश्य खतम कर दिया? मानव की रचना के पहले कुछ था, चौरासी करोड़ योनियों के भी पहले। और, उसकी समाप्ति पर भी कुछ रहेगा। यह बीच का काल हमारी पृथिवी के लिये कोई दीर्घ समय भले ही हो, परमात्मा के आयोजनों और अङ्कों में तो उसकी कोई गिनती ही नहीं।

अकबर—तो अब असंख्य लोग एक साथ ही समाप्त होंगे! अकाल पड़ने पर कीड़ों मकोड़ों की तरह लोग यों भी बेहिसाब मर जाते हैं।

बीरबल—मरना कोई चीज़ ही नहीं। कुछ जैन मुनि भूखों मर कर प्राण गंवाना अच्छा समझते हैं। फिर जहाँपनाह तो अवतार ही हैं। अवतारों से तो काल भी डरता है।

अकबर—भूखों मर कर तो प्राण नहीं दूँगा। दूसरों के लिये अहिंसा और अपने लिये हिंसा मेरा सिद्धान्त नहीं है। पर मैं, इस समय सचमुच डरा हुआ हूं। ज्ञान काम नहीं कर रहा है।

बीरबल—जहाँपनाह अपने को संसार भर में सबसे बड़ा मानलें बस मौत का डर छूट जायगा। (*अबुल फ़ज़ल आता है*) आप नहा आये शेख अबुल फ़ज़ल ?

अबुल फ़ज़ल—जी हां। (*अकबर से*) जहाँपनाह का कन्धा दूखने को आया होगा, मैं रख लूँ बन्दूक कन्धे पर ?

अकबर—नहीं। (*बन्दूक को और भी गर्दन के नीचे चिपटा कर*) इसको आज साथ ही रखूंगा। *(पश्चिम की ओर देखकर)* अब सन्ध्या होने वाली है, मैं भी नहा आऊँ। तुम बीरबल ?

बीरबल—मैं तो नहा कर चला था, जहाँपनाह।

(*अकबर जाता है*)

अबुल फ़ज़ल—(*सावधानी के साथ*) इस सबका नतीजा क्या होगा ठीक ठीक समझ में नहीं बैठ रहा है। कयामत तो होगी नहीं।

बीरबल—हो भी सकता है और नहीं भी। कम से कम शाहन्शाह की कामुकता और मुल्ला की शरारत पर तो प्रलय आ ही जायगी, इसीलिये तो आपको इस रहस्य में शामिल किया है।

अबुल फ़ज़ल—आप नहीं जानते मैं आपकी कितनी क़दर करता हूं और आपको कितना बड़ा मानता हूं, मगर काम बहुत ही नाज़ुक और खतरनाक है।

बीरबल—इसकी फ़िक्र मुल्ला को होनी चाहिये। जितना शरीर है उतना चतुर भी तो होना चाहिये। यह नाहक़ मुझको अपना शत्रु समझता रहा है।

अबुल फ़ज़ल—वह बन्दूक मेरे कन्धे पर आ जाती तो बहुत अच्छा होता। परन्तु दुनियां भर में बादशाह को सबसे अच्छा परखने वाले आप हैं। मुझको आपकी समझ का पूरा भरोसा है।

बीरबल—संसार में तीन तरह के मनुष्य होते हैं शेख साहब,—विचार शील, कुविचार शील और विचारहीन। प्रायः एक ही मनुष्य

और कई पुच्छल तारे निकलेंगे। एक पुच्छल ने ईरान के उस तरफ़ की विलायतों को मिटाया है, दूसरा इस तरफ़ आंख डालेगा। आप हर हालत में बचे रहेंगे। लेकिन एक शर्त है। सावधानी के साथ सुनो—अपने हरम की स्त्रियों से पूछना, तुमने कभी प्रेम किया या किसी दूसरे के साथ करती हो? जवाब के लिये उनको एक दिन रात का वक्त देना और ताले पहरे खोल देना। वक्त ख़तम होने पर उन पांच हज़ार में से निन्नानवे फ़ीसदी रफ़ूचक्कर हो जायंगी। इसलिये हरम की आबादी को अब और न बढ़ाना, वचन दो।

अकबर—(*स्वर को दबाकर*) मैं वचन देता हूं।

पेड़ से उसी विलक्षण स्वर में—और सुनो—रात को सोते समय भले ही सोच लिया करो कि मुझसे बढ़कर दुनियां में और कोई नहीं, सपनों में भी सोच सकते हो, लेकिन सवेरे जागते ही पहली बात सोचा करो—मैं कौन हूं? और कहा करो—मैं कुछ भी नहीं हूं।

(बीरबल भौंह सिकोड़ लेता है और दाँत मींजता है। अबुल फ़ज़ल उसको देखकर एक ओर मुँह फेर लेता है। अकबर कनखियों देखता है)

बीरबल—जसवन्त चित्रकार ने आत्मघात क्यों किया?

पेड़ से उसी स्वर में—जसवन्त चित्रकार को आपने एक बुरे काम पर लगाया था; फिर आपने उसका अपमान किया। वह सह नहीं सका। पागल हो गया और मर गया।

अकबर—यह तो मैंने नहीं पूछा था, अगिया बेताल। (*अकबर ताक कर देखता है कि पेड़ में शब्द कहाँ से आ रहा है*)

पेड़ से उसी स्वर में—किसी ने तो पूछा था।

अकबर—लोग पागल क्यों हो जाते हैं?

पेड़ से उसी स्वर में—बादशाह के, हकूमत के, या समाज के, ज़ुल्म से।

(अकबर धीरे धीरे बन्दूक उठाता है। अबुल फ़ज़ल परेशान होने लगता है। बीरबल शान्त, परन्तु सतर्क है)

अकबर—फ़क़ीर क्यों पागल होते हैं या पागल फ़क़ीर कैसे हो जाते हैं ?

पेड़ से उसी स्वर में—अपने को दबा डालने से—बस और किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जायगा।

(अकबर बन्दूक सँभाल लेता है, परन्तु अभी उसने कन्धे से नहीं लगा पाई है। अबुल फ़ज़ल बहुत चिन्तित हो जाता है। बीरबल सावधानी के साथ अकबर के पीछे आ जाता है)

अकबर—बस केवल एक सवाल और संसार में मुस्तक़िल क्या है, सुरूप या कुरूप ?

बीरबल—*(अकबर की बग़ल में आकर जिस ओर बन्दूक है)* अब बेताल उत्तर न देगा, मैं उत्तर देता हूं जहांपनाह। यदि कोई भी सौंदर्य स्थायी होता तो वह सौंदर्य रहता ही नहीं। सुरूप और कुरूप बारी बारी से स्थायी हैं।

(अकबर बन्दूक को कन्धे से लगा लेता है, परन्तु अभी उसने निशाना नहीं ले पाया है) यह क्या करते हैं जहांपनाह ! *(अकबर उसकी ओर देखने लगता है। उसकी आँखों में क्षोभ है)* मेरा उत्तर अभी पूरा नहीं हुआ है। सुरूप और कुरूप का भेद बाहरी पदार्थों के लिये है। भीतर जो आत्मा है उसका सौंदर्य स्थायी और अनन्त है, परन्तु उसको पहिचानना पड़ता है।

अकबर—*(निशाना लेते हुये)* सुन लिया तुम्हारा उत्तर। अब ज़रा इस बेताल को समझ लूँ। इसकी प्रलय को बुलाना चाहता हूं।

(पत्तों में खरखराहट होने लगती है)

बीरबल—*(गम्भीर, परन्तु विनीत स्वर में)* ठहरिये जहांपनाह—*(अबुल फ़ज़ल थर्रा जाता है)* पेड़ से मुल्ला दो प्याज़ा की आवाज आती है—जहांपनाह ! जहांपनाह !! बख्शिये !!!

(अकबर बन्दूक़ नीची कर लेता है)

अकबर—उतर नीचे ओ बेसुरे ! बेताले !!

(मुल्ला धीरे धीरे उतर कर आता है। उसकी पोशाक ऊट पटांग है। वह थर थर काँप रहा है। पेड़ में दिखलाई पड़ने वाली रंग बिरंगी रोशनी गुल हो जाती है। अबुलफ़ज़ल की घबराहट कम होगई है)

अकबर—यह क्या बीरबल ?

बीरबल—सामने तो है, जहांपनाह।

अकबर—क्यों ? क्यों ?

बीरबल—जहांपनाह, जो बात जानता, आपकी प्रजा, अपने मुँह से नहीं कह पाती है वही तो इस अगिया बेताल ने कही।

(अकबर बन्दूक को ज़मीन पर टेक कर कुछ सोचता है। बीरबल और फ़ज़ल उसको ध्यान पूर्वक देखते हैं। मुल्ला का काँपना कम हो जाता है। अकबर के चेहरे पर धीरे धीरे मुस्कराहट आ रही है)

अकबर—*(हँसकर)* तुम बहुत पाजी हो, बीरबल।

बीरबल—*(नीचा सिर करके मुस्कराते हुये)* जहांपनाह।

अकबर—*(अट्टहास करके)* हद हो गई ! हद हो गई !!

बीरबल—*(उसी प्रकार)* अभी कहां जहांपनाह ? अभी पुच्छल तारा आकाश से अन्तिम बिदा नहीं ले गया है।

अकबर—भाड़ में डालो पुच्छल तारे को ! *(कुछ गंभीर होकर)* पर बीरबल, यह सही है कि इस सदी की इस साल में पुच्छल तारे का

आसमान में दिखलाई पड़ना बहुत अशुभ है। प्रलय का लक्षण। (*अनमना होकर*) पुच्छलतारे की समस्या अभी बाक़ी है।

बीरबल—जहाँपनाह, वह हल हो गई। इस वर्ष का ज्योतिष कहता है कि एक नये मेहदी प्रकट होंगे। मेरे लिये तो पहले से ही प्रकट हो गये हैं—जहाँपनाह ही वह मेहदी हैं—अवतार हैं। इसलिये पुच्छलतारा कोई अशुभ फल पैदा कर ही नहीं सकता।

अकबर—(*मुस्कराकर*) और ईरान के आसपास के मुल्कों का सर्वनाश जिसका तुम ज़िकर करते थे और इस बेवकूफ़ ने भी किया, वह?

बीरबल—उन देशों में कोई अवतार नहीं है आजकल इसलिये वहां सर्वनाश हो गया। यहाँ अवतार मौजूद है, सर्वनाश नहीं हो सकता।

(*मुल्ला अब बिलकुल शान्त है। फ़ज़ल प्रसन्न है। बीरबल गंभीर*)

अकबर—मैं अगिया बेताल वाली बात को इस पुच्छल तारे के भय के कारण ही विश्वास और अविश्वास के बीच में सही मान गया था, परन्तु इसकी गुस्ताखी ने मुझको क्रुध कर दिया और भय को भगा दिया। बच गया मुल्ला! दुनियाँ में दो सेर प्याज़ और दस सेर माँस का फ़ज़ूल खर्च अभी कुछ दिनों और होता रहेगा!!

मुल्ला दोप्याज़ा—(*झुक कर सलाम करके*) मैं बलाएँ लूँ जहाँपनाह की! यह शेख अबुल फ़ज़ल साहब जो देखने में कुछ मोटे तगड़े भी नहीं हैं!! बाईस सेर गिज़ा का रोज़ ढेर करते रहते हैं!!!

अकबर—ऐं!!! (*अबुल फ़ज़ल आत्म गौरव से मुस्कराता है*) पर यह फ़ारसी तुर्की अरबी के आलिम और संस्कृत के विद्वान भी हैं। और तुम मुल्ला! (हँसकर) आज तुम इतनी हिन्दी कैसे बोल गये?

(*मुल्ला बीरबल की ओर देखता है*)

बीरबल—जहाँपनाह, लोग मतलब के लिये कभी कभी जनता की बोली, हिन्दी, में भी बोल लेते हैं। *(मुल्ला पर व्यङ्ग-दृष्टि डालता है)*

मुल्ला दोप्याज़ा—इस पर भी राजा टोडरमल ने हकूमत का सारा काम फ़ारसी में ही जारी कर रखा है!

अकबर—क्योंकि हकूमत बिना आतंक के नहीं चलती। मूर्ख देहाती फ़ारसी नहीं जानते तभी तो सरकारी हिन्दू और मुसलमानों का उन पर गहरा आतंक बैठेगा। *(कुछ सोचकर)* बीरबल, तुमने मुल्ला को बेहद बेवकूफ़ बनाया! बेभाव पछाड़ा!! अब चलो या कुछ और बाक़ी है? *(हँसता है)*

बीरबल—जहाँपनाह की जय हो!

मुल्ला दोप्याज़ा—*(क्रुद्ध दृष्टि से बीरबल को देखकर)* हूं। *(विनीत स्वर में अकबर से)* फिर भी कुछ तो हुआ जहाँपनाह।

अकबर—*(उदास स्वर में)* जसवन्त की याद नहीं दिलाई जानी चाहिये थी, बीरबल। और मुल्ला तुमको एक सज़ा तो ज़रूर दूँगा। तुमको अपनी दाढ़ी मुड़वानी होगी! सब मुल्लों को!!

बीरबल—हम लोग विवश थे जहाँपनाह।

अकबर—हम लोग! *(हँसकर)* यानी तुम सबके सब इस खेल में शामिल थे!! यह अबुल फ़ज़ल भी!!! *(अ० फ़ज़ल मुस्कराता है फिर भयभीत हो जाता है)*

बीरबल—फ़ारसी और संस्कृत का पढ़ना और बाईस सेर रोज़ का भोजन व्यर्थ थोड़े ही जाना था, जहाँपनाह।

अबुल फ़ज़ल—अब तो जहाँपनाह, बन्दूक़ को मैं अपने कन्धे पर रख लूँ?

अकबर—कोई हर्ज़ नहीं। *(अकबर अबुल फ़ज़ल को बन्दूक़ दे देता है और हँसता हुआ जाता है। पीछे पीछे बाक़ी सब। मुल्ला अनमना है)*

पांचवां दृश्य

[स्थान—फ़तेहपूर सीकरी का महल। अकबर की ख़ास बैठक। तानसेन, बाजे वाले, मुल्ला दोप्याज़ा फ़ैज़ी, अबुलफ़ज़ल इत्यादि दरबारी बैठे हैं। बाजे वाले मिले हुये बाजों को फिर मिला रहे हैं]

मुल्ला दोप्याज़ा—मियाँ तानसेन, क्या दुनियां में कोई ऐसी हिकमत नहीं जो इन बाजों को बार बार मिलाने की इल्लत से बचा सके?

अबुल फ़ज़ल—शाहन्शाह आते ही होंगे।

तानसेन—जब तक स्वर बिलकुल सही तौर से न मिल जायँ राग ठीक ठीक नहीं उतर सकता। राग को स्वरों में घुल जाना चाहिये।

मुल्ला दोप्याज़ा—तो बाजे की एक खूँटी ज़रा और उमेठ दी जाय और, और मृदङ्ग पर ज़ोर की एक हथौड़ी—बस दोनों खुदा में जा मिलेंगे।

तानसेन—आपके कानों को सिवाय भड़भड़ और फटाफट के पसन्द ही क्या आ सकता है?

(नेपथ्य में—'बाअदब, बाक़ायदा, होशियार!' की पुकार होती है। सबलोग खड़े हो जाते हैं। अकबर आता है। पीछे पीछे बीरबल। अकबर के बैठने पर सब बैठ जाते हैं)

अकबर—मियां तानसेन, आज जी भरकर सुनलूं। काबुल कन्दहार पर चढ़ाई करने के लिये जल्दी कूच करना है। शायद फिर उलझनों से बहुत दिनों चैन न मिले।

तानसेन—*(जो पहले से ही थोड़ा सा ध्यानमग्न है)* बहुत अच्छा—*(गाता है)*

❀ गीत—दरबारी कान्हड़ा में ❀

घूँघट के पट खोलरी तुहि राम मिलेंगे।
घट घट में तेरे राम बसत हैं,
घट के बचन मत बोल री।
.....तुहि राम मिलेंगे॥

(गायन की समाप्ति पर अकबर 'वाह, वाह' करता है। फिर सब दरबारी मिलकर। केवल फ़ैज़ी चुप है)

फ़ैज़ी—*(जैसे नींद से यकायक जाग पड़ा हो)* जहाँपनाह, काबुल कन्दहार की लड़ाई की सरदारी के लिये किसको मुक़र्रर करेंगे? यहाँ आसपास के सूबों पर भी निगाह रखनी है क्योंकि कुछ नासमझों ने बग़ावत का सिर उठा रखा है।

तानसेन—मुल्ला दोप्याज़ा को मुक़र्रर कर दिया जाय?

मुल्ला दोप्याज़ा—तैयार हूं मियाँ—थानेश्वर में गुसाइयों वाली जङ्ग का मुँह बन्दे ने ही मोड़ा था, बीरबल ने नहीं। ये जिनका नाम महेशदास है और जिनको बीरबल का रुतबा मिला हुआ है, किस मर्ज़ के इलाज हैं?

बीरबल—बेवकूफ़ी, उदासी और निराशा के। परन्तु मैं तैयार हूं।

(अकबर सोचने लगता है)

मुल्ला दोप्याज़ा—कहाँ? किसी चूहे के बिल में जाने के लिये तैयार बैठे हो न? यह काबुल कन्दहार की लड़ाई है राजा साहब, कोई हँसी-ठट्ठा नहीं है। पुरखों को याद करना पड़ेगा।

बीरबल—काबुल नदी का दो चुल्लू पानी तुम्हारे पुरखों को भी दे आऊँगा।

अकबर—मुल्ला, बीरबल जिस तरह अपने मित्रों को हँसाने की ताक़त रखता है वैसे ही दुश्मनों को रुलाने की भी।

मुल्ला दोप्याज़ा—वहाँ जहांपनाह, इनको कफ-खाँसी की बीमारी और बरफ़ से भी लड़ना पड़ेगा।

बीरबल—मुल्ला, जो अपने ऊपर हँस सकता है, वह रोग, बरफ़ और मौत पर भी हँस सकता है।

अकबर—(*झटका सा खाकर*) क्या मैं सचमुच बीरबल को लड़ाई के मैदान मे भेज रहा हूं ? वह पुच्छलतारा बीरबल ?

बीरबल—उसको जहाँपनाह, मैं मुल्ला की खबरदारी करने के लिये छोड़ जाऊँगा।

अकबर—(*सांस लेकर*) बीरबल, मेरा मन नहीं चाहता। मैं तुमको नहीं जाने दूँगा।

बीरबल—जहाँपनाह, मेरे मान की रक्षा करें। हँसाने वालों को कोरा विदूषक समझा जाता है। मैं प्रमाणित करूँगा कि सच्चा पुरुष वही है जो अखीर दम तक हँसने हँसाने की कोशिश करता रहे, चाहे उसको दो सेर प्याज़ और दस सेर मांस मिले या न मिले।

अकबर—तुमने क्या निश्चय कर लिया है ?

बीरबल—अवश्य जहाँपनाह। अब केवल शुभकामना चाहता हूं।

अकबर—(*भरे हुये स्वर में*) तुम मेरे बड़े सहारे रहे हो, मैंने तुमसे बहुत कुछ पाया है, बीरबल।

बीरबल—मैंने किया ही क्या है, जहांपनाह ? आप स्वयं अङ्गारे हैं,—मैंने अङ्गारे पर से कभी कभी राख को फूँककर हटाने का ही तो प्रयत्न किया है। मुझको अब बिदा होने की अनुमति दी जाय। (*मुल्ला से*) यदि लौटकर आया तो फिर अगिया बेताल को देखूँगा, और अगर लड़ाई में मारा गया तो भूत बनकर इससे आ चिपटूँगा। (*हँसता है*)

मुल्ला दोप्याज़ा—(*आंख मीचकर*) आमीन।

बीरबल—मुल्ला की इस आमीन पर ग़ौर करें जहाँपनाह। इनको भूत की परवाह नहीं है, मेरे मरने की चाह है।

अकबर—(भरे हुये स्वर में) तुम चलो बीरबल। मैं पीछे पीछे आता हूं। अटक नदी पर मैं अपना डेरा डालूंगा, तुम काबुल कन्दहार में युद्ध का सञ्चालन करना। लड़ाई को फ़तेह करने के बाद मुझसे अटक में आकर मिल जाना। चलो मैं तुम्हारी बिदाई करूं।

(अकबर बीरबल के गले में हाथ डालकर जाता है। मुल्ला की दृष्टि हिन्सा मिश्रित है। अबुलफ़ज़ल खुशामद की दृष्टि से अकबर की ओर, और भक्ति भावना से बीरबल को देखता है। फ़ैज़ी कुछ हिसाब सा लगाता जाता है। तानसेन ध्यान मग्न। और सब लोग भी जाते हैं)

छठवां दृश्य

[स्थान—भारत के उत्तर पश्चिम का पहाड़ी क्षेत्र। समय सन्ध्या के पहले। भारतीय सेना आती है। उसके पीछे पीछे पठान फिर भारतीय सेना के कुछ सिपाही पठानों से लड़ते हुये आते हैं, लड़ाई होती रहती है। पठान हटते हैं, भारतीय उनको पछियाते हैं। बीरबल अपने सेवक लल्ली के साथ आता है। उसको चलने में कष्ट है, बीरबल घायल हो गया है, परन्तु मरणासन्न नहीं है। लल्ली योधा वेश में है]

बीरबल—इन पहाड़ों में भारत के पहाड़ी लोगों ने अच्छी लड़ाई लड़ी। लल्ली, अब मेरे दो दो हाथ यमराज के साथ होंगे। *(होठों पर थकी हुई मुस्कान है)*

लल्ली—(व्याकुल, परन्तु धीमे स्वर में) इन पहाड़ों में पैदल लड़ना पड़ा! घोड़े दूर पड़ गये हैं!! महाराज, ज़रा यहां कहीं ओट लेलें। मैं किसी प्रकार एक घोड़ा लिये आता हूं। उस पर बैठकर आप जायं।

बीरबल—(*उसी मुस्कान के साथ*) मैं जाऊँ और तुमको यहां चील-कौओं के लिये छोड़ जाऊं !

लल्ली—मैं तो नौकर हूं ।

बीरबल—(*ज़रा क्षीण स्वर में, परन्तु उसी मुस्कान के साथ*) इसलिये तुम्हारे प्राणों का कोई मूल्य नहीं ! परन्तु बीरबल ऐसा निकृष्ट मालिक नहीं है । अच्छा अब अपनी कालपी की धरू बोली में,—सुनरे लल्ली—तें अभई चलो जा इतै सें । मैं जियत रहो तौ हँसत खेलत लौट आहों, और जो मारो गओ तौ कै दिये हँसत खेलत जमराज के संगै चलो गओ । तोय मोरी सौगन्ध है, जा, भगजा । बिरथा प्रान न गवाँ ।

लल्ली—(*आंसू पोंछता हुआ भरभराते हुए कंठ से*) महाराज, मैं घरै का मोंह दिखा हों ? बादसाह कों कैसे मुख दिखाहों ?

बीरबल—(*क्षीण स्वर में, क्षीण मुस्कराहट के साथ*) जैसो मेरो मुख है । मेरो नौकर होकें तें रोउत है रे लल्ली ! ऐसो मों न दिखा सकै तो कारो करकें दिखा दिये, जीमें वे सब हँस परें । (*नेपथ्य में लड़ाई का हल्ला होता है*) लै, जा अब । जल्दी जा ।

लल्ली—(*बीरबल की क्षीण मुस्कराहट से उत्साहित होकर क्षीण स्वर में*) मैं जात हों, पर मैं चाहत हतो कि हियन, आपके चरनन में मर जातो ।

बीरबल—और मोकों रुआसो कर देतो काये रे सनीचर ! (*और भी मुस्कराकर*) लै अब जा । पर मुंह कारो ना करिये । (*पीठ पर हाथ फेरता है*)

लल्ली—(*उदासी भरी मुस्कान के साथ*) पालागन ।

बीरबल—जियत रहियो और हँसत खेलत रहियो ।

(बीरबल घाव की पीड़ा को दबाकर जाते हुये लल्ली को और भी अधिक मुस्कराहट के साथ देखता है। वह उसको कृतज्ञता और उदासी से भरी हुई मुस्कराहट के साथ देखता हुआ जाता है। नेपथ्य में शोर बढ़ता है। बीरबल नंगी तलवार लिये हुये उसी मुस्कराहट के साथ उस शोर की दिशा में लंगड़ाता, घिसटता जाता है)

सातवां दृश्य

[स्थान—फ़तेहपूर सीकरी। अकबर का महल। समय सन्ध्या के पूर्व। अभी बत्ती जलाने का समय नहीं हुआ है। रमज़ानी अकबर के स्वप्नागार में बिस्तर इत्यादि लगा रहा है। लल्ली उसकी सहायता कर रहा है]

रमज़ानी—*(धीरे से)* यू जहाँपना सार अब अफीम बहुत खाये लगा है। और गरीबन का एक जून खाये तक नाहीं मिलत्यो भेयन !

लल्ली—*(धीरे से)* किताबन में लिख दई है दो पैसा रोज मजूरी दई जैहै, पर दओ नाहीं जात उन्हें अधेला तक।

रमज़ानी—*(निश्वास त्यागकर)* भेयन, जब से राजा बीरबल क्यार मरन हुइगा तब से तो जमाना बहुत ही खराब हुईगा। सार अमीर लोग बड़ा बड़ा इमारत खड़ा कर दिया, पर गरीबन क्यार झोपड़ी और भी छोटा छोटा हुइ गवा। *(बिस्तर लगाते लगाते)* यू सार बड़ा बड़ा आदमी कितनी रण्डी राखत आहीं ! कितना अतर फुलेल बहावत आहीं !! कितना नखरा दिखावत आहीं !!! हमका तुमका जागीर, मन्सब कुछू मिल जाई तो हम तुम हू कुछू टिर्र फिस्स कर डारब।

लल्ली—बिस्तर तौ लग गये भैया रमजानी। अब हम जात हैं। तुम तो रोशनी करकैं आइहो। आ जाओ तो आज वहूं नाच तमासो देखें।

रमजानी—हम तो थोड़ासा सोये का चाहित है। उई सार अकबरा का आवे मां अबहिं बहुत देर है। दिन भर काम करकै थकावट आय गई है। थोड़ा सोयकै आईत है।

(लल्ली जाता है। रमज़ानी अकबर के विस्तरों के पास गुनगुनाता हुआ लेट जाता है और फिर सो जाता है। नेपथ्य मे अकबर—ओह! बीरबल!! बीरबल!!! तुम हँसते हँसते मुझको रोता हुआ छोड़ गये!!!! *(अकबर आता है। वह उदास है। धीरे से कहता है)* बीरबल बड़ा निर्दय निकला। मेरे जीवन का आनन्द लेकर चल दिया! *(अपने विस्तरों के पास सोते हुये रमज़ानी को देखकर वह क्षुब्ध हो जाता है)* कौन? कौन? रमजानी!!! *(रमज़ानी भरभराकर उठ बैठता है और थरथराता हुआ खड़ा हो जाता है। अकबर का क्रोध और भी बढ़ जाता है)*

अकबर—क्यों रे नीच! यह हिम्मत!! मेरे बिस्तरों के पास सो रहा था!!! भूल गया कि यह शाही महल है!!!!

रमज़ानी—(*गिरकर*) जहाँपनाह, मैं बख्शा जाऊँ—बेजान हो रहा था···थ···थ···का···वट···के···मारे।

अकबर—कभी नहीं! इतनी बड़ी गुस्ताखी माफ़ नहीं की जा सकती।

(अकबर पहरे वालों को बुलाकर रमज़ानी को पकड़वा देता है)

अकबर—इसको क़िले की बुर्ज पर से नीचे फेक दो।

(वे लोग रमज़ानी को बांध लेते हैं और ले जाते हैं। रमज़ानी उसको पहले करुण दृष्टि से और फिर शाप पूर्ण दृष्टि से देखता रहता है। सिपाही उसको ले जाते हैं)

अकबर—यह फ़तेहपूर सीकरी बड़ी मनहूस जगह है। मैं अब यहाँ नहीं रहूंगा। आगरे में रहूंगा जहां से वृन्दावन के गोविन्द देव का मन्दिर पास पड़ता है। (*चिल्लाकर*) अरे देखो, रमज़ानी को बुर्ज पर से फेंका न हो तो अब मत फेंकना।

(*घबराहट में जाता है*)

❀ यवनिका ❀